ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • डालटनगंज • आषाढ़ शुक्ल पक्ष 14 • विक्रम संवत 2080 • रविवार, 02 जुलाई 2023 • वर्ष-29 • अंक-256 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

'गदर 2' के मेकर्स पर अमीषा पटेल के ... पेज 10 पर

NEWS इन ब्रीफ

संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से 11 अगस्त तक

नई दिल्ली। संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से आरंभ होकर 11 अगस्त तक चलेगा। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद जोशी ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। सत्र की घोषणा करते हुए उन्होंने राजनीतिक दलों से सदन के भीतर उत्पादक चर्चा करने का आह्वान किया। उन्होंने ट्वीट कर बताया कि सत्र में कुल 23 दिन होंगे और 17 बैठकें होंगी। माना जा रहा है कि इसी संसद सत्र के दौरान सदन की बैठक नव निर्मित संसद में हो सकती है। पिछली बार की तरह इस सत्र के भी हंगामेदार रहने के आसार हैं। विपक्ष जहां एकजुटता दर्शा रहा है, वहीं सरकार समान नागरिक संहिता के मुद्दे को आगे ले जा रही है। दिल्ली में अधिकारियों की नियुक्ति और तबादले से सम्बन्धित विधेयक भी संसद में पेश किया जाएगा।

सत्यानंद भोक्ता की डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई 11 जुलाई को

रांची। राज्य के श्रम मंत्री और पूर्व कृषि मंत्री सत्यानंद भोक्ता से जुड़े बीज खरीद घोटाला मामले में एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत में शनिवार को डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई हुई। इस दौरान कोर्ट में सत्यानंद भोक्ता की ओर से साक्ष्य के रूप में आरटीआई से प्राप्त दस्तावेज को प्रस्तुत किया गया। अदालत ने मामले में अगली सुनवाई की तिथि 11 जुलाई निर्धारित की है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2004 से 2007 के बीच 46.10 करोड़ रुपये से अधिक का बीज घोटाला हुआ था। इस दौरान कुछ संस्थाओं से गेहूं, चना और दूसरे अनाज के बीज की खरीद के नाम पर कथित तौर पर गबन हुआ था। बीज घोटाला में जब आरोप पत्र दायर किया गया था, तब सत्यानंद भोक्ता कृषि मंत्री थे।

महाराष्ट्र के बुलढ़ाणा में समृद्धि हाईवे पर बस पलटी, लगी आग, 25 की मौत, आठ झुलसे

मुंबई। महाराष्ट्र में बुलढ़ाणा जिले के सिंदखेड राजा इलाके में समृद्धि हाइवे पर पिंपलखुटा फाटा के पास विदर्भ ट्रेवल्स की बस (एमएच29 बीई-1819) में आधीरात बाद करीब 1:30 बजे आग लग गई। इससे बस में सवार 25 लोगों की मौत हो गई । मृतकों में तीन बच्चे शामिल हैं। मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। आठ यात्री बुरी तरह झुलस गए हैं। सभी का इलाज बुलढ़ाणा जिला अस्पताल में हो रहा है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने प्रत्येक मृतक के आश्रित को पांच लाख रुपये की मदद देने की घोषणा की है।

झारखंड में अब 4 जुलाई से फिर सक्रिय होगा मानसून

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राज्य में चार दिनों तक मानसून की बारिश जमकर हुई। अब मानसून थोड़ा कमजोर हुआ है। अगले चार दिनों तक तापमान में बढ़ोतरी होगी। शनिवार सुबह से ही आसमान साफ है और धूप खिली हुई है। रांची स्थित मौसम विभाग के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि मौसम में परिवर्तन, हवा और उमस का मिलाजुला असर देखने को मिलेगा। गर्मी थोड़ी बढ़ेगी। इसके बाद से चार जुलाई से फिर बारिश का पूवार्नुमान लगाया गया है। चार जुलाई से राज्य में मानसून फिर सक्रिय होगा। इसके बाद से बारिश होगी। मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी करते हुए कहा है कि तीन जुलाई को झारखंड के उत्तर-पूर्वी भागों में कहीं-कहीं भारी

वर्षा होने की संभावना है। मानसून की बारिश के पहले चरण में संथाल परगना में जमकर बारिश हुई है। पिछले 24 घंटे में अगर कहीं बारिश हुई है तो वह संथाल परगना का क्षेत्र ही है। मौसम विभाग के मुताबिक अब मानसून अब चार जुलाई के बाद सक्रिय होगा। हालांकि, राजधानी समेत राज्य में कहीं-कहीं हल्की बारिश होने की संभावना है लेकिन अगले 24 घंटों के दौरान राज्य में मानसून कुछ शिथिल हो सकता है। चार जुलाई के बाद यह फिर सक्रिय होगा और पूरे राज्य में झमाझम बारिश होगी। आंकड़ों के मुताबिक सबसे अधिक बारिश साहिबगंज में हुई। यहां 110.0 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गयी है। दक्षिणी झारखंड के सिमडेगा में भारी बारिश हुई। यहां कोलेबिरा में 65.0 मिमी बारिश हुई। इसके अलावा जमशेदपुर, पाकुड़, गोड्डा और अन्य जिलों में बारिश हुई। हालांकि, जून में मानसून कमजोर रहा। राज्य में 189.5 मिमी की तुलना में केवल 108.5 मिमी बारिश हुई। यह सामान्य बारिश से 43 फीसदी कम रहा। राज्य में मानसून ने 19 को प्रवेश किया और 23 जून को पूरे झारखंड को कवर किया। खेती के लिहाज से मानसून की बारिश अच्छी हो रही है। धीमी गति की बारिश से खेतों में पानी बना रहता है, जो कि खरीफ फसलों की बुआई के लिए जरूरी है लेकिन एक जुलाई से बारिश में कमी आ सकती है।

बीज घोटाला मामले में तत्कालीन कृषि निदेशक की याचिका पर सुनवाई छह को

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची। झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस गौतम कुमार चौधरी की कोर्ट में शनिवार को 46.10 करोड़ के बीज घोटाला मामले में आरोपित तत्कालीन कृषि निदेशक निस्तार मिंज की क्रिमिनल रिवीजन की सुनवाई हुई। मामले में एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने लिखित बहस प्रस्तुत की। मामले की अगली सुनवाई छह जुलाई निर्धारित की है। पूर्व की सुनवाई में याचिकाकर्ता की ओर से बहस पूरी हो चुकी है। याचिकाकर्ता की ओर से पटना हाई कोर्ट के अधिवक्ता अजीत कुमार एवं झारखंड हाई कोर्ट के वरीय अधिवक्ता राजीव सिन्हा और अधिवक्ता रोहित सिन्हा ने पैरवी की।निस्तार मिंज ने एसीबी कोर्ट द्वारा उनके डिस्चार्ज पिटीशन को खारिज कर दिए जाने को हाई कोर्ट में चुनौती दी है। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया है कि निस्तार के खिलाफ एसीबी थाना में दो एफआईआर दर्ज किया गया है, जिनमें एक एफआईआर वर्ष 2009 में बीज घोटाला एवं दूसरा एफआईआर वर्ष 2013 में खाद घोटाला में किया गया है। याचिकाकर्ता का कहना है कि वर्ष 2013 में याचिकाकर्ता के खिलाफ जो खाद घोटाला का मामला दर्ज किया गया था उसमें अभी तक आरोपपत्र दायर नहीं हुआ है। अनुसंधान जारी है। वर्ष 2013 के खाद घोटाला के मामले को बीज घोटाला के साथ मर्ज करते हुए उनकी डिस्चार्ज पिटिशन पर सुनवाई हुई थी। बीज घोटाला के साथ खाद घोटाला के आरोपों को जोड़कर उनके डिस्चार्ज पिटिशन को एसीबी कोर्ट ने खारिज कर दिया था, जो अनुचित है।

बेटियों को उद्यमी बनाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही सरकार

सीएम के प्रयास से अपना जीवन सुधार रहीं झारखंड की बेटियां

कमजोर वर्गों के लिए वरदान बन रही सरकार की पहल

रांची। पार्वती और द्रौपदी कुमारी रांची के सिकिदिरी गांव की रहने वाली सगी बहनें हैं। दोनों ऐसे पृष्ठभूमि से आती हैं, जहां लड़की के लिए शिक्षा ग्रहण कर पाना बेहद कठिन है। लेकिन दोनों बहनों ने अपने मां की देखरेख में इस कठिन दौर को पार किया। सिर्फ कठिन दौर को पार ही नहीं किया, बल्कि मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के निर्देश पर शुरू किए गए आईटीआई कौशल कॉलेज (पाक-कला) प्रेझा फाउंडेशन (एसटी, एससी, अल्पसंख्यक और कल्याण विभाग की परियोजन परिवाहिनी) से जुड़ गई। दोनों बहन की पहल रंग लाई। दोनों ने अच्छा करने की प्रतिबद्धता के साथ पाककला

में एक साल का पूर्णकालिक आवासीय आईटीआई प्रमाणन कार्यक्रम के तहत पाठ्यक्रम पूरा कर प्लेसमेंट प्राप्त किया। पार्वती हैदराबाद स्थित सोडेक्सो एवं द्रौपदी बर्बेक्यू नेशन में नौकरी प्राप्त कर ली। उनका शुरूआती मासिक शुद्ध वेतन लगभग 16,000 (सीटीसी 25,000 रुपये) था। लेकिन उनकी प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत के कारण उनकी सेवा के केवल 6 माह में उनके वेतन में वृद्धि हुई। उनका वर्तमान मासिक शुद्ध वेतन 26 हजार (36,000 सीटीसी) है। अब दोनों बहनें न केवल अपनी मां की देखभाल कर रहीं हैं, बल्कि अपने गांव की सैकड़ों युवा लड़कियों के लिए एक आदर्श भी बन गई हैं। मुख्यमंत्री के प्रयासों से पार्वती और द्रौपदी जैसी सैकड़ों युवतियां अपना जीवन सुधार पा रहीं हैं। आईटीआई कौशल कॉलेज (पाक-कला) प्रेझा फाउंडेशन (एसटी, एससी, अल्पसंख्यक और कल्याण विभाग की परियोजन परिवाहिनी) की एक पहल है जो पाककला में एक साल का पूर्णकालिक आवासीय ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

घर का बजट बिगड़ा

पलामू में टमाटर लाल, लगी आग,120 रुपये किलो हुए दाम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू में इन दिनों सब्जी मंडी में लोग टमाटर का दाम सुनते ही कुछ इस तरह की प्रतिक्रिया दे रहें हैं। अरे इतना महंगा। वजह गर्मी के इस मौसम में टमाटर का भाव भी गर्म हो गया हैं।इन दिनों टमाटर के भाव 120 रुपए प्रति किलो हो गया हैं। लोग आश्चर्यचकित इसलिए हो रहे क्योंकि अचानक टमाटर के भाव में इजाफा हुआ हैं। पलामू में टमाटर की कीमत में काफी इजाफा देखने को मिल रहा है। अचानक टमाटर के दामों में हुई इस बढ़ोत्तरी ने आम लोगों को हिला कर रख दिया है। टमाटर हर घर की किचन का एक अहम हिस्सा है। खाने की हर थाली में टमाटर होता ही होता है।

बाजार में सब्जियों के भाव

आलू	20-25
प्याज	20-25
कोहड़ा	30-35
परवल	40-50
करैला	35-40
टमाटर	100-120
नींबू	20 का 5 पीस
अदरक	250-300
हरी मिर्च	80-100
लहसून	160
पालक	50
मूली	50
धनिया	200

अचानक दामों में हुए इस इजाफे ने लोगों के घर का बजट तक बिगाड़ दिया है। इन दिनों मेदिनीनगर शहर के सब्जी बाजार में भी टमाटर 120 रुपए किलो बिक रहा है।अचानक टमाटर के भाव में बढ़ोतरी की वजह पलामू समेत देशभर में मानसून आ गया है। बारिश पड़ना शुरू हो गई है। ऐसे में टमाटर समेत ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

निलंबित इंजीनियर वीरेंद्र राम के तीन सहयोगियों से

तीन दिनों तक फिर ईडी करेगी पूछताछ

नवीन मेल संवाददाता

रांची। ईडी ने शनिवार को निलंबित चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम के तीन सहयोगियों नीरज मित्तल, राम प्रकाश भाटिया और तारा चंद की रिमांड अवधि समाप्त होने पर कोर्ट में पेश किया। ईडी के आग्रह पर ईडी के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत ने फिर से तीन दिनों के पूछताछ करने के लिए रिमांड पर देने का आदेश दिया। ईडी की ओर से पांच दिनों का रिमांड मांगा गया था। आरोपित नीरज मित्तल की ओर से अधिवक्ता विक्रांत सिन्हा और राम प्रकाश भाटिया और तारा चंद की ओर से रिमांड अधिवक्ता प्रीतांशु सिंह ने विरोध किया। जबकि ईडी की ओर से विशेष लोक अभियोजक शिव कुमार ने बहस करते हुए कहा कि तीनों आरोपितों की मनी लॉन्ड्रिंग में महत्वपूर्ण भूमिका है, इसलिए इनसे पूछताछ जरुरी है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद अदालत ने ईडी को तीन दिनों की रिमांड की अनुमति दी है।

कैमिकल की दुकान में ब्लास्ट, आग लगने से दो श्रमिक झुलसे

अजमेर। राजस्थान में अजमेर जिले के किशनगढ़ के गांधी नगर थाना क्षेत्र में आज एक कैमिकल की दुकान में आग की चपेट में आने से दो श्रमिक बुरी तरह झुलस गये। प्राप्त जानकारी के अनुसार हरमाड़ा चौराहा मार्बल एरिया की कैमिकल दुकान में तेज ब्लास्ट से वहां दो श्रमिक चपेट में आ गये। आननफानन में उन्हें वहीं एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें अजमेर रैफर कर दिया गया। बताया जा रहा है कि दोनों श्रमिक चंपानेरी निवासी मोनू मोची तथा सरगांव निवासी कानाराम नट बुरीतरह झुलस गये। 90 फीसदी जलने के कारण वह अब अस्पताल में जिन्दगी से लड़ रहे है।

पारदर्शिता के लिए डिजिटल लेनदेन को अपनाएं : पीएम

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि डिजिटल भुगतान से पारदर्शिता आई है और यदि संभव हो तो लोगों को नकद भुगतान से बचना चाहिए। 17वीं भारतीय सहकारी कांग्रेस को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, पारदर्शिता के लिए डिजिटल लेनदेन को अपनाएं। नकद भुगतान कम से कम करें। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार कृषि और किसानों पर सालाना 6 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च करती है। उन्होंने कहा, इसका मतलब है कि औसतन हर किसान को हर साल सरकार से विभिन्न रूपों में लगभग 50 हजार रुपये मिलते हैं। प्रधान मंत्री ने उल्लेख किया कि उनकी सरकार ने देश भर के किसानों के खातों में लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये सीधे स्थानांतरित किए हैं। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि उनकी सरकार यूरिया उर्वरक बैग 270 रुपये में उपलब्ध कराती है, जबकि बांग्लादेश में उन्हें 720 रुपये, पाकिस्तान में

800 रुपये, चीन में 2,100 रुपये और कुछ अन्य स्थानों पर 3,100 रुपये में बेचा जा रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने उर्वरक सब्सिडी को बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक कर दिया है और इस बात पर जोर दिया कि केंद्र भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार से मुक्त है, जिससे किसानों को लाभ हो रहा है। उन्होंने कहा, पिछले नौ वर्षों में, किसानों को एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) पर उनकी उपज की खरीद के माध्यम से 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक प्राप्त हुए हैं। सरकार कृषि और किसानों पर प्रति वर्ष लगभग 6.5 लाख करोड़ रुपये खर्च करती है। मोदी ने किसानों के लिए 3 लाख 70 हजार करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की और कहा कि गन्ना किसानों के लिए 315 रुपये प्रति क्विंटल का लाभकारी मूल्य निर्धारित किया गया है। पीएम ने कहा, वर्तमान में हमारे पास देश में 1,400 लाख टन से अधिक की भंडारण क्षमता है। अगले पांच वर्षों के लिए हमारा लक्ष्य लगभग 700 लाख टन नई भंडारण क्षमता बनाना है। यह निस्संदेह एक महत्वपूर्ण कार्य है, जो हमारे किसानों की क्षमताओं को बढ़ाएगा और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर पैदा करेगा। उन्होंने यह भी बताया कि केंद्र सरकार ने ऑयल पाम की खेती को बढ़ावा देने के लिए मिशन पाम ऑयल पहल शुरू की है। इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि मोदी ने सहकारी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

संभावना

तीन जुलाई को बुलाई गई है संसदीय समिति की बैठक

समान नागरिक संहिता बिल मानसून सत्र में हो सकता है पेश

-आरएनएम

नई दिल्ली। समान नागरिक संहिता बिल संसद में मानसून सत्र में पेश की जा सकती है। समान नागरिक संहिता यानी सभी धर्मों के लिए एक ही कानून। भारत में अभी ये है कि हर धर्म का अपना अलग कानून है, और वो उसी हिसाब से चलता है। हिंदुओं के लिए अपना अलग कानून है, जिसमें शादी, तलाक और संपत्तियों से जुड़ी बातें हैं। मुस्लिमों का अलग पर्सनल लॉ है और ईसाइयों का अपना पर्सनल लॉ है। यूनिफॉर्म सिविल कोड का मतलब है, भारत में रहने वाले हर नागरिक के लिए एक समान कानून होना, चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का क्यों न हो। यानी हर धर्म, जाति, जेंडर के लिए एक जैसा कानून।यूनिफॉर्म सिविल कोड सभी धार्मिक समुदायों पर लागू होने के लिए एक देश एक नियम की जरूरत बताता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44 के भाग 4 में 'यूनिफॉर्म सिविल कोड' शब्द का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।केंद्र सरकार यूनिफॉर्म सिविल कोड बिल को संसद के मानसून सत्र में पेश कर सकती है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार यूनिफॉर्म सिविल कोड से जुड़ा बिल मानसून सत्र में सरकार की ओर से संसदीय स्थायी समिति को भेजा जा सकता है। तीन जुलाई को संसदीय समिति की बैठक बुलाई गई है।

समान नागरिक संहिता में शामिल विषय

विवाह, तलाक ,गोद लेना,व्यक्तिगत स्तर,विरासत, संपत्ति का अधिकार और संचालन।

इन देशों में लागू है समान नागरिक संहिता : अमरीका ,पाकिस्तान, बांग्लादेश, तुर्की,इंडोनेशिया, सूडान, आयरलैंड, इजिप्ट,मलेशिया, इजरायल, जापान, फ्रांस, रूस। जहां तक भारत की बात है , भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44 के मुताबिक, 'राज्य भारत के पूरे क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता को सुरक्षित करने का प्रयास करेगा।' यानी संविधान सरकार को

सभी समुदायों को उन मामलों पर एक साथ लाने का निर्देश दे रहा है, जो वर्तमान में उनसे संबंधित व्यक्तिगत कानूनों द्वारा शासित हैं। यानी सभी धर्म अपने-अपने नियम/कानून पर चल रहे हैं। जिन्हें एक कानून के तहत लाने की बात की जा रही है।

गोवा एकमात्र राज्य जहां समान नागरिक संहिता : गोवा भारत का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां समान नागरिक संहिता है । गोवा परिवार कानून, नागरिक कानूनों का समूह है, मूल रूप से पुर्तगाली नागरिक संहिता, 1961 में इसके विलय के बाद लागू किया जाना जारी रहा। क्या गोवा में हिंदू विवाह अधिनियम लागू होता हैं। गोवा अब तक भारत का एकमात्र राज्य है जहां विवाह, तलाक, उत्तराधिकार आदि के मामले में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सहित सभी समुदाय एक ही कानून द्वारा शासित होते हैं।

गोवा में समान नागरिक संहिता क्यों है? 1869 ई. में पुर्तगाली गोवा और दमाओन को केवल पुर्तगाली उपनिवेशों से बढ़ाकर प्रोविंसिया अल्ट्रामरीना (विदेशी कब्जा) का दर्जा दिए जाने के बाद गोवा नागरिक संहिता लागू की गई थी।

पहली बार कब हुआ यूनिफॉर्म सिविल कोड का ज़िक्र : 1985 में शाह बानो केस के बाद समान नागरिक संहिता मुख्य रूप से चुनावी मुद्दा बन गया। बहस इस बात पर थी कि क्या कुछ कानूनों को बिना किसी का धर्म देखे सभी पर लागू किया जा सकता है? शाह बानो केस में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड पर सवाल उठाए गए थे।मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जो कि मुख्यतः शरिया कानून पर आधारित है, जो एकतरफा तलाक, बहुविवाह आदि को भी बढ़ावा देता है। इस केस का सारांश यह है कि मुस्लिम महिला शाह बानो की शादी इंदौर निवासी मोहम्मद अहमद खान से हुई थी। अहमद खान इंदौर के बड़े रईस और मशहूर वकील थे। दोनों के 5 बच्चे थे। पहली शादी के 14 साल बाद खान ने दूसरी शादी कर ली। खान ने कुछ वक्त तक तो दोनों पत्नियों को साथ रखा लेकिन बाद में 62 वर्षीया शाह बानो को तलाक दे दिया। तलाक के समय खान ने शाह बानो को हर महीने 200 रुपए देने का वादा किया था, पर 1978 में 200 रुपए देना बंद कर दिया। तब शाह बानो ने खान के खिलाफ केस किया और अपने बच्चों के गुजरा भत्ते के लिए 500 रुपए प्रति महीना देने की मांग की। खान ने अपने बचाव में यह दलील दी कि पैसे देना उनकी जिम्मेदारी नहीं है क्योंकि अब वे ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

बस में आग लगने से 25 लोगों की जलकर मौत

नागपुर। बुलढाणा में शनिवार को नागपुर-मुंबई सुपर-एक्सप्रेसवे पर एक बस दुर्घटना में कम से कम 25 यात्रियों की नींद में ही जलकर मौत हो गई। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि विदर्भ ट्रैवल्स की बस नागपुर से पुणे जा रही थी और यह हादसा रात करीब 1.15 बजे सिंधखेडराजा इलाके के पास हुआ। पुलिस के अनुसार, तेज गति से जा रही बस एक्सप्रेसवे के डिवाइडर से टकराई, फिर एक खंभे से टकराकर नियंत्रण से बाहर हो गई। इससे पहले एक विस्फोट हुआ और उसके बाद आग का एक गोला उठा, जिसने बस को अपनी चपेट में ले लिया। बस में दो ड्राइवर और एक क्लीनर समेत 33 लोग सवार थे। इस हादसे में अब तक 25 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि पांच घायलों को बुलढाणा सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में एक चालक की भी मौत हो गई। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है और प्रत्येक मृतक के परिजनों के लिए 5 लाख रुपये का मुआवजा और घायलों के लिए मुफ्त इलाज की घोषणा की है। पुलिस दुर्घटना के कारणों की जांच कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने बुलढाणा बस दुर्घटना पर दुख जताया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को महाराष्ट्र के बुलढाणा में हुई बस दुर्घटना पर दुख जताया और पीड़ितों के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से अनुग्रह राशि की घोषणा की है। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने ट्वीट किया, महाराष्ट्र के बुलढाणा में हुई विनाशकारी बस दुर्घटना से बहुत दुखी हूँ। मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उन लोगों के परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपनी जान गंवाई। घायल शीघ्र स्वस्थ हों। स्थानीय प्रशासन प्रभावितों को हर संभव सहायता प्रदान कर रहा है।

NEWS इन ब्रीफ

डीलर संघ के अध्यक्ष मृत्युंजय सिंह का निधन

हुसैनाबाद। फेयर प्राईज डीलर एसोशियेशन हैदरनगर प्रखंड इकाई के अध्यक्ष (50) वर्षीय मृत्युंजय सिंह का हृदय गति रुकने से शनिवार को अपराह्न करीब दो बजे निधन हो गया। परिजनों के मुताबिक दोपहर एक बजे के आसपास हैदरनगर के शुक्रबाजार स्थित आवास पर उन्हें अचानक दिल का दौरा पड़ा था। स्थानीय स्तर पर उपचार के बाद उन्हें तत्काल अनुमंडलीय अस्पताल हुसैनाबाद ले जाया गया। जहां इलाज और जांच प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही उन्होंने दम तोड दिया। उनके निधन की सूचना मिलते ही डीलर संघ से जुड़े सभी सदस्यों के अलावे कई संगठनों के लोग बड़ी संख्या में अनुमंडलीय अस्पताल हुसैनाबाद पहुंचकर शोक जताया। उनके निधन पर क्षेत्रीय विधायक कमलेश कुमार सिंह, विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष मन्नान खान, जिला पार्षद संगीता देवी, मुखिया संघ अध्यक्ष जितेंद्र सिंह,सज्जू खान,योगेंद्र कुमार सिंह उर्फ गुड्डू सिंह, जयप्रकाश सिंह, जितेंद्र कुमार सिंह, भाजपा नेता रविन्द्र कुमार सिंह, कर्नल सभी सदस्यों के अलावा सैकड़ों लोगों ने शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

36 वर्षो से जलाशय योजना के तहत बांध निर्माण की बाट जोह रहे लोग

अंचलाधिकारी ने कौरव जलाशय निर्माण स्थल का किया अवलोकन

कौरव नदी क्षेत्र की एकमात्र जिंदा नदी है जहां साल भर पानी देखा जाता है

नवीन मेल संवाददाता

विश्रामपुर। बहुप्रतीक्षित कौरव जलाशय निर्माण स्थल का अवलोकन नावा बाजार अंचलाधिकारी राकेश श्रीवास्तव ने किया। जहां स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों से समुचित जानकारी ली। वहीं योजना को स्वीकृति दिलाने में आ रही बाधाओं की जानकारी लेते हुए अपनी ओर से हरसंभव सहयोग की बातें कहीं। कौरव नदी क्षेत्र का एकमात्र जिंदा नदी है जहां साल भर पानी देखा जाता है। साथ हीं योजना की उपयोगिता पर भी चर्चा की। साथ

हीं निर्माण कार्य में आ रही परेशानियों से पंचायत प्रतिनिधियों ने अवगत कराया। विदित हो कि 36 वर्षों से लगातार अकाल-सुखाड़ की मार झेल रहे विश्रामपुर नावाबाजार के किसानों के लिए कौरव जलाश्य योजना राहत नहीं महज टीस बनकर रह गयी है। 36 वर्षो से किसान कौरव (लब्जी) जलाशय योजना के तहत बांध निर्माण की बाट जोह रहे हैं। क्षेत्र में व्याप्त जलसंकट के निदान को उक्त जलाश्य निर्माण की पहल संयुक्त बिहार सरकार ने की थी। इसके तहत 22 मार्च 1987 को एकल बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. बिंदेश्वरी दुबे ने स्वंय हताई द्वारपार जंगल में पहुंच कौरव नदी पर बांध निर्माण का शिलान्यास किया था। बावजूद यह योजना आज तक धरातल पर नहीं उतरी। 36 वर्ष से क्षेत्र की जनता बांध निर्माण की बाट जोह रही है। विभाग की ओर से कई बार स्थल निरीक्षण कर सरकार को रिर्पोट भी सौंपी गई। झारखंड अलग राज्य निर्माण के बाद भी किसी सरकार ने जलाशय निर्माण के प्रति सक्रियता नहीं दिखाई है। सभी फाईलें अधिकारियों के टेबल की शोभा बनकर रह गई।

दो माह पहले बनी सड़क टूटने से ग्रामीणों में आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

हरिहरगंज। प्रखंड क्षेत्र के सरसोत पंचायत अंतर्गत दुबरीडीह नकुरवा में वीर कुंवर स्थान से विजय यादव के घर तक दो सौ फीट पीसीसी पथ दो माह पहले बना टूट रहा है। जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। इस संबंध में ग्रामीण महेश पासवान, गौतम पासवान, प्रवेश पासवान, पिंटू गुप्ता, अजय यादव, उदय यादव, मुंशी साव, शंकर यादव आदि ने बताया कि 15वें वित्त से जिला परिषद के द्वारा उक्त पथ का निर्माण कराया गया था। परंतु लाभुक समिति द्वारा एस्टीमेंट से कम मेटिरियल देने के

कारण कमजोर निर्माण हुआ है जिससे सड़क टूट रही है। वही इस संबंध में लाभुक समिति के अध्यक्ष सुनील यादव तथा सचिव रामजी यादव ने बताया कि सड़क में दोनों और ग्रामीणों की आपत्ति के कारण मिट्टी फीलिंग नहीं की गयी है। इसके कारण सड़क टूट रही है। जबकि निर्माण में मेटिरियल गुणवत्तापूर्ण दी गयी है। इस मौके पर पूर्व वार्ड सदस्य प्रवेश पासवान, हीरा देवी, प्रकाश पासवान, उमेश पासवान, कमलेश यादव, सुरेश साव, वचन पासवान, दिलीप यादव आदि मौजूद थें।

दो टेंपो की टक्कर में चार घायल, एक रेफर

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। जपला छतरपुर मुख्य पथ के गमहरबीघा गांव के समीप दो टेंपो की आपने सामने की हुईं टक्कर में चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों में हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के डोमनाबांध गांव निवासी कमला देवी(40), नेत्री देवी (35), लालमती देवी(45), पूजा कुमारी (7) वर्ष का नाम शामिल हैं। उक्त सभी घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिये अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया,जहांऑन डियूटी मौजूद चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद लालमती देवी की स्थिति को गंभीर देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल मेदिनीनगर रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार उक्त सभी महिला अपने गांव से टेंपो पर सवार होकर जपला बाजार आ रही थी, इसी क्रम में जपला की ओर से आ रही टेंपो की सामने से टक्कर हो गई। इस घटना के बाद टेंपो चालक टेंपो लेकर फरार हो गया। इस घटना की जानकारी हुसैनाबाद थाना को दे दी गई हैं।

भाजपा ने चलाया महाजनसंपर्क अभियान

हरिहरगंजस। भाजपा के महाजनसंपर्क अभियान के तहत मंडल अध्यक्ष बल्लू बलराम के नेतृत्व में प्रखंड के ढकचा, सलैया तथा डेमा पंचायत के विभिन्न गांव में डोर टू डोर जाकर केंद्र सरकार की नौ साल की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने का काम किया गया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि अरुण कुमार मिश्रा, पंचायत संयोजक धनंजय सिंह, अनिल साव, सनोज गुप्ता, राजीव समेत बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में मारपीट, कई घायल

पांकी। पांकी प्रखंड के पिपराटांड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत केलहवा गांव में शनिवार की सुबह करीब 9:00 बजे जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में भीषण मारपीट हो गई। जिसमें दोनों पक्षों से एक दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद पांकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज कराने पहुंचे एक पक्ष के गंभीर रूप से घायल अजीमुद्दीन मियां, लुकमान अंसारी ,इरशाद अंसारी, अजीम मियां, मोईज अंसारी एवं मुजस्सिम अंसारी का प्राथमिक इलाज किया गया एवं 4 लोगों को बेहतर इलाज हेतु रेफर किया गया। मौके पर मौजूद गंभीर रूप से घायल अजीमुद्दीन मियां ने बताया कि वे लोग केलहवा गांव स्थित अपने खेत में कार्य कर रहे थे। इसी बीच इश्तियाक अंसारी के पक्ष के लोगों ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी, जिससे वे सब गंभीर रूप से घायल हो गए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जमीन का कागजात उनके पास मौजूद है, साथ ही उक्त जमीन पर वे वर्षों से खेती-बाड़ी करते आ रहे है एवं उस जमीन का वे लोग लगान भी भरते आ रहे हैं। बावजूद दूसरे पक्ष के इस्तियाक अंसारी एवं उनके समर्थकों के द्वारा जबरन जमीन पर कब्जा करने की कोशिश कर मारपीट की जा रही है। हालांकि इस घटनाक्रम में दूसरे पक्ष के भी करीब आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं ।जिनका प्राथमिक इलाज पांकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किया गया व कुछ लोगों को रेफर भी किया गया है।

लघु सिंचाई योजना निर्माण में भारी घोटालाः रुचिर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। लेस्लीगंज प्रखंड के ग्राम-जगतपुरवा के लघु सिंचाई योजना के तहत आहार निर्माण में भारी घोटाला की जांच हो-भाकपा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव रुचिर कुमार तिवारी ने ग्राम - जगतपुरवा, प्रखंड एवं थाना लेस्लीगंज अंतर्गत ग्रामीणों के द्वारा दिया गया हस्ताक्षर युक्त आवेदन को अग्रसारित करते हुए पलामू उपायुक्त को पत्र लिखा। जिसमें श्री तिवारी ने पत्र में लिखा कि ग्राम जगतपुरवा में 25 से 27 लाख प्राक्कलन राशि लघु सिंचाई विभाग पलामू के अंतर्गत आहार निर्माण का कार्य संवेदक कुंदन सिंह हुसैनाबाद के द्वारा कराया गया जिसमें उस सिंचाई योजना में भारी अनियमितता एवं सरकारी पैसा का बंदरबांट कर घोटाला किया गया है।

खोया पाया

मैं ओंकार सिंह नामधारी पिता स्व. मोहन सिंह नामधारी। नामधारी गुरुद्वारा नावाटोली, पो.+थाना- मेदिनीनगर, जिला-पलामू, झारखंड का निवासी हूं। मैं शपथ पूर्वक घोषणा करता हूं कि मेरी पुत्री शीतल नामधारी बारहवीं कक्षा की हेरिटेज इन्टरनैशनल स्कूल का सेसन 2017-2019 की छात्रा है। जिसका अंक प्रत्र (मार्क शीट) का फोटो कॉपी कराने के लिए दिनांक 26/06/2023 को घर से बाजार जाने के क्रम में कहीं गिर गया। जिसे काफी खोज-बीन करने के बावजूद नहीं मिला। अगर किसी को उक्त मार्क शीट मिलता है तो उसे 7903286194 पर संपर्क कर सूचना देने की कृपा करेंगे।

शपथ पत्र संख्या : 42/14303 दिनांक 30/06/2023

बाइक चोर व खरीददार समेत चार लोग गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हुसैनाबाद पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का पदार्फाश करते हुऐ चोरी की एक बाइक के साथ दो बाइक चोर और दो खरीददार के साथ चार लोगों को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया है। इस संबंध में हुसैनाबाद थाना प्रभारी जगन्नाथ धान ने बताया कि जपला शहर के गांधी चौक निवासी संतोष कुमार की 28 जून को स्प्लेंडर बाइक की चोरी एलआईसी ऑफिस के पास से चोरी कर ली गई थी, इसके बरामदगी के लिए एक टीम गठित किया गया था। पुलिस को गुप्त सूचना मिली की चोरी की बाइक कांड संख्या 164/2023 का आप्राथमिकी अभियुक्त औरंगाबाद जिला के टंडवा गांव निवासी राजीव कुमार सिंह के घर पर देखा गया है। इसके सत्यापन के लिए एएसआई धर्मेंद्र कुमार के द्वारा छापेमारी कर चोरी की बाइक के साथ राजीव कुमार सिंह व पीपरा थाना क्षेत्र के सोभीचक गांव निवासी पवन को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों की गिरफ्तारी के बाद पूछताछ के बाद उनके निशानदेही पर पीपरा गांव निवासी नितीश कुमार सिंह, पांडू थाना क्षेत्र के बिहारी विगहा गांव निवासी सुधीर कुमार सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के बाद दोनों ने बाइक चोरी करने में अपनी संलिप्ता स्वीकार की है । वहीं राजीव और नितीश कुमार सिंह ने चोरी की बाइक खरीदने की बात पुलिस को बताई है। चार लोगों को इस मेडिकल जांच के बाद न्यायिक हिरासत में मेदिनीनगर भेज दिया गया है।

कंप्यूटर सेंटर की पहली वर्षगांठ मनी

हरिहरगंज। शहर के मेन रोड़ स्थित संडा बॉर्डर के समीप शनिवार को लॉजिकल प्वाइंट भावनी आर कंप्यूटर एजुकेशन का पहला वर्षगांठ मनाया गया। इस दौरान संस्थान के चेयरमैन रविकांत शर्मा के द्वारा दीप प्रज्वलित कर केक काटा गया। बाद में संस्थान से पढ़कर निकले छात्रों को प्रमाण-पत्र, डायरी, पेन तथा मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्थान के सेंटर मैनेजर दिनेश शर्मा, सेंटर निदेशक भीकेआर, चीफ डायरेक्टर टी सिंह चौहान, पूर्व प्रधानाध्यापक मदनमोहन सिंह, अंजली इंस्टिट्यूट के आशीष कुमार, सहित कई लोग मौजूद थे।

छत से गिरकर एक व्यक्ति घायल, रेफर

विश्रामपुर। विश्रामपुर शहर के मध्य स्थित ठाकुर मुहल्ला में एक व्यक्ति छत से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया है। जिसकी पहचान पांडु थाना क्षेत्र के पोखरी निवासी 55 वर्षीय उदेश पासवान के रूप में हुई है। जिन्हे परिजनों ने सीएचसी बिश्रामपुर में लाकर भर्ती करवाया। जहां चिकित्सको ने व्यक्ति कि गंभीर स्थिति को देखते हुए प्रथमिक उपचार के तुरंत बाद जिला अस्पताल मेदनीनगर रेफर कर दिया है। जानकारी के अनुसार,व्यक्ति अपने घर पोखरी से विश्रामपुर के ठाकुर मुहल्ला में स्थित अपने ससुराल में सास के ब्रह्मभोज में शामिल होने आया था।

दुकान का बसपा नेता ने किया शुभारंभ

विश्रामपुर। विश्रामपुर प्रखंड अंतर्गत मुख्य कस्बा रेहला में डिजिटल एप के माध्यम से संचालित किराना दुकान का आज शुभारंभ किया गया। जिसमे मौजूद बतौर मुख्य अतिथि बसपा नेता सह पूर्व विधान सभा प्रत्याशी अभिमन्यु सिंह उर्फ बबलू सिंह ने फीता काट कर नवनिर्मित डिजिटल माध्यम से संचालित दुकान का उद्घाटन किया। अभिमन्यु सिंह ने कहा कि रेहला में ऑन लाइन सुविधा देने वाली यह पहली किराने की दुकान है।

झारखण्ड सरकार
कार्यालय उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, गुमला
(खनन शाखा)

गुमला जिला के बसिया अंचल अन्तर्गत मौजा–निनई, में भण्डारित बालू खनिज का आम नीलामी हेतू सूचनाः–

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बसिया अंचल अन्तर्गत (1) मौजा–निनई (कोयल नदी के पूर्वी किनारे के पास), में भण्डारित 1,17,550 घनफूट बालू (2) मौजा–निनई (पहाड़ के पास) कच्ची रास्ता के बगल में भण्डारित 10,500 घनफूट बालू खनिज का झारखण्ड लघु खनिज समनुदान नियमावली–2004 यथा संशोधन नियमावली– 2017 एवं झारखण्ड लघु खनिज समनुदान (संशोधन) नियमावली– 2019 के नियम 54A के तहत उक्त स्थल पर जप्त भण्डाारित बालू खनिज का आम नीलामी दिनांक 14.07.2023 को समय 11:30 बजे पूर्वाह्न में अपर समाहर्त्ता, गुमला की अध्यक्षता में उनके कार्यालय कक्ष में सम्पन्न की जाएगी। भण्डारण का विवरण, लोक नीलामी की प्रक्रिया एवं शर्त्त निम्नवत हैः–

क्र.	भण्डारण स्थल	भण्डारित बालू खनिज की मात्रा	सुरक्षित जमा राशि (रूपया में)	सुरक्षित जमा राशि का 10 % प्रतिभूति राशि (रूपया में)
1.	मौजा– निनई (कोयल नदी के पूर्वी किनारे के पास में) (Lat - 22.924885 ^{0} N Log - 84.748504 ^{0} E)	1,17,550 .00 घनफूट (एक लाख सत्रह हजार पांच सौ पचास)	8,81,625 .00	88,163 .00
2.	मौजा–निनई (पहाड़ के पास) कच्ची रास्ता के बगल में Lat - 22.924887 ^{0} N Log - 84.75342 ^{0} E)	10,500 .00 घनफूट (दस हजार पांच सौ)	78,750 .00	7,875 .00

2. नीलामी में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति/संस्था को निर्धारित सुरक्षित जमा राशि का 10% प्रतिभूति राशि के रूप में नीलामी में भाग लेने के लिये नीलामी की तिथि से दो दिन पूर्व कार्यालय अवधि में जिला खनन पदाधिकारी, गुमला के पदनाम से रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अन्य आवश्यक कागजात के साथ जमा करना होगा, अन्यथा व्यक्ति/संस्था डाक में भाग लेने से वंचित कर दिये जायेंगे। सफल डाकवक्ता (अधिकतम राशि) की प्रतिभूति रकम को छोड़कर अन्य डाकवक्ता द्वारा जमा प्रतिभूति राशि का बैंक ड्राफ्ट नियमानुसार वापस कर दिया जायेगा।
3. नीलामी में बोली गयी उच्चतम डाक की राशि का 10% में से प्रतिभूति राशि को छोड़कर शेष राशि डाक की समाप्ति या उपायुक्त/प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा निदेश दिये जाने पर नीलामी वाले तिथि को ही बैंक ड्राफ्ट/बैंकर्स चेक/ऑनलाईन के माध्यम से उच्चतम डाकवक्ता द्वारा जमा करना होगा, अन्यथा उच्चतम डाकवक्ता को भविष्य में नीलामी में भाग लेने से वंचित कर दिया जायेगा।
4. उच्चतम डाक की पूर्ण राशि नीलामी की तिथि से पन्द्रह दिनों के अन्दर कार्यालय अवधि में ही भुगतान करना होगा। पूर्ण राशि के भुगतान में असफल रहने की स्थिति में दूसरे नम्बर के डाकवक्ता को उच्चतम डाक की राशि पर सहमति हेतु प्रस्ताव दिया जायेगा एवं उनके समर्थन या स्वीकार होने की स्थिति में यह नीलामी उनके पक्ष में घोषित किया जायेगा।
5. नीलामी के उपरान्त उच्चतम डाक की राशि के पूर्ण भुगतान के पश्चात ही सफल डाकवक्ता के पक्ष में झारखण्ड लघु खनिज समनुदान नियमावली–2004 यथा संशोधित नियमावली के सुसंगत नियमों के तहत आदेश सक्षम पदाधिकारी द्वारा निर्गत किया जायेगा।
6. उक्त आदेश निर्गत होने के उपरान्त बालू खनिज के उठाव/प्रेषण हेतु JIMMS द्वारा अस्थाई आई०डी० सृजित किया जायेगा।
7. उक्त खनिज का उठाव/प्रेषण JIMMS Portal से निर्गत परिवहन चालान के माध्यम से आदेश निर्गत होने की तिथि से तीन माह के अंदर अनिवार्य रूप से कर लेना होगा। विशेष परिस्थिति में कारणों सहित लिखित आवेदन पर समीक्षोपरान्त अवधि विस्तार पर निर्णय लिया जायेगा।
8. बन्दोबस्ती के पश्चात बालू का प्रेषण करने में किसी प्रकार का अड़चन यथा पहुंच पथ वगैरह के कारण या किसी अन्य कारणवश नीलामीधारी, नीलामी किये गये बालू का प्रेषण नहीं कर पाते है, तो इसकी पूरी जिम्मेवारी नीलामीधारी की होगी तथा भुगतान की गयी राशि के विरूद्ध किसी भी प्रकार का दावा/कटौती मान्य नहीं होगा।
9. बालू निष्कासन के क्रम में यदि रैयति भूमि का उपयोग किया जाता है तो उसकी क्षतिपूर्ति का भुगतान नीलामीधारी द्वारा ही किया जायेगा।
10. आम नीलामी में उच्चतम डाकवक्ताओं में अगर Tie (गुलोबन्द) होता है तो End User को प्राथमिकता मिलेगी।
11. अन्य शर्त्त एवं बंधेज झारखण्ड लघु खनिज समनुदान नियमावली–2004 (सभी संशोधनों सहित एवं The Jharkhand Minerals (Prevention of Illegal, Mining, Transportation & Storage) Rules–2017 के प्रावधानों के अनुसार होगा।
12. नीलामी मे भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति/वैसी संस्था जो खनन संबंधी व्यवसाय हेतु निबंधित है। दिनांक 12.07.2023 को 5:00 बजे अपराह्न तक जिला खनन कार्यालय, गुमला में आवेदन दाखिल कर सकतें है। आवेदन के साथ निम्नलिखित वांछित कागजात स्व अभिप्रमाणित कर संलग्न करना अनिवार्य होगाः–
    (क) सुरक्षित जमा का 10% राशि निर्धारित प्रतिभूति रकम के रूप में।
    (ख) पैन कार्ड एवं अद्यतन आयकर रिर्टन की छाया प्रति।
    (ग) आधार कार्ड की छाया प्रति।
    (घ) आवासीय प्रमाण पत्र की छाया प्रति।
    (ङ) पासपोर्ट साईज फोटो की एक प्रति।
    (च) आवेदन के साथ इस आशय का शपथ पत्र जमा करना होगा कि पूर्व से खनन पट्टा धारक है अथवा नहीं, यदि है तो खनन बकाया से संबंधित स्वामिस्व स्वच्छता प्रमाण पत्र भी जमा करेंगे।
13. किसी परिस्थिति/कारणवश आम नीलामी रद्द करने का सर्वाधिकार उपायुक्त, गुमला को सुरक्षित होगा।

नोटः–विशेष जानकारी के लिये जिला खनन कार्यालय, गुमला में किसी भी कार्य दिवस में सम्पर्क किया जा सकता है।

ह०/–
उपायुक्त, गुमला

PR 301148Mines and Geology(23-24)#D

झारखण्ड सरकार
श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग, जिला नियोजनालय, चतरा।

"एक दिवसीय रोजगार मेला–2023"
रिक्ति संबंधित सूचना

अपार हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग, झारखण्ड, सरकार के तत्वाधान में जिला नियोजनालय, चतरा द्वारा दिनांक–03.07.2023 को SC छात्रावास परिसर में ब्लॉक के निकट चतरा में एक दिवसीय रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा है। इस रोजगार मेला में निम्न नियोजकों ने आने की अपनी सहमति जताई है–

S.No	Name & Address of the Employer	Name of the Post	No. of Post	Qualification	Age	Exp.	Job location	Pay/Salary
1	2	3	4	5	6	7	8	9
01	Acme education Solution Pvt Ltd.	Field Supervisor	10	Any Graduate	20-35	Min. 1Year in Skill Industry	Pratappur Chatra	10000-12000 /month
		GDA Trainer	10	GNM ,B.Sc In nursing	20-35	Min. 3 years Experiences TOT Certified	Pratappur Chatra	10000-14000 /month
		SET/SMO Trainer	10	Diploma in Garment	20-35	Min. 3 years Experiences TOT Certified	Pratappur Chatra	10000-12000 /month
		Beauty & Wellness	10	Theatrical and Media makeup Artist Expert	20-35	Min. 2 Years Experience	Pratappur Chatra	8000-12000 /month
		Accountant	02	B.Com/Tally/ Excel & Basic Knowledge of Computer	20-35	Min. 2 Years Experience	Chatra	6000-12000/ month
		Computer operator	04	Any Graduate/MS Office/Package/Photoshop/Hindi+ English Typing & Basic Knowledge of Computer	20-35	Min. 2 Years Experience	Chatra	6000-8000/ month
02	R.B Hospital	Hospital Manager	1	MBA	18-30	5 Years	Chatra	25000/.
03	Fusion Micro Finance Ltd.	Relationship officer	30	12th or Above	30 years	0-3 years	All Jharkhand	11000 +4000Fuel+ Suitable Insentive
04	Sai Engineering Works	Fitter	1	12th pass (ITI)	30 years	2 years	Tandwa,Chatra	15000/.
		Welder	1	12th pass (ITI)	30 years	2 years	Tandwa,Chatra	15000/.
05	RVPR Construction Pvt Ltd.	Mech.Engineer	1	B.tech	18-25	5 years	Tandwa,Chatra	10000-15000
		Eng.Supervisor	1	B.tech	18-25	5 years	Tandwa,Chatra	10000-15000
06	Rameshwarlal Khandewal School Chatra	Computer Teacher	2	PGDCA	18-25	3 years	Chatra	10000-12000
		Bio Teacher	1	M.SC +B.ED	18-25	3 years		10000-12000
		English Teacher	2	M.A +B.ED	18-25	3 years		10000-12000
		Sanskrit Teacher	2	M.A +B.ED	18-25	3 years		10000-12000
		Music Teacher	1	M.A +B.ED	18-25	3 years		10000-12000
		P.T.I Teacher	1	B.P.ED	18-25	3 years		10000-12000
07	R.K Transport Construction Pvt Ltd.	Driver	5	Trained	20-30	10 years	Chatra	12000-15000
		M.Supervisor	1	M.Tech	18-30	5 years		12000-15000
08	Shree Ganpati Silver	Helper	4	8th pass	18+	0	Chatra	6750/month
		Driver	1	10th pass	18+	2 years	Chatra	9000/month
09	Tissa Auto Mobile LLP	Washing Boy	2	8th pass	18+	0 years	Chatra	5000/month
10	Aarchi Fuel Station	DSM	2	12th pass	18+	0 years	Chatra	7000-12000
11	Treggen Solution	E – Commerce Account Manager	30	12th pass + ADCA	18+	0-1 years	Patna	10000/.
12	Mahendra Traders Oil Section Simaria	Computer Operator	1	Graduate	21 Above	2 years	Simaria Chatra	10000/.
		Stock keeper	1	12th pass	21 Above	2 years	Simaria Chatra	10000/.
13	Atria Power Corporation Pvt Ltd.	Field Technician Other Home Appliances (Trainer)	3	Graduation/ITI Electronics, Electricals/ B.tech	21-40	3 years	Tandwa chatra	15000/. min.
		Retails Sales Associate	3	Diploma (Retail) Graduation	21-40	Fresher	Tandwa chatra	15000/. min
14	Nazareth Vidyaniketan High School Chatra	Chemistry Teacher	1	M.SC B.Ed	18-30	1 years	Chatra	10000-12000
15	LIC of India	RCA(Rural Career Agent)	50	10th	18-35	Fresher	Chatra & Hazaribagh	5000/.+ Commission+ Rewards
16	Spandana Sphoorty Financial Ltd.	C.A(Credit Officer Assistant)	15	12th +above	20-27	Fresher	All over Jharkhand	12000 +Insentive

दिनांक :– 03.07.2023
स्थान :– SC छात्रावास परिसर में चतरा ब्लॉक के निकट
समय :– 10:00 बजे से 04:00 बजे तक।

योग्य एवं इच्छुक उम्मीदवार जो पूर्व में झारखण्ड के किसी भी नियोजनालय में निबंधित नही हैं वे अपने निकटतम नियोजनालय में अथवा www.rojgar.jharkhand.gov.in पर अपना निबंधन कराते हुए रोजगार मेला में नियोजक/नियोजक के प्रतिनिधि के समक्ष अपने सभी मूल प्रमाण पत्रों ,उसकी एक छाया प्रति , अपना बायोडाटा (2 कॉपी) नियोजनालय का निबंधन कार्ड एवं सक्षम प्राधिकार द्वारा निर्गत स्थानीय प्रमाण पत्र की प्रति के साथ साक्षात्कार हेतु उपस्थित हो सकते हैं। जो उम्मीदवार पूर्व में निबंधित है उनको पुनः निबंधन कराने की आवश्यकता नही हैं।नियोजक निजी क्षेत्र के है अतः साक्षात्कार, रिक्ति एवं सेवा शर्तों के लिए सिर्फ नियोजक ही उत्तरदायी हैं। नियोजनालय मात्र सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य कर रहा हैं एवं चयन में नियोजनालय की कोई भूमिका नही होगी। इस हेतु कोई भी मांग व्यय/भत्ता देय नहीं होगा।इस एक दिवसीय रोजगार मेला में बेराजगार युवक/युवतियाँ भाग लेकर इसका भरपूर लाभ उठा सकते हैं। कोविड–19 हेतु निर्गत दिशा– निर्देशों/SOP का दृढतापूर्वक अनुपालन किया जाना आवश्यक है। अतः सामाजिक दूरी का पालन, फेस मास्क, सेनिटाइजर एवं ग्लब्स इत्यादि का उपयोग करेंगे।

नोट :– विशेष जानकारी हेतु जिला नियोजनालय, चतरा से सम्पर्क कर सकते हैं।

जिला नियोजन पदाधिकारी,
चतरा।

PR 301150 (Labour Employment and Traning) 23-24 (D)

गायिका व फिल्म निर्देशक ने चलाया वृक्षारोपण अभियान

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर में गर्मी का मौसम आते ही लोग गर्मी से परेशान हो जाते हैं। पानी की किल्लत हो जाती है। इस वर्ष तो गर्मी का तापमान इतना बढ़ गया कि लोग घर से निकलना पसंद नहीं करते थे। गर्मी और पानी की किल्लत के स्थाई समाधान के लिए लोकप्रिय गायिका मेघा और लोकप्रिय फिल्म निर्देशक श्रीराम डाल्टन ने एक टीम गठित कर वृक्षारोपण अभियान की शुरूआत किया है। इस अभियान की शुरूआत 25 जून को की गई है। इस अभियान के तहत अभी तक 100 से अधिक वृक्षों के पौधे लगाए जा चुके हैं। अभियान का नेतृत्व कर रही मेघा ने बताया कि बैरिया चौक से सूदना, जोड़, रेडमा, बाईपास की सड़कों के दोनों तरफ

छायादार वृक्ष लगाया जाएगा। वृक्षारोपण के लिए स्कूल को भी लक्षित किया गया है। हमारा उद्देश्य है मेदिनीनगर हरा भरा हो। इस अभियान की सार्थकता को समझते हुए स्वर्णिम कंस्ट्रक्शन के साइड इंचार्ज रवि शर्मा, केजी स्कूल के प्राचार्य आशीष दुबे, भूगोल के शिक्षक पंकज देसाई, आदेशपाल कलावती देवी, माली मदन कुमार रवि और अन्य स्थानीय लोग सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। डीएफओ सौमित्र शुक्ला ने मेघा और उनकी टीम द्वारा संचालित इस अभियान की सराहना की है। इस अभियान की सफलता के लिए डीएफओ कार्यालय सहायक शशि शेखर के द्वारा वृक्षों के पौधे उपलब्ध कराया गया है। इसके अलावा स्वर्णिम कंस्ट्रक्शन के प्रोपराइटर मनीष कुमार सिंह ने 50 फलदार वृक्ष के पौधे उपलब्ध कराने की बात कही है। पौधों की घेराबंदी के लिए सोनू सिंह नामधारी ने जाली उपलब्ध करायी है। अभियान के संदर्भ में मेघा ने मेदिनीनगर वासियों से वृक्षारोपण के इस अभियान में जुड़ने और सहयोग प्रदान करने की अपील की है।

शादी का झांसा देकर नाबालिग लड़की को भगाने का मामला दर्ज

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पांकी थाना क्षेत्र के ग्राम करार में एक मुस्लिम लड़के समीर आलम उर्फ तनवीर द्वारा एक नाबालिक 16 वर्षीय हिंदू लड़की को शादी का झांसा देकर बहला फुसलाकर भगा ले जाने का मामला सामने आया है। इस संबंध में लड़की के मामा अखिलेश कुमार ने 26 जून को पांकी थाने में लिखित आवेदन देकर कहा है कि 24 जून को सुबह 2:00 बजे घर के सभी सदस्य सोए हुए थे।तभी घर में कुछ खटपट की आवाज सुनाई दी। उठकर देखा तो मेरी

भांजी घर में नहीं थी। सुबह उठकर सभी ने उसे सगे संबंधियों सहित सभी जगह खोजबीन किया। परंतु कुछ भी पता नहीं चल पाया। इसके बाद गांव के किसी अन्य व्यक्ति से पता चला कि गांव का ही समीर आलम उर्फ तनवीर मेरी भांजी को बहला-फुसलाकर भगा ले गया है। लड़की के मामा अखिलेश कुमार ने बताया कि हमारी भांजी को भगाने में पांकी करार गांव निवासी अनवारूल हक उर्फ छोटू पिता मोइन अंसारी का भी हाथ है। अखिलेश कुमार ने पांकी थाना की पुलिस से आग्रह किया है कि हमारी भांजी को सही सलामत घर लाया जाए और आरोपी समीर आलम को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। मामले के सात दिन गुजर जाने के बाद भी अभी तक सभी आरोपी पुलिस के गिरफ्त से बाहर है। जिससे लोगों में काफी रोष व्याप्त हैं।

NEWS इन ब्रीफ

ऋत्विज समाज ने चलायी छात्रवृत्ति योजना

मेदिनीनगर। ऋत्विज समाज ने सामाजिक क्षेत्र में कई तरह की गतिविधियां संचालित की है।इसी कड़ी में पिछले कई वर्षों से छात्रवृति योजना चल रहा है। संस्था के अध्यक्ष हरिहरनंद चौबे एवं उपाध्यक्ष मणिकांत उपाध्याय ने बताया कि मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा में 80प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले गरीब और मेधावी विद्यार्थियो को इस योजना का लाभ दिया जाता है। ब्राह्मण परिवार के आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र छात्राओं को उच्च शिक्षा ग्रहण करने में सहयोग के लिए छात्रवृति राशि दिया जाता है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष छात्रवृति योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 5 जुलाई निर्धारित है। अभी तक 35 अभ्यर्थियों ने आवेदन जमा किया है। चयन समिति की बैठक 7 जुलाई को होगी और छात्रवृति का लाभ देने के लिए नाम चयन किया जायेगा।उन्होंने बताया कि संस्था के संरक्षक डॉ अरुण शुक्ला की देखरेख में यह योजना सुचारू रूप से संचालित है। लक्ष्मण शुक्ला स्मृति छात्रवृति योजना के माध्यम से छात्र एवं शिवकुमारी देवी स्मृति छात्रवृति योजना के तहत छात्राओं को उच्च शिक्षा पूरा करने के लिए आर्थिक सहयोग किया जाता है। इच्छुक छात्र छात्रा संस्था के अध्यक्ष हरिहरनंद चौबे (6201286410) पंचवटीनगर एवं उपाध्यक्ष मणिकांत उपाध्याय (8809219788) चेयरमैन रोड शिव मंदिर के निकट हमीदगंज से संपर्क कर आवेदन जमा कर सकते हैं। आवश्यक प्रक्रिया पूरा करने के बाद चयनित अभ्यर्थियों को इसका लाभ मिलेगा।

चेंबर ऑफ कॉमर्स की महिला विंग अध्यक्ष बनी शर्मिला वर्मा

मेदिनीनगर। पलामू चेंबर ऑफ कॉमर्स की महिला विंग के कार्यकारिणी का गठन शुक्रवार को किया गया। एक अनौपचारिक मिटींग में चेंबर ऑफ कॉमर्स की महिला विंग की अध्यक्ष शर्मिला वर्मा ने महिला विंग का विस्तार किया और पदों का बंटवारा करके उन्हें जिम्मेदारी दी गई। महिला विंग के उपाध्यक्ष के तीन पदों पर क्रमशः ममता सिन्हा,राखी सोनी, शकंचन गुप्ता को सचिव के पद पर प्रियंका सिंघानिया को उप सचिव फरहा नाज और कोषाध्यक्ष के पद पर प्रियंका आनंद साहू को मनोनीत किया गया।

जन्म-मृत्यु निबंधन को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला संपन्न

जन्म व मृत्यु निबंधन अभियान को कैसे सफल बनाया जाये इस पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी

अभियान पर निगरानी रखने को लेकर राज्य, जिला, अनुमंडल व प्रखंड स्तर पर टास्क फोर्स का भी गठन किया गया है : सांख्यिकी पदाधिकारी

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जिले में शत-प्रतिशत जन्म एवं मृत्यु निबंधन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विशेष अभियान प्रारंभ करने को लेकर शनिवार को समाहरणालय के सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान 14 जुलाई से 14 अगस्त 2023 तक चलने वाले जन्म व मृत्यु निबंधन अभियान को कैसे सफल बनाया जाये इस पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी। जिला योजना पदाधिकारी सह

जिला सांख्यिकी पदाधिकारी रमण कुमार ने पीपीटी के माध्यम से उपस्थित सभी को जन्म व मृत्यु के निबंधन तथा इसके महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी साथ ही उपस्थित सभी लोगों के बीच प्रशिक्षण किट का भी वितरण किया गया। उन्होंने बताया कि अभियान पर निगरानी रखने को लेकर राज्य,जिला,अनुमंडल व प्रखंड स्तर पर टास्क फोर्स का भी गठन किया गया है जो अलग-अलग तिथि को बैठक कर अभियान का आकलन करेगी। प्रशिक्षण में कोरोना काल में जन्मे बच्चों को चिन्हित करने और उनके जन्म को राज्य की औपचारिक पंजीकरण प्रणाली में नार्मांकित कराने पर बल दिया गया। प्रशिक्षण में आये सभी प्रशिक्षणार्थियों को इस अभियान को सफल बनाने में निबंधन कार्य से जुड़े निबंधकों, आंगनबाड़ी सेविकाओं, सहिया,व अन्य कर्मियों का भरपूर सहयोग लेने पर बल दिया। बैठक में एसडीओ, बीडीओ, प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी समेत अन्य उपस्थित थे।

3 जुलाई से 12 जुलाई के बीच प्रखंड वार कार्यशाला का होगा आयोजन

कार्यशाला में बताया गया कि अभियान को सफल बनाने को लेकर 3 से 12 जुलाई के बीच प्रखंड एवं नगर निकायों में अलग से कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा जिसमें स्थनीय कर्मियों को प्रशिक्षित किया जायेगा। अभियान के दौरान जन जागरुकता और लोगों को जन्म व मृत्यु की घटना के निबंधन के महत्व को समझाने के लिये व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जायेगा। इस दौरान जिंगल,शॉट विडिओ का उपयोग भी किया जायेगा। इसके लिये तकनीकी एवं वित्तीय सहायता यूनिसेफ के द्वारा किया जायेगा। जिला नियंत्रण कक्ष हेल्पलाइन नंबरः-06562-228008 तथा 9065016304

दादा दादी पार्क का कार्य प्रगति पर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। नगर निगम द्वारा लगाये जा रहे मल्टी प्ले स्टेशन जिसका शिलान्यास प्रथम महापौर अरूणा शंकर द्वारा अपने कार्यकाल में किया गया था। प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने आज निरक्षण करने कोयल रिवर फ्रंट गई प्रथम महापौर ने बताया अभी प्रथम फेज में चैनपुर, शाहपुर, कोयल रिवरफ्रंट पार्क, सिंचाई कॉलोनी, सूर्य मंदिर एवं रांची रोड निगम जोनल कार्यालय में लगाया जा रहा, जिसका काम दो-तीन दिनों में पूरा हो जाएगा। उन्होने ने बताया इस मल्टी प्ले स्टेशन को वर्ल्ड क्लास रबड़ टेफलॉन फ्लोरिंग पर लगाया जा रहा हैं, जहां छोटे-छोटे बच्चों को खेलते वक्त चोट ना लगे। महापौर ने यह भी कहा कि जिस-जिस वार्ड में जमीन का एनओसी मिलेगा, वहां-वहां नगर आयुक्त से अनुरोध कर इससे लगवाया जाएगा, ताकि बच्चों को खेलने के लिए अपने मोहल्ले में ही दादा-दादी पार्क मिल सके।

भारतीय जनता पार्टी की पलामू प्रमंडल स्तरीय संगठनात्मक बैठक संपन्न

मेदिनीनगर। शहर के टाउन हॉल में भारतीय जनता पार्टी के पलामू प्रमंडल स्तरीय संगठनात्मक बैठक का हुआ आयोजन । इस अवसर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय राज्यसभा सांसद सह प्रदेश महामंत्री आदित्य साहू , भाजपा, पलामू के जिला प्रभारी विनय जयसवाल, भाजपा के जिला अध्यक्ष विजयानन्द पाठक , पलामू सांसद बीडी राम, डालटनगंज विधायक आलोक चौरसिया , सिमरिया विधायक किशून दास, प्रदेश प्रशिक्षण प्रमुख मनोज सिंह तथा भारतीय जनता पार्टी, पलामू प्रमंडल से संबंधित सभी वरीय पदाधिकारीगण, वरिष्ठ नेतागण, मंडलों के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

झा. मु.मो. ने बीज बेचने वाली महिलाओं को किया सम्मानित

मेदिनीनगर। पलामू झारखंड मुक्ति मोर्चा व्यवसाय प्रकोष्ठ के पलामू जिला अध्यक्ष दीपू चौरसिया के नेतृत्व में शनिवार को देहात क्षेत्र से जो महिलाएं बाजार में बीज बेचते हैं फुटपाथ पर उन्हें अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। दीपू चौरसिया ने कहा दूर गांव देहात से यह महिलाएं बीज लेकर आती है और बाजार क्षेत्र में फुटपाथ पर बैठकर इस ग्रुप इस बारिश में अपना सामान बेचते हैं। इन महिलाओं के जज्बे को सलाम, जरूरतमंदों की सेवा सबसे बड़ी सेवा होती है। पार्टी के सचिव मनोज गुप्ता ने कहा कि हर व्यवसाय चाहे वह छोटा हो बड़ा हो सभी को साथ में लेकर के चलेंगे। साथ में हमारे पार्टी के उपाध्यक्ष साकिब सिद्दीकी, कोषाध्यक्ष राहुल, उपाध्यक्ष जिम्मी साथ में पंकज शर्मा, कमल जयसवाल, कुंदन गुप्ता, अहमद खान सभी उपस्थित थे।

कदाचार मुक्त परीक्षा के लिए दंडाधिकारी प्रतिनियुक्त होंगे

उत्कृष्ट विद्यालयों में दाखिले के लिए आज होगी पुर्नपरीक्षा

इस परीक्षा में कक्षा 6 से लेकर 11वीं में नामांकन हेतु कुल 3616 परीक्षार्थी शामिल होंगे

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड सरकार ने छात्रों की बेहतर शिक्षा के लिए राज्य भर में 80 उत्कृष्ट विद्यालय शुरू किए हैं। इन स्कूलों में सीबीएसई पैटर्न पर पढ़ाई कराई जाएगी। शिक्षा परियोजना की ओर से जारी नोटिस के अनुसार, पलामू जिले के उत्कृष्ट विद्यालय में शामिल दो विद्यालयों में 2 जुलाई को नामांकन हेतु परीक्षा आयोजित कराई जाएगी। शिक्षा विभाग के अनुसार पूर्व में आयोजित परीक्षा में त्रुटि होने के कारण परीक्षा पुनः आयोजित की जा रही है। इसके लिए जिले भर में 5 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इस परीक्षा में कक्षा 6ठी से लेकर 11वीं में नामांकन हेतु कुल 3616 परीक्षार्थी शामिल होंगे। कदाचार मुक्त परीक्षा के लिए हर परीक्षा केंद्र पर दंडाधिकारी प्रतिनियुक्त किए जाएंगे और जल्द ही नामांकन प्रक्रिया पूर्ण कर क्लास शुरू कराई जाएगी। राजकीय बालिका प्लस 2 उच्च विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य आशीष दुबे ने बताया कि सरकार के निर्देश के अनुसार यहां भी 1 जुलाई से

क्लास शुरू कराने की तैयारी थी। कुछ त्रुटियों के कारण दोबारा परीक्षा आयोजित कराई जा रही है। हमारा प्रयास है कि जल्द ही नामांकन प्रक्रिया पूर्ण कर क्लास शुरू कराई जाएगी। इसके लिए 2 जुलाई को दो पालियों में परीक्षा आयोजित होगी। हमारे विद्यालय के साथ कुल 5 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इसके लिए छात्रों को एडमिट कार्ड दिए जा रहे हैं।बता दें कि क्लास 6ठी, 7वीं, 8वीं की परीक्षा हेतु प्रथम पाली 10 बजे से 12: 30 बजे तक और 9वीं, 11वीं की परीक्षा 2 बजे से 4:30 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षा में शामिल होने के लिए छात्रों को एडमिट कार्ड और पहचान पत्र के साथ पेन ले जाना आवश्यक है। जिला स्कूल के प्रभारी प्राचार्य ने बताया कि जिला शिक्षा पदाधिकारी के निर्देश पर 2 जुलाई को परीक्षा आयोजित कराई जा रही है। इसके लिए 1 जुलाई तक एडमिट कार्ड छात्रों को दिए जा रहे हैं। जिसके बाद परिणाम प्रकाशित होने के पश्चात नामांकन लिया जाएगा। पलामू जिले के दो उत्कृष्ट विद्यालय में नामांकन परीक्षा हेतु पलामू में पांच परीक्षा केंद्र बनाए गए है। जिसमें राजकीय बालिका प्लस 2 उच्च विद्यालय, बीसीसी मिशन स्कूल, सर्वोदय गर्ल्स हाई स्कूल नवाटोली, राजकीय कृत गणेश लाल अग्रवाल उच्च विद्यालय, राजकीय कृत ब्राह्मण उच्च विद्यालय में परीक्षा आयोजित होगी। परीक्षा केंद्र में परीक्षार्थी को मोबाइल फोन या किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स ले जाना वर्जित है।

कार्यक्रम

एएनएम के छात्रों को दी जानकारी

सिकल सेल एनीमिया को लेकर जागरुकता शिविर आयोजित

सिकिल सेल एनीमिया खून की कमी से जुड़ी एक बीमारी है : डीपीएम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। एएनएम स्कूल में शनिवार को सिकल सेल एनीमिया पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जागरूकता शिविर में मुख्य रूप से सिविल सर्जन अशोक कुमार सिंह, डीपीएम दीपक कुमार, डॉक्टर रोहित पांडेय उपस्थित थे। मौके पर उपस्थित डीपीएम दीपक कुमार ने एनीमिया रोग के बारे में एएनएम के छात्रों को जानकारी दी और जागरूक किया। उन्होंने कहा कि सिकिल सेल एनीमिया खून की कमी से जुड़ी एक बीमारी है। इस अनुवांशिक डिस्ऑर्डर में ब्लड सेल्स टूट

जाते हैं। उनका साइज बदलने लगता है, जो खून की नसों को ब्लॉकेज कर देता है। सिकिल सेल एनीमिया में लाल रक्त कण मर जाते हैं और शरीर में खून की कमी हो जाती है। जेनेटिक बीमारी के चलते शरीर में खून बनना बंद हो जाता है। शरीर में खून की कमी हो जाने के कारण यह रोग किडनी, तिल्ली, लीवर जैसे कई जरूरी अंगों को डेमेज होने का कारण बनता है। पर्याप्त लाल रक्त कोशिकाएं न होने से एनीमिया विकसित करते हैं, वह स्थिति जो है सिकिल सेल एनीमिया का नाम देती है। सिविल सर्जन अशोक कुमार सिंह ने एएनएम के छात्रों को जागरूक करते हुए कहा कि सभी छात्रा इसकी जानकारी लोगो को दे। ताकि लोग इस बीमारी से बच सकें।

भारतीय जनता पार्टी की समीक्षा बैठक सम्पन्न

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। भारतीय जनता पार्टी की प्रमंडल स्तरीय समीक्षा बैठक शनिवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय भवन मेदिनीनगर में हुई। जिसमें पलामू प्रमंडल के साथ-साथ चतरा जिले को भी सम्मलित किया गया। इस बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश महामंत्री सह राज्यसभा सांसद आदित्य साहू की उपस्थिति हुई। इस प्रमंडलीय बैठक की अध्यक्षता पलामू जिले के जिला अध्यक्ष विजय नंद पाठक ने की तथा विषय प्रवेश कराते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया । वहीं लातेहार के जिला अध्यक्ष व पूर्व विधायक हरे कृष्णा सिंह ने स्वागत भाषण किया। मुख्य अतिथि आदित्य साहू ने समीक्षा बैठक के दौरान कहा कि आप सभी ने पूरे जोर-शोर से पूरे 1 महीने तक जिस जोश खरोश से कार्य किया वह सराहनीय है। छोटे कार्यकर्ता ही अपने कार्यों के अनुसार ऊंचे ऊंचे पदों पर जाते हैं अतः कर्मठता आप को आगे बढ़ाने का कार्य करेगी । आप सभी को तहे दिल से धन्यवाद। पलामू सांसद विष्णु दयाल राम ने कहा कि कई मंडल अध्यक्षों ने तो बहुत जबरदस्त कार्य किया है जिसका मैं ह्रदय से धन्यवाद करना चाहता हूं। आप सभी की यह मेहनत आने वाले भविष्य में रंग लाएगी। वहीं प्रदेश प्रशिक्षण प्रमुख

मनोज सिंह ने कहा कि आप सभी का यह प्रयास रंग लाएगा, इसी तरह निरंतर पार्टी कार्य में संलग्न रहें, ताकि आने वाला भविष्य सुखद हो व केंद्र के साथ-साथ राज्य में भी भाजपा की सरकार हो। मौके पर चतरा विधायक- किशनदास, डाल्टनगंज - विधायक आलोक, चौरसिया पाँकी विधायक- शशिभूषण मेहता, पूर्व विधायक गिरीनाथ सिंह, श्याम नारायण दुबे, गढ़वा जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश केसरी ,पलामू प्रभारी विनय जयसवाल ,लातेहार प्रभारी मुकेश निरंजन सिन्हा, चतरा प्रभारी विपिन बिहारी सिंह ,रघुराज पांडे, अलख पांडे ,परशुराम ओझा , सुजाता सिंह, नीलम देवी के साथ-साथ सभी मंडल अध्यक्ष, मंडल प्रभारी, भारतीय जनता पार्टी के जिले के व प्रमंडल के नेता उपस्थित थे।

मिथिलेश ठाकुर ने किया रमकंडा से जल संरक्षण महाअभियान का शुभारंभ, जल संरक्षण की 2500 योजनाओं की शुरुआत

जल की समस्या वैश्विक, सभी मिलकर करें समाधान : मंत्री

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा

जिले के रमकंडा प्रखंड अंतर्गत चेटे पंचायत मुख्यालय में जनसंवाद एवं जल संरक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर, डीसी शेखर जमुआर, एसी पंकज कुमार सिंह, डीआरडीए निदेशक दिनेश प्रसाद सुरीन, डीएफओ साउथ शशी कुमार, प्रखंड प्रमुख सुरजी देवी, बीडीओ पुष्कर सिंह मुंडा, मुखिया कामेश कोरवा आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस दौरान मंत्री ने चेटे पंचायत परिसर में पौधरोपण भी किया।

मौके पर मंत्री ने कहा कि पेयजल की समस्या एक वैश्विक समस्या है। उन्होंने कहा कि इस समस्या का समाधान यदि ससमय हम सभी मिलकर नहीं करते हैं तो भविष्य में स्थिति और भी भयावह हो जाएगी। इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए पौधरोपण व जल संग्रहण अति आवश्यक है। उन्होंने इस समस्या को देखते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं गढ़वा डीसी को पत्र लिख कर बहुतायत संख्या में पौधरोपण के कार्य किये जाने की आवश्यकता बताया है। मंत्री ठाकुर ने कहा कि पौधरोपण व जल संग्रहण जैसे कार्य से पेयजल की समस्या से न सिर्फ वर्तमान में निजात पाया जा सकता है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी अति महत्वपूर्ण है। आयोजित जन संवाद कार्यक्रम के दौरान राशन, पेंशन, सड़क निर्माण, पुल निर्माण सहित अन्य समस्याओं को ग्रामीणों ने के समक्ष रखा। इस दौरान मंत्री ठाकुर ने योग्य व्यक्ति जिन्हें सरकारी योजनाओं से आच्छादित नहीं किया गया है अथवा किसी कारणवश छूट गए हों, वैसे व्यक्तियों को तत्काल लाभान्वित करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया, जबकि कुछ मामलों में आ रही है त्रुटि को तत्काल निष्पादित करते हुए समस्या का निदान करने का भी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया। उपायुक्त जमुआर ने कहा कि इस कार्यक्रम के दौरान सम्पूर्ण जिला में जल संग्रहण की योजना सॉकपीट, वर्मी कम्पोस्ट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, पंचायत भवन में पौधरोपण आदि के साथ-साथ बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत वृक्षारोपण की योजना वृहत पैमाने पर प्रारम्भ किया जा रहा है। साथ ही नई योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जा रही है। उन्होंने बताया कि बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत जिले के 142 पंचायत में 650 एकड़ भूमि में डिग्गिंग करके वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ना सिर्फ वृक्षारोपण करना बल्कि जल संग्रहण के सभी उपाय भी किए जा रहे हैं। जल संरक्षण के लिए सभी आंगनबाड़ी केंद्र, पीएचसी, सभी विद्यालय में भी पौधरोपण करने के लिए संबंधित विभाग के पदाधिकारी को निर्देश दिया गया है। डीसी ने आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि सरकारी परिसर में लगाये गये पौधों को बचाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। रंका एसडीओ राम नारायण सिंह ने भी विचार व्यक्त किया।

3581 नई योजनाओं की मिली स्वीकृति : इस कार्यक्रम के माध्यम से नई योजनाओं की स्वीकृति बिरसा हरित ग्राम योजना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वर्मी कम्पोस्ट, सोखा गड्ढा एवं पौधरोपण आदि की कुल 3581 योजनाओं को जिले के विभिन्न प्रखंडों के लिए स्वीकृति दी गई। जिसमें बरडीहा प्रखंड में बिरसा हरित ग्राम योजना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वर्मी कंपोस्ट, सोखा गड्ढा एवं वृक्षारोपण के अंतर्गत कुल 126 योजनाओं की स्वीकृति दी गई। जबकि बड़गड़ प्रखंड के लिए 60, भंडरिया के लिए 128, भवनाथपुर के लिए 276, विशुनपुरा के लिए 67, चिनिया के लिए 239, डंडा के लिए 30, डंडई के लिए 302, धुरकी के लिए 89, गढ़वा के लिए 374, कांडी के लिए 94, केतार के लिए 223, खरौंधी 109, मझिआंव 354, मेराल 368, नगर उंटारी 107, रमकंडा 209, रमना 87, रंका 262 तथा सगमा प्रखंड के लिए 77 योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त जल संचयन की विभिन्न योजना के तहत लगभग 2500 योजनाओ की शुरूआत की गई। इस दौरान मंत्री श्री ठाकुर ने विभिन्न योजनाओं से संबंधित रमकंडा प्रखंड के विभिन्न गांव गोबरदाहा, बलीगढ़, हरहे, सुली, दाहो, सबाने, बरवा, नावाडीह, मंगराही, रमकंडा, पटसर, शिशवा एवं चेटे आदि के लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण किया। मौके पर मुख्य रूप से उक्त सहित जिला एवं प्रखंड स्तर के सभी पदाधिकारी, कर्मी, झामुमो जिलाध्यक्ष तनवीर आलम, सचिव मनोज ठाकुर, जिप उपाध्यक्ष सत्यनारायण यादव, रेखा चौबे सहित काफी संख्या में झामुमो कार्यकर्ता व ग्रामीण उपस्थित थे।

जल संरक्षण महाअभियान में सबकी भागीदारी जरूरी : ठाकुर

गढ़वा। जिले में भूगर्भ जल स्तर में लगातार हो रही कमी से संपूर्ण जिला पेयजल की भीषण संकट से जूझ रहा है। जिले में जल संकट की समस्या के निदान के लिए गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने बड़ी पहल की है। मंत्री ठाकुर ने शनिवार को रमकंडा प्रखंड के चेटे पंचायत से जल संरक्षण महा अभियान कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। मौके पर मंत्री ठाकुर ने जिले वासियों से अपील करते हुए कहा कि जल है तो कल है। जल के बिना भविष्य की कल्पना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि आज से जल संरक्षण महा अभियान की शुरुआत की गई है। इस महा अभियान में गढ़वा जिला सहित संपूर्ण राज्य के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी बहुत जरूरी है। जल संरक्षण जैसे महा अभियान की सफलता सिर्फ सरकारी विभागों, कर्मियों एवं अधिकारियों के

गढ़वा जिला पेयजल संकट से जूझ रहा

भरोसे संभव नहीं है। जल संरक्षण महा अभियान को सफल बनाने एवं अपने तथा आने वाली पीढ़ी की बेहतर भविष्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी अति आवश्यक है। मंत्री ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि सभी लोग कम से कम एक एक पौधा लगाकर संरक्षित करें। साथ ही प्रत्येक घर के समीप सोखता का निर्माण अवश्य करें। तभी भूगर्भ जल संरक्षण संभव हो पाएगा। उन्होंने कहा कि आज संपूर्ण गढ़वा एवं पलामू जिले में पेयजल का भीषण संकट उत्पन्न हो गया है। यदि अब भी लोग नहीं सचेत हुए तो आने वाली पीढ़ी का भविष्य बहुत ही भयावह होगा। बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए जल संरक्षण महा अभियान में सबकी सहभागिता बहुत ही जरूरी है।

लायंस क्लब ने अस्पताल में किया पौधरोपण, डॉक्टर सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा

लायंस क्लब ऑफ गढ़वा ऑसम के नए सत्र 2023-24 के प्रथम दिन शनिवार को लायन अध्यक्ष कंचन साहू के अध्यक्षता में पौधरोपण किया गया। इस मौके पर डा. दिवाकर, डा. नंद किशोर रजक, डा. ज्वाला प्रसाद सिंह, डा.रामविनोद सिंह,डा. निशांत सिंह, डा. अमित कुमार,डा. वीरेंद्र राम, डा.शमशेर सिंह, डा. विजय भारती, डा.नीतू सिंह,डा. निखत परवीन, डा. टी पीयूष, डा. स्नेहलता, डा. अरशद अंसारी को शॉल ओढ़ाकर व बुके देकर सम्मानित किया गया। लायंस क्लब के पदाधिकारी राकेश कुमार पाल

ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी लायंस क्लब द्वारा अभियान चलाकर कार्यक्रम किया जा रहा है। इस मौके पर पूर्व लायन जिलापाल डा. आर एन एस दिवाकर, डा. नंदकिशोर रजक, डा. ज्वाला प्रसाद, समाजसेवी राजू चौबे, राजेश कुमार गुप्ता, ज्योति प्रकाश, सरोज सिंह, आशीष कुमार, पूनमचंद, संतोष कश्यप, अनिल सोनी, देवेंद्र गुप्ता, विश्वास शर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

डॉक्टर्स डे पर सदर अस्पताल के चिकित्सक किए गए सम्मानित

गढ़वा। खरवार आदिवासी एकता संघ जिला कमेटी की ओर से राष्ट्रीय डॉक्टर्स डे पर सदर अस्पताल के चिकित्सकों को सम्मानित किया। उस दौरान परमेश्वरी हॉस्पिटल के डॉक्टर निशांत कुमार सिंह, डॉ एनके रजक, डॉ स्नेह लता, डॉ निखत प्रवीण, डा नीतू कुमार सिंह, डॉ वीरेंद्र कुमार सिंह, डॉ टी पीयूष, डॉ प्रदीप कुमार, डॉक्टर ज्वाला प्रसाद, डॉ विजय कुमार भारती को साल एवं गुलदस्ता देकर सम्मनित किया गया। उस दौरान संघ की ओर से दो यूनिट रक्तदान भी किया गय। जिला अध्यक्ष लव कुमार सिंह ने कहा कि डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होते हैं और डॉक्टर सभी मरीज को एक समान दृष्टि से देखते हैं। मौके पर खरवार आदिवासी एकता संघ के प्रदेश सचिव ओम प्रकाश सिंह, जिला अध्यक्ष लव कुमार सिंह, जिला उपाध्यक्ष तिलेश्वर सिंह, जिला सचिव अर्जुन कुमार सिंह, जिला संगठन मंत्री भरत कुमार सिंह, जिला सदस्य कृष्णा कुमार सिंह सहित लोग उपस्थित थे।

डंडई प्रखंड के सरकारी कार्यालयों के परिसरों में किया गया पौधरोपण

डंडई। डंडई पंचायत सचिवालय भवन परिसर में शनिवार को पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य रूप से बीडीओ सोमा उरांव, जेई मुकेश दुबे, मुखिया धनवंती देवी, मुखिया प्रतिनिधि महेश्वर राम, पंचायत सचिव सुदर्शन राम रोजगार सेवक दिनेश राम सहित अन्य लोगों ने एक-एक पौधा लगाकर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। रारो पंचायत सचिवालय परिसर में मुखिया सुनीता देवी के नेतृत्व में मुख्य रूप से जिला परिषद सदस्य मोहन पासवान, मुखिया प्रतिनिधि जितेंद्र कुमार ठाकुर, पूर्व उपमुखिया शिव प्रसाद यादव, पंचायत सचिव सुदर्शन राम, बीडीसी अरविंद पासवान सहित अन्य लोगों ने एक-एक पौधा लगाकर उसके संरक्षण का संकल्प लिया। वहीं करके पंचायत सचिवालय भवन परिसर में मुखिया वृंदा देवी, पंचायत सचिवालय भवन सोनेहारा में मुखिया चंद्रावती देवी, पंचायत सचिवालय भवन तसरार में मुखिया मुनीता देवी ने एक एक पौधा लगाकर जल संरक्षण एवं पर्यावरण बचाने का संकल्प लिया। मौके पर मुख्य रूप से रामकिशुन ठाकुर, लाल मुनि यादव, मनीष चौधरी, चुनमुन चौधरी, ललन चौधरी आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त

बिरसा हरित ग्राम योजना का किया शुभारंभ

खरौंधी(गढ़वा)। बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत प्रखंड के सभी पंचायतों मे आम बागवानी के लिये आम का पौधा लगाकर शुभारंभ किया गया। खरौंधी प्रखंड मुख्यालय पर प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश महतो, बीपीओ डिम्पल गुप्ता, अकाउंटेंट असनन्दन राम ने संयुक्त रूप से पौधारोपण किया। मौके पर बीपीओ डिम्पल गुप्ता जेएसएलपीएस बीपीएम मोनिका कुमारी, जीपीएस उमेश कुमार, पंचायत सेवक केश्वर सिंह रोजगार सेवक आनंद गुप्ता, ऑपरेटर मुसाफिर साह, मनीष कुमार, सचेत कुमार आदि उपस्थित थे।

केतार प्रखंड में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन

केतार। प्रखंड के सभी पंचायत सचिवालय परिसर में शनिवार को पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बीडीओ मुकेश मछुआ ने पाचाडुमर और लोहरगाड़ा पंचायत सचिवालय के कैंपस में फलदार और इमारती पौधारोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुकुन्दपुर पंचायत सचिवालय प्रांगण में मुखिया मुंगा साह, रोजगार सेवक धीरेन्द्र विश्वकर्मा,परसोडीह पंचायत सचिवालय प्रांगण में मुखिया प्रतिनिधि कलेंद्र पासवान और जेई सत्यम कुमार,केतार पंचायत प्रांगण में मुखिया प्रमोद कुमार,परती कुशवानी पंचायत सचिवालय प्रांगण में मुखिया मुन्नी देवी, रोजगार सेवक दीपक जयसवाल, लोहरगाडा. पंचायत सचिवालय में मुखिया निलम देवी और रोजगार सेवक रामकुमार प्रजापति वहीं बलिगढ़ पंचायत सचिवालय में मुखिया नीलम देवी, मुखिया प्रतिनिधि मनोरंजन कुमार ने पौधारोपण किया।

पाल्हे में अधेड़ ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

चिनिया। पाल्हे गांव में शनिवार की सुबह करीब 9 बजे एक 50 वर्षीय अधेड़ ने अपने घर से पश्चिम की ओर 100 मीटर की दूरी पर झाड़ियों में स्थित सखुआ के पेड़ में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। शव की पहचान पाल्हे गांव निवासी रामवृक्ष यादव के रूप में की गई है। थाना प्रभारी राजबल्लभ कुमार ने बताया कि प्रथम दृष्टया यह आत्महत्या लग रही है फिर भी पुलिस हर पहलू की गहनता से जांच करेगी। परिजनों के अनुसार, छोटे बेटे राजेश यादव का तिलक किसी कारणवश वापस हो गया था, जिसके बाद लड़की पक्ष वालों ने घर के कई लोगों पर थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। तब से रामचंद्र तनावपूर्ण स्थिति में रहा करता था।

नवनिर्मित पुल को जोड़ने वाली एप्रोच सड़क टुटी

केतार। केतार प्रखंड के परसोडीह गांव के पंडा नदी पर 4 करोड़ 18 लाख रुपये की लागत से बने नवनिर्मित पुल निर्माण में साल की पहली बारिश ने ही भ्रष्टाचार की पोल खोल दी है। शुक्रवार की रात्रि में हुई बारिश से एप्रोच सड़क टूट गयी है, जबकि मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए बने गार्डवाल में भी दरार आ गई है। गांव के ग्रामीण दीपक कुमार, विकास गुप्ता, विकास साह, उदय मेहता सहित अन्य लोगों द्वारा आशंका जताई जा रही है की कभी भी सड़क और गार्डवाल भरभरा कर गिर सकता है। बारिश के पानी से दोनों तरफ से पुल को जोड़ने वाली एप्रोच सड़क में दरार आ गई है। गौरतलब है कि संवेदक द्वारा फरवरी माह में आनन फानन में जैसे तैसे पुल और एप्रोच सड़क का निर्माण कराया गया था ताकि परसोडीह गांव के ग्रामीणों को इस पर से नदी उस पार जाने में परेशानी नहीं हो। ग्रामीण में संवेदक के द्वारा किये गये कार्य से नाखुश हैं और इस एप्रोच सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है।

भागवत पुराण जीवन जीने की शैली : जीयर

श्री बंशीधर नगर। भागवत पुराण सिर्फ ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवनशैली को आधार देने वाला शास्त्र है। यह जीवन जीने की शैली है। यह उलझे-भटके जीवन को सुलझाने के लिए पर्याप्त है। उक्त बातें जीयर स्वामी ने पाल्हे जतपुरा में प्रवचन के दौरान कही। उन्होंने श्रीमद् भागवत महापुराण के सूतझसंवाद की चर्चा करते हुए कहा कि शास्त्र से ही जान पाते हैं कि जीवन में क्या ग्राह्य है और क्या अग्राह्य। शास्त्र को जीवन से हटा दिया जाये तो मानव और पशु के जीवन का अंतर मिट जाएगा। शास्त्र से धर्म ज्ञान होता है। धर्म-ज्ञान ही मनुष्य और पशु के बीच विनेहक गुण है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य और पशु में समान गुण हैं। पशु में धर्म ज्ञान नहीं होता. जिस मनुष्य में यह नहीं है, वह पशु के समान है।

पौधरोपण कार्यक्रम का किया शुभारंभ

नवीन मेल संवाददाता। चिनिया

प्रखंड कार्यालय में शनिवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी कालिदास मुंडा ने उपायुक्त के निर्देश के बाद वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत कई छायादार व कीमती पौधे को लगाकर इस कार्यक्रम की शुरूआत की। इस दौरान सभी ब्लॉक कर्मी अंचल कर्मी क्षेत्र के प्रतिनिधि व आम जनता मौके पर उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम के उपरांत सभी पंचायत के पंचायत सेवक रोजगार सेवक व मनरेगा कर्मी ने अपने-अपने पंचायत सचिवालय परिसर में जाकर पौधारोपण किए। इस दौरान प्रखंड के हेताड कला पंचायत, बेता पंचायत, खूरी पंचायत, बरवाडीह पंचायत, बिलैती खैर पंचायत, डोल पंचायत चिनिया पंचायत सचिवालय परिसर में पौधरोपण किया गया। इस दौरान 200 पौधे

लगाए गए। इसमें, सांगवान, शिशम, आम, निम, गम्हार इत्यादि पौधे का नाम शामिल हैं। मौके पर प्रखंड प्रमुख सुनैना देवी, 20 सूत्री अध्यक्ष मंगरू सिंह खरवार, सहायक अभियंता मनरेगा अनुज कुमार रवि, अनीकेश कुमार, नाजीर अधिराज टोपो, पंचायत सेवक रामनाथ सिंह, नवल किशोर यादव, प्रधानमंत्री आवास के प्रखंड समन्वयक पंकज विश्वकर्मा, कम्प्यूटर आपरेटर संतोष कुमार, अमित कुमार, मो.फारूक, हरिओम यादव, बेलाल अंसारी, अगस्त यादव सहित सभी ब्लॉक कर्मी, अंचल कर्मी मौजूद थे।

मेराल प्रखंड में किया गया पौधरोपण

नवीन मेल संवाददाता। मेराल

मेराल प्रखंड मुख्यालय सहित सभी 20 पंचायतों के पंचायत सचिवालय परिसर में शनिवार को पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बीडीओ प्रवेश कुमार साव ने बताया कि उपरोक्त कार्यक्रम के तहत मेराल प्रखंड में 368 योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की गई है, जिनमें बिरसा हरित ग्राम योजना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वर्मी कंपोस्ट, सूखा गड्ढा पौधरोपण शामिल है। प्रखंड मुख्यालय पर प्रमुख दीपमाला कुमारी अंचलाधिकारी निकिता बाला प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रवेश कुमार साव, बीपीओ फिरोज अंसारी सहायक अभियंता देवनाथ गौतम मुखिया रामसागर महतो इत्यादि द्वारा करीब एक दर्जन पौधे लगाए गए। इसके अतिरिक्त प्रखंड के सभी 20 पंचायत मुख्यालयों पर मुखिया, बीडीसी, वार्ड सदस्य सहित ग्रामीणों

ने पौधे लगाए। बीडीओ सहित कई अधिकारियों ने प्रखंड मुख्यालय के अलावा हासनदाग, करकोमा, मेराल आदि पंचायत सचिवालय जाकर पौधारोपण कराया। हासनदाग में मुखिया फूलवंती देवी के अध्यक्षता में पंचायत परिसर में इमारती पौधारोपण किया गया। इस मौके पर मुखिया प्रतिनिधि हरेंद्र चौधरी, वार्ड सदस्य चिंता देवी, सुनीता देवी, राजू पासवान, स्वयंसेवक विवेकानंद चौबे, पत्रकार यासीन अंसारी, मेसर्स रंजीत चौबे, कौशर अंसारी, पंचायत सचिव राजेंद्र राम, रोजगार सेवक रघुवर राम, राजेंद्र चौधरी, नागेंद्र चौधरी आदि उपस्थित रहे।

पहल पीटीजी परिवारों से मिले दिलीप तिर्की

राशन समस्याओं से अवगत हुए निदेशक

नवीन मेल संवाददाता। बड़गड़

झारखंड सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के निदेशक दिलीप तिर्की ने शुक्रवार को बूढ़ा पहाड़ का दौरा कर पीटीजी परिवारों से मिलकर उनके राशन से संबंधित समस्याओं से अवगत हुए। इस मौके पर उन्होंने प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी मदन महली को निर्देशित करते हुए कहा कि बूढ़ा पहाड़ से लगे तूरेर, तूमेरा, खपरी महुआ आदि गांव के ग्रामीणों को जल्द राशन कार्ड निर्गत कर राशन के लाभ से जोड़ना सुनिश्चित करें। पीटीजी परिवारों को राशन कार्ड से जोड़ने में जो भी समस्याएं आ रही हो उसे अविलंब

दूर किया जाए एवं इनके घरों तक राशन पहुंचे ऐसी व्यवस्था शुरू की जाए। बूढ़ा पहाड़ पहुंचने के पश्चात निदेशक श्री तिर्की ने बूढ़ा गांव के 11 पीटीजी परिवार के महिला एवं पुरुष को ग्रीन राशन कार्ड के तहत दी जाने वाली 5 केजी चावल का पैकेट प्रति लाभुक प्रदान किया। इस दौरान ग्रामीणों ने निदेशक श्री तिर्की से मांग करते हुए कहा कि गांव के काफी लोग आज भी राशन से वंचित हैं, कुछ लोगों को गांव से काफी दूर मदगढ़ी च गांव में डीलर के द्वारा राशन दिया जाता है जिन्हें राशन लेने जाने में काफी कठिनाई झेलनी पड़ती है ग्रामीणों ने अपने गांव में ही राशन दिए जाने की मांग की है। इस मौके पर सीआरपीएफ 172 बटालियन के सहायक कमांडेंट यश प्रकाश, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी मदन महली, एजीएम मोजेस किस्पोट्टा, बीस सूत्री अध्यक्ष विश्राम बाखला, झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय समिति सदस्य जयप्रकाश मिंज, फिलिप कुजूर, प्रखंड अध्यक्ष अमानत अंसारी, उपाध्यक्ष अर्जुन मिंज, संदीप गुप्ता, मिलियानुस केरकेट्टा, दयाकिशोर मिंज, संजय कुजूर, संदीप मिंज, नुरूल हक आदि सहित अन्य उपस्थित थे।

बीडीओ ने पौधा लगाकर किया बागवानी का शुभारंभ

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर

बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत प्रखंड के कुम्बा पंचायत के कोरेया ग्राम में सत्यनारायण प्रसाद यादव के खेत में आम बागवानी के लिये आम का पौधा लगाकर शुभारंभ किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी श्रवण राम, बीपीओ राजदीप कुमार, मुखिया विवेक कुमार ने संयुक्त रूप से पौधरोपण किया। राम ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिये राज्य सरकार ने बिरसा हरित ग्राम योजना की शुरुआत की है। इस योजना से किसान काफी लाभान्वित हो रहे हैं। आम बागवानी से किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा

मिलेगा। कुम्बा पंचायत के मुखिया विवेक कुमार ने कहा कि सत्यनारायण यादव के एक एकड़ रैयती भूमि पर फलदार पौधे लगाकर आम बागवानी का शुभारंभ किया गया है। मौके पर बीपीओ राजदीप कुमार, मुखिया विवेक कुमार, पंचायत सेवक उत्तम रंजन, रोजगार सेवक संजीत कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

4 शराब तस्कर पकड़े, 6 बाइक जब्त

नवीन मेल संवाददाता। चतरा

पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर जिले के हंटरगंज थाना क्षेत्र से 210 लीटर अवैध महुआ शाराब ले जाते चोरी की मोटरसाइकिल के साथ चार युवकों को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया। पुलिस को लगातार सूचना मिल रही थी कि झारखंड-बिहार सीमावर्ती क्षेत्र हंटरगंज थाना अन्तर्गत ग्राम जबडा में अवैध महुआ देशी शराब निर्मित कर चोरी के मोटरसाइकिल से बिहार ले जाया जा रहा है। सूचना के सत्यापन एवं कार्रवाई के लिए छापामारी दल का गठन किया गया और टीम ने छापामारी के क्रम में खजुरिया स्थित करैली बार आहर के पास इन्द्रेश चौधीर 21 वर्ष पिता महेन्द्र चौधरी, विनय कुमार 21 वर्ष पिता बिला चौधरी दोनो ग्राम बिगाही थाना परइया जिला गया (बिहार), बिरेन्द्र सिंह 27 वर्ष पिता स्व. नरेश सिंह व संदीप सिंह 25 वर्ष पिता बैजू सिंह दोनो जबडा थाना हंटरगंज को छह मोटरसाइकिल पर लोड करीब 210 लीटर अवैध महुआ शराब सहित पकड़ा। पूछताछ के क्रम में सभी ने अपराध स्वीकार करते हुए बताया कि जबड़ा से अवैध महुआ शराब निर्मित कर करैली बार आहर के पास लाया जाता है और वहां बिहार से आकर अवैध महुआ शराब को चोरी के मोटरसाइकिल पर लेकर बिहार जाते है। एसडीपीओ अविनाश कुमार ने प्रेस कांफ्रेंस कर बताया की छापामारी कर सभी को पकड़ा गया है, इस संदर्भ में हंटरगंज थाना कांड संख्या 129/23 दर्ज कर अवैध कारोबार करने वाले नामजद फरार चल रहे हैं के विरुद्ध लगातर छापामारी किया जा रहा है। छापामारी टीम में थाना प्रभारी सनोज कुमार चौधरी, पुअनि नितेश कुमार दूबे व सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

पथ कालीकरण कार्य में भारी अनियमितता

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा

प्रखंड के चिरो मोड़ से गरदाग तक बन रहे ग्रामीण सड़क निर्माण कार्य में भारी अनियमितता बरती गई है। सड़क निर्माण के साथ ही उखड़ने लगी है। कालीकरण कार्य में मानक के अनुसार सामाग्री का उपयोग नहीं किया गया है जिससे सड़क की गुणवत्ता पर सवाल खड़े हो गए हैं। इसके निर्माण कार्य के समाप्त हुए अभी कुछ दिन ही हुए हैं और सड़क उखड़नी शुरू हो गई है। बताते चलें कि दस पंद्रह वर्ष पहले पहली बार उक्त सड़क मार्ग को कालीकरण किया गया था जिसके जर्जर हो जाने पर पुनः ठेकेदार के द्वारा बनवाया जा रहा है। सड़क निर्माण में लोगों ने भारी घपला की शिकायत की है। कार्य की गुणवत्ता को देख वन समिति अध्यक्ष सह राजद नेता धनराज यादव ने कार्य के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए कहा की यह अच्छा नमूना है अधिकारी कर्मचारी और संवेदक के गंठजोर कर सरकारी राशि का बंदरबांट करने का। काम को देखकर ऐसा लगता है कि इसमें करोड़ो की घपले बाजी हुई है। उक्त सड़क के निर्माण कार्य में हुए घपले बाजी की खबरें बराबर अखबारों में छपती रही हैं पर उच्चाधिकारियों के द्वारा कोई कार्रवाई नहीं होने से गुणवत्तापूर्ण कार्य नहीं करने वालों का मनोबल बढ़ा रहता है। इस बाबत संवेदक व संबंधित जेई से फोन पर संपर्क कर पक्ष लेने का प्रयास किया गया पर संवेदक का फोन बंद मिला और जेई ने फोन रिसीव नहीं किया।

हादसे को आमंत्रण दे रहा हाईटेंशन तार

नवीन मेल संवाददाता। मयूरहंड(चतरा)

जिले के मयूरहंड प्रखंड मुख्यालय से इटखोरी प्रखंड मुख्यालय को जोड़ने वाली मुख्य सड़क कोनिवा नदी पर बने पुल के ऊपर से गुजर रहा हाईटेंशन तार दुर्घटना को आमंत्रण दे रहा। अगर समय रहते बिजली विभाग एवं क्रियान्वयन एजेंसी द्वारा कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई तो बहुत बड़ी घटना घट सकती है।

ज्ञात हो कि डीएमएफटी योजना के तहत कोनिवा नदी पर एक करोड दस लाख रुपये की लागत से पुल निर्माण कराई गई है, जो पहले की अपेक्षा उच्चा है। पुल कार्य पूर्ण होने के साथ आवागमन भी शुरू कर दी गई है। पुलया उच्चा होने के कारण पहले से गुजरा हाईटेंशन तार गुजरने वाले राहगीरों व वाहनो को सटने का भय बना हुआ है। फिलहाल घटना से बचने को लेकर बडी व उच्ची वाहन का परिचालन बंद हो गया है। मयूरहंड व इटखोरी से आने वाली यात्री बसों को दस किलोमीटर के जगह बीस किलोमीटर पचमों मोड होकर आवागमन करना पड़ रहा है। जिससे वाहन मालिकों के साथ यात्रीयों को आर्थिक नुकसान उठाने के साथ समय का भी नुकसान हो रहा है। इस विषय पर बिजली विभाग के कनिय अभियंता ने बताया कि एक माह पूर्व हीं प्राक्कलन तैयार कर पुलिया निर्माण क्रियान्वयन एजेंसी ग्रामीण विकास विभाग को भेजा गया है। इसके अलावा संवेदक को भी सूचित किया गया है। जैसे ही क्रियान्वयन एजेंसी व विभाग प्राकल्लित राशि जमा करेगी उसे सुधार कर लिया जाएगा।

घर से 500 मीटर दूर में फेंका शव, सिर पर चोट के निशान

दो दिन पूर्व घर से मेला देखने निकले युवक का शव बरामद

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा

थाना क्षेत्र के डुमारो पंचायत के ढ़ोटी गांव में सड़क किनारे स्थित एक पुलिया के पास शव पड़ा मिला। शव की शिनाख्त ढ़ोटी गांव निवासी गणेश गंझू पिता हिरामन गंझू के रूप में हुई। ग्रामीणों की सूचना के बाद परिजन शव के पास पंहुचे और दहाड़ मारकर रोने लगे। गणेश रांची में रहकर राजमिस्त्री का काम करता था। कुछ दिन पूर्व ही गांव आया था।गणेश गुरुवार को खलारी में मंडा पूजा देखने की बात कहकर घर से निकला था। शनिवार को उसका शव उसके घर से महज 500 मीटर की दूरी में मिला। परिजनों ने हत्या कर शव को यहां फेकने की बात कही है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार गणेश के सर के पिछले हिस्से में गंभीर चोट है संभावना जताई जा रही है की पत्थर से कूच कर उसकी हत्या की गयी। साक्ष्य छुपाने के लिए कांड वाले स्थान से लाकर शव को यहां फेंक दिया गया। मृतक गणेश के चार बच्चें है जिनमें 3 बेटियां और एक बेटा है। गणेश ने दो विवाह कर रखा था,एक गांव में रहती थी जबकि दूसरी ब्राह्मणी गांव में। गणेश के भाई सरजू की हत्या उसके घर के सामने ही दो वर्ष पूर्व गोली मारकर कर दी गयी थी। हत्या की सूचना के बाद से आसपास के इलाके में सनसनी फैल गयी है। हत्या को लेकर कई तरह की चर्चा भी हो रही थी। परिजनों की माने तो गणेश की किसी के साथ कोई दुश्मनी नही थी। सूचना मिलने के बाद चंदवा पुलिस इंस्पेक्टर बबलू कुमार सदलबल घटनास्थल पहुंचे शव को अपने कब्जे में लेकर चंदवा थाना ले आये। इंस्पेक्टर ने बताया कि परिजनों के आवेदन के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। मामला संदेहास्पद है, यदि हत्या हुई होगी तो हत्यारों को बख्शा नहीं जाएगा। सूचना मिलते ही चंदवा पूर्वी जिप सदस्य प्रतिनिधि रोहित यादव भी घटना स्थल पर पहुंचे थे।

तालाब गहरीकरण में पानी निकासी की व्यवस्था नहीं

नवीन मेल संवाददाता। मयूरहंड(चतरा)

जिले के मयूरहंड प्रखंड अंतर्गत मंझगावां पंचायत के तिलरा गांव में लघु सिचाई विभाग द्वारा लगभग पच्चीस लाख की लागत से तालाब गहरीकरण कार्य करवाया गया है। पर गहरीकरण कार्य से किसानों को लाभ मिलने वाला नहीं है। विभागीय लापरवाही के कारण तालाब से पानी निकासी को लेकर कोई समुचित सुविधा व्यवस्था नहीं की गई है।इससे तिलरा के किसान तालाब में पानी तो देख सकते हैं पर सिचाई के लिएउपयोग में नहीं ला सकते। किसानों को बगैर मोटर पाईप लगाए बीना तालाब से पानी निकाल सिचाई के लिए उपयोग नहीं कर सकते। इसके अलावा संवेदक द्वारा गहरीकरण कार्य व गार्डवाल निर्माण कार्य में घोर अनियमितता बरती गई है। जिसका विरोध पूर्व में ग्रामीणो के शिकायत पर मुखिया मंजित सिंह द्वारा की गई थी। बावजूद जिम्मेदार पदाधिकारी द्वारा इस पर कोई संज्ञान तक नहीं लिया गया। हालांकि ग्रामीणो ने इसकी शिकायत उपायुक्त अब्बू इमरान से भी की है और किसानों के हित में ध्यानाकर्षण करवाया है। ताकि लाखों रुपये की लागत से की गई तालाब गहरीकरण का लाभ किसानों को मिल सके। देखना दिलचस्प होगा कि किसानों के हितार्थ उपायुक्त कोई ठोस कदम उठाते हैं या भ्रष्टाचार के गंगोत्री में किसानों की मांग बह जाती है।

संक्षिप्त

शोध पत्रिका 'जेवियरियन क्विंटेंसेंस' का विमोचन

महुआडांड़। संत जेवियर्स महाविद्यालय महुआडांड़ के प्राचार्य फादर डॉ एम के जोस ने महाविद्यालय के शोध पत्रिका का विमोचन किया। इस मौके पर प्राचार्य ने कहा कि शिक्षण एवं शोध की उत्कृष्टता ही किसी कॉलेज की पहचान और विश्वसनीयता को बढ़ाती है। संपादकीय बोर्ड के सदस्य डॉ राजीव तिर्की ने कहा कि महाविद्यालय के शोक पत्रिका का यह पहला अंक है। यह शोध पत्रिका मल्टी डिसीप्लिनरी है तथा इसका उद्देश्य अंतर अनुशासनात्मक शोध को बढ़ावा देना है। इसमें बारह शोध पत्र प्रकाशित किए गए हैं। यह पत्रिका ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्लेटफॉर्म में उपलब्ध होगी। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रशासन के ओर से संपादकीय टीम को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर सिस्टर कैसलिन जुलियट, डॉ समीर टोप्पो, डॉ प्यारी कुजूर, डॉ मन्नू शर्मा, शेफाली प्रकाश, सुरभी सिन्हा, शशी शेखर आदि उपस्थित थे।

नव नामांकित बच्चों का किया गया स्वागत

मनिका। प्रखंड क्षेत्र स्थित दिन शनिवार को सीएमएस स्कूल ऑफ एक्सीलेंस मनिका में नव नामांकित छात्रों का स्वागत किया गया। नए सत्र का प्रवेश उसका उद्घाटन स्वास्तिक वाचन मंत्र के साथ साथ शंख ध्वनि के द्वारा किया गया। वहीं प्राचार्य जितेंद्र मिश्र ने अभिभावक व छात्र एवं छात्राओं को संबोधित करते हुए मन लगाकर पढ़ने का आवाहन किया। शिक्षक ज्ञानेंद्र मिश्र ने अभिभावको से अपने बच्चों के लिए 10 मिनट का समय घर पर देने हेतु अपील की। विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य के द्वारा सभी छात्रों के की उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

बनवारी साहू महाविद्यालय में किया पौधरोपण

लातेहार। जिला मुख्यालय के बनवारी साहू महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान वन महोत्सव सप्ताह का उदघाटन हुआ। 1 सप्ताह तक चलने वाली वन महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के सचिव अंजू गुप्ता, प्राचार्य प्रदीप कुमार तिवारी एवं कार्यक्रम पदाधिकारी नवल किशोर प्रसाद के द्वारा पौधा रोपणकर कार्यक्रम शुरू किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक उपस्थित होकर कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के व्याख्याता शत्रुघन मेहता, रेनू कुमारी, स्वयंसेवकों मैं अनु कुमारी, अंकिता कुमारी, कविता कुमारी, सपना कुमारी, निशा कुमारी समेत अन्य मौजूद रहे।

एकल विद्यालय समिति ने पौधों का किया वितरण

चतरा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शनिवार को एकल विद्यालय अभियान नगर समिति चतरा ने देवारिया पंचायत के शेषांग में सैकड़ों ग्रामीणों के बीच 1000 फलदार पौधों का वितरण किया। साथ ही समिति के अतिथियों व पदाधिकारियों के द्वारा वृक्षारोपण किया गया। अभियान के मुख्य अतिथि विकास कुमार केशरी व शहर के व्यवसाई राकेश केसरी ने संयुक्त रूप से उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि आज दूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने का एक मात्र रास्ता है अधिक से अधिक पौधारोपण करना। मौके पर गुरु दिलीप लाल, एकल भाग ग्राम स्वराज प्रमुख भरत सिंह, पंच प्रमुख मनोरमा देवी, आचार्या कलवति देवी समेत गांव के गण्यमान्य लोगों वा बच्चों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

नवनामांकितों का हुआ प्रवेश उत्सव कार्यक्रम

चतरा। जिला मुख्यालय स्थित डिस्ट्रिक्ट सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में नवनामांकित बच्चों का प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का आयोजन शनिवार को किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक डॉ. मनीष कुमार ने किया। मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधीक्षक ने बच्चों को ससमय और नियमित विद्यालय आने के साथ अनुशासन पालन की बातें कही। छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को विद्यालय के शिक्षक आशीष कुमार, पूजा कुमारी, विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष नौशाद आलम ने संबोधित किया। कार्यक्रम में शिक्षक कुमार चंदन, शिक्षक मंटू प्रजापति, अविनाश कुमार, रामेश्वर साहू, राजीव पांडेय, सीताराम कुमार, शशिबाला कुमारी, अनूपमा सिंह, अंतरा विश्वास, अनीता तिग्गा, किरण कुमारी आभा कुमारी, सुजाता सिंह सहित सभी शिक्षक उपस्थित थे।

50 किसानों के बीच मडुवा बीज का वितरण

गिद्धौर(चतरा)। गिद्धौर प्रखंड कार्यालय परिसर में संचालित सिंगल विंडो सेंटर में शनिवार को एनएफएसएम योजना के तहत 50 किसानों के बीच रागी (मडुआ) बीज का वितरण किया गया। बीज का वितरण अंचल अधिकारी जय शंकर पाठक व बीटीएस दीनदयाल प्रसाद के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। किसानों को निर्धारित समय पर मडुआ बीज लगाने की अपील की गई, ताकि फसल अच्छी तरीके से हो सके। मौके पर एटीएम शिला कुमारी आदि उपस्थित थे।

सेविकाओं को किया गया सम्मानित

गिद्धौर (चतरा)। गिद्धौर प्रखंड कार्यालय सभागार में शनिवार को मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत आयोजित समारोह में आंगनबाड़ी सेविकाओं को सम्मानित किया गया। इसमें योजना के जोनल मैनेजर मुकुल बारला के अलावा प्रवेक्षिका उषा प्रसाद, पोषण आहार विशेषज्ञय अंजुम आरा सहित अन्य उपस्थित थे।

योजनाओं को ससमय पूर्ण करने के दिए निर्देश

चतरा। समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त अबु इमरान ने पदाधिकारियों संग बैठक कर जिले में सभी क्रियान्वित योजनाओं की जानकारी ले कर निर्देश दिया। इसके साथ ही उपायुक्त ने किसान क्रेडिट कार्ड योजना, कृषि ऋण माफी योजना, फसल राहत योजना और सुखाड़ राहत योजना के अंतर्गत किये जा रहे कार्यों को ससमय सत प्रतिशत पूर्ण करने का निर्देश दिया।

नवनिर्मित छात्रावास को शीघ्र चालू करने की मांग

नवीन मेल संवाददाता। बालूमाथ

जिला परिषद उपाध्यक्ष अनीता देवी ने उपायुक्त लातेहार को पत्र लिखकर परियोजना इंदिरा गांधी मेमोरियल बालिका उच्च विद्यालय में स्थित नवनिर्मित बालिका छात्रावास को अविलंब चालू कराने का अनुरोध किया है। उन्होंने बताया है कि बालूमाथ प्रखंड अंतर्गत एकमात्र बालिका उच्च विद्यालय है जिसमें बालूमाथ, बारियातू एवं हेरहंज प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों से आकर बच्चियां शिक्षा प्राप्त करती हैं। विडंबना यह है कि छात्रावास के होते हुए भी बच्चियों को छोटे से किराए के घर में असुरक्षित माहौल में रहकर पढ़ाई करनी पड़ रही है, जबकि परियोजना इंदिरा गांधी मेमोरियल बालिका उच्च विद्यालय बालूमाथ परिसर में 5 वर्ष पूर्व में ही 100 बेड का छात्रावास भवन निर्मित हो चुका है जो कि गार्ड एवं वार्डन के अभाव में बंद है। कहा छात्रावास में दूरदराज गावों से पढ़ाई के लिए आ रही बच्चियों को सुरक्षित माहौल में शिक्षा प्राप्त करने में काफी सहूलियत होगी। उन्होंने यह भी बताया है कि इससे बालिकाओं के बीच में पढ़ाई छोड़ने (ड्रॉप आउट) की दर भी कम होगी।

मालगाड़ी की चपेट में आने से अज्ञात की मौत

चंदवा। बरकाकाना-बरवाडीह रेलखंड में स्थित टोरी जंक्शन के पश्चिमी सिग्नल के पास पोल संख्या 186/10-12 डाउन लाइन में मालगाड़ी से कटकर अज्ञात शख्स की मौत हो गई है। फिलहाल मृतक का शिनाख्त नहीं हो सकी है। घटना की सूचना के बाद बरकाकाना जीआरपी घटनास्थल पहुंच कर जांच में जुटी हुई है। जानकारी के अनुसार डाउन लाइन में खाली वैगन लेकर मालगाड़ी बरकाकाना के लिए जा रही थी। इसी दौरान युवक ट्रैक के बीचोबीच आ गया, जिससे मौके पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गई। इधर पायलट की सूचना पर टोरी आरपीएफ घटनास्थल पहुंच कर शव को कड़ी मशक्कत से लाइन से हटाकर किनारे कराया। खबर लिखे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो पाई थी।

हाथियों ने घर को किया क्षतिग्रस्त

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा

मुखिया ने दिलाया हरसंभव मदद का भरोसा

प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत जमीरा पंचायत में हाथियों के झुंड ने फिर उत्पात मचाया है। शुक्रवार रात हाथियों के झुंड ने रक्सी गांव के भुनेश्वर प्रजापति के घर को क्षतिग्रस्त करते हुए घर में रखे अनाज को चट कर गए। ग्रामीणों के अनुसार हाथियों की संख्या आठ से दस के बीच थी जो अचानक से गांव में आ धमके और भुनेश्वर प्रजापति के घर में तोड़फोड़ करने लगे। परिजन किसी प्रकार भाग कर अपनी जान बचाने में सफल रहे। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय मुखिया दुर्गावती देवी पीड़ित परिवार से मिलने पहुंची और हाथियों के द्वारा पहुंचाये गए नुकसान का जायजा लिया।

मुखिया ने कहा कि जल्द ही वन विभाग के अधिकारियों से मिलकर सरकारी प्रावधान के तहत पीड़ित परिवार को मुआवजा दिलाने का कार्य करेंगे। उन्होंने पीड़ित परिवार को हर संभव मदद का भरोसा दिलाया है। मौके पर झामुमो जिला उपाध्यक्ष सितमोहन मुंडा, युवा समाजसेवी ब्रह्मदेव प्रजापति, वन कर्मी आलोक तिगा, सुरेश उरांव, जुगेश प्रजापति, दिनेश गंझु मनीषा देवी, भुवनेश्वर प्रजापति मुख्य रूप से मौजूद थे।

पहल | केवि में ओडिसी नृत्य पर कार्यशाला का आयोजन

'ओडिसी एक शास्त्रीय नृत्य कला'

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

केंद्रीय विद्यालय, लातेहार में शनिवार को ओडिसी शास्त्रीय नृत्य पर आधारित एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला रूट्स टू रूट्स संस्था के द्वारा आयोजित किया गया था। कार्यशाला में ओडीसी नृत्य कलाकार शोभा बिष्ट ने छात्रों को ओडिसी शास्त्रीय नृत्य की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह कार्यशाला रूट टू रूट की एक पहल है। इसका मुख्य उद्देश छात्रों को देश की विभिन्न नृत्य कला व संगीत की जानकारी देना है।

भारत देश में कई प्रकार की लोक नृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य है। हर प्रांत की अपनी एक क्षेत्रीय लोक गीत व नृत्य होती है। इनमें से बहुत कई नृत्य शास्त्रीय बोल व तानों पर आधारित होते हैं। ओडिसी भी एक उन्हीं में से एक शास्त्रीय नृत्य कला है। ओडिसी भारतीय राज्य ओडिशा की एक शास्त्रीय नृत्य शैली है। यह एक प्रमुख प्राचीन भारतीय शास्त्रीय नृत्य है जो ओडिशा के हिंदू मंदिरों में उत्पन्न हुआ था। उन्होंने कहा कि रूट्स टू रूट्स संगठन सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से शांति को बढ़ावा देता है। विद्यालय के प्राचार्या देवनिसिया तिर्की ने कहा कि छात्रों को शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा अन्य गतिविधियों में भी रुचि रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गायन, वादन व नृत्य संगीत की तीन विद्यायें हैं। लोग नृत्य के माध्यम से भी अपनी भावनाओं को एक दूसरे तक पहुंचा सकते हैं। कार्यशाला में कक्षा आठ, नौ व 11 वीं के छात्राओं ने भाग लिया। कार्यशाला को ले कर छात्राओं में काफी उत्साह देखा गया। उन्होंने इसे उपयोगी बताया।

सीएचसी में केक काटकर मनाया गया डॉक्टर डे

नवीन मेल संवाददाता। बरवाडीह

बरवाडीह के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शनिवार को राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस के अवसर पर सीएचसी के सभी डॉक्टरों ने सामूहिक रूप से केक काटकर डॉक्टर डे मनाया। इस अवसर पर चिकित्सा प्रभारी डॉ आशीष रंजन ने सभी को बधाई दी। उपस्थित चिकित्सकों ने भी एक दूसरे को केक खिलाया। डॉ आशीष रंजन ने कहा कि हम सभी चिकित्सकों को इसी तरह पूरी निष्ठा एवं इमानदारी से अपने जिम्मेदारियों का निर्वहन करना है ताकि लोगों का हम सभी डॉक्टरों पर विश्वास काम बना रहे। उन्होंने कहा कि हमारी निष्ठा एवं कार्य के प्रति ईमानदारी पूर्वा पूर्वक पूर्वक निर्वहन के कारण वर्तमान परिस्थितियों में चिकित्सकों के एवं चिकित्सा कर्मियों के प्रति सम्मान बड़ा है जिसे हम सभी को कायम रखने की जरूरत है। मौके पर डॉक्टर जुबेर अहमद, डॉक्टर अनूपम एक्का, एएनएम आरती कुमारी, रजनी सुरीन, प्रीति कुमारी, सविता कुमारी, माधुरी कुमारी, समीरा एक्का, ड्रेसर राजेश चंद्र सिन्हा, बबलू, दानिश खान, कुंदन कुमार, दीपक कुमार सिंह, हसीब अंसारी समेत दर्जनों की संख्या में स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

ट्रैकिंग कैंप में हिस्सा लें, इससे आपका हुनर निखरेगा : उपायुक्त

भारत स्काउट व गाइड के 186 बच्चों के बीच प्रमाण-पत्र का वितरण

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण ने भारत स्काउट एवं गाईड के 186 बच्चों के बीच प्रमाण-पत्र का वितरण किया। यह प्रमाण-पत्र बच्चों को नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट में दिनांक 06 मई 2023 से 10 मई 2023 तक आयोजित ट्रैकिंग-सह- नेचर स्टडी कैंप में शामिल होने के लिए दिया गया। इस कैंप में लोहरदगा जिला के कुल 186 स्काउट एवं गाईड ने भाग लिया था।

मौके पर उपायुक्त ने कहा कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय में इस कैंप का आयोजन होना बहुत ही अच्छी बात है। इसका अनुभव बच्चों को आनेवाले समय में मिलेगा। नेतरहाट आवासीय विद्यालय के छात्र रहे कई आज विभिन्न सरकारी पदों पर पदासीन हैं। उपायुक्त ने कहा कि जो बच्चे ट्रैकिंग के क्षेत्र में जाना चाहते हैं वे भविष्य में दार्जिलिंग, सिक्किम, उत्तराखण्ड जैसे हिमालय की तराई वाले क्षेत्रों में आयोजित होने वाले ट्रैकिंग कैंप में हिस्सा लें, इससे आपका हुनर निखरेगा। विभिन्न हिस्सों से आनेवाले युवाओं से मिलेंगे तो उसका एक अलग अनुभव आपको मिलेगा। जिन्हें प्रमाण-पत्र दिया गया उनमें इंटर महाविद्यालय किस्को, चुन्नीलाल उच्च विद्यालय, संत अन्ना विद्यालय, नदिया हिंदू प्लस टू उच्च विद्यालय, उसुर्लाईन कॉन्वेंट उच्च विद्यालय, संत स्तानलिस उच्च विद्यालय समेत अन्य संबंधित विद्यालयों के स्काउट एवं गाईड उपस्थित थे। भारत स्काउट एवं गाईड के जिला सचिव शैलेंद्र सुमन, नदिया हिन्दू प्लस 2 नदिया स्कूल के शिक्षक अनिल कुमार, इंटर कॉलेज के शिक्षक अब्दुल्ला परवेज, संत स्तानीसिलास के प्रभारी शिक्षक, शमशाद अंसारी आदि उपस्थित थे।

धूमधाम से मनाया गया नगर परिषद का 135वां स्थापना दिवस समारोह

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

सदर प्रखंड स्थित नगर परिषद के सभागार में शनिवार को नगर परिषद, लोहरदगा का 135वाँ स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम-सह-उपलब्धि अभिभाषण का आयोजन किया गया। मौके पर कई रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई। मौके पर युवक-युवतियों द्वारा एक से बढ़कर एक एकल नृत्य एवं सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति किया गया। इसके बाद सम्मान समारोह का आयोजन कर नगर परिषद के पूर्व के जनप्रतिनिधियों, स्थानीय पत्रकारों और सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। मौके पर नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी सह प्रशासक देवेंद्र कुमार ने नगर परिषद के इतिहास से लोगों को रूबरू कराया। नगर परिषद द्वारा क्रियान्वित नागरिक सुविधाओं, योजनाओं के बारे में बताया गया। उन्होंने कहा कि भविष्य में और भी बेहतर करने की योजना नगर परिषद की है। इस अवसर पर नगर परिषद का लोगो का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का संचालन सिटी मैनेजर विजय कुमार ने किया। मौके पर पूर्व के सभी वार्डों के जनप्रतिनिधि, नगर परिषद के कर्मचारी व अधिकारी मौजूद थे।

रक्तदान शिविर -सह- स्वास्थ्य जांच का हुआ आयोजन, 42 यूनिट रक्तदान हुआ

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

'नेशनल डॉक्टर्स डे' के अवसर पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार राजेंद्र बहादुर पाल के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा एक दिवसीय रक्तदान शिविर सह स्वास्थ्य जांच का आयोजन किया गया। सिविल कोर्ट परिसर में स्थापित रक्तदान शिविर में कुल 42 यूनिट रक्त दिया गया। इसमें न्यायालय के न्यायाधीशगण, अधिवक्तागण, न्यायालय के कर्मी, पूलिस बल के जवान एवं पीएलवी शामिल रहे। रक्तदान शिविर का आयोजन सदर अस्पताल लोहरदगा के चिकित्सकों के देखरेख में किया गया। सदर अस्पताल के प्रभारी सिविल सर्जन डॉ शंकर प्रसाद, डॉक्टर सोनल सोनी बरवार एवं ब्लड बैंक टेक्निशियन उमेश प्रसाद के अतिरिक्त अन्य स्वास्थ्य सहायक उपस्थित थे। रक्तदान शिविर के दौरान लोगों ने अपने बीपी, शुगर आदि की भी जांच कराए एवं अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर चिकित्सकों से परामर्श लिए। रक्तदान करने वालों में रक्तदान को लेकर उत्साह दिखा। रक्तदान के पश्चात रक्तदान करने वालों को प्रोत्साहन के रूप सर्टिफिकेट, टोपी एवं चाबी रिंग का छल्ला दिया गया। जबकि त्वरित उर्जा स्फूर्ति के लिए एनर्जी ड्रिंक, केला व बिस्किट प्रदान किया गया। सिविल कोर्ट के निबंधक राज कल्याण ने लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित किये। मौके पर डालसा सचिव राजेश कुमार ने कहा कि लोहरदगा जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पहल पर आज का रक्तदान शिविर लगाया गया था, जिसमें आशातीत सफलता मिली। राजेंद्र उरांव नामक व्यक्ति ने इसी बीच लोहरदगा डालसा से अपनी मां रतनी देवी जो कैंसर से पीड़ित है के लिए सहयोग मांगा, जिन्हें तुरंत सदर अस्पताल के चिकित्सकों के सहयोग से 02 यूनिट खून दिया गया। नेशनल डॉक्टर्स डे पर डालसा अध्यक्ष राजेन्द्र बहादुर पाल ने उपस्थित डॉक्टरों को बधाई दी।

डालसा सचिव समेत 42 लोगो ने किया रक्तदान : रक्तदान करने वालों में डालसा सचिव राजेश कुमार, न्यायिक दंडाधिकारी सुचिता निधि तिग्गा के अतिरिक्त निखिल कुमार तिवारी, अनुप कुमार, संजीव कुमार, नीतू सिन्हा, अमित कुमार सिंह, अताउर रहमान, बिदेश्वर भगत, प्रदीप ठाकुर, कमलेश नायक, धीरज कुमार सिंह, मिथुन कुमार वर्मा, स्वेता कच्छप, रंजीत कुमार सिंह, उमेश कुमार, उर्मिला सिंह, छोटू राम, लक्ष्मण मंडल, जितेंद्र कुमार चौबे, मनीष कुमार वर्मा, राजीव कुमार, नारायण साहू, रवि कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार तमेरा, शाहिद हुसैन, पुनु देवी, मिस सीमा कुमारी, अजय कुमार, अल्फा कच्छप, प्रियांशु कुमार यादव, तुलसी राम, अजय कुमार, रविन्द्र ठाकुर, शीतू वर्मा, सरफराज अहमद, अंकित लकड़ा, हिमांशु डुंग डुंग, वोवैश आलम शामिल थे।

डीएवी स्कूल में चिकित्सक दिवस पर कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन

उपायुक्त व अन्य चिकित्सक सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

डीएवी स्कूल के बच्चों में डॉक्टरों का सम्मान करने तथा उनके समान जीवन रक्षक, परोपकारिता तथा सेवा की भावना जागृत करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर धन्यवाद कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। विद्यार्थियों ने कार्ड बनाकर सदर अस्पताल में उपस्थित चिकित्सकों को उनके उपचार हेतु कृतज्ञता प्रकट करते हुए वहां उपस्थित डॉ राजेश कुमार, डॉ. गणेश प्रसाद,डॉ.एलीन,डॉ.संजय प्रसाद, डॉ. अशोक ओड़िया, डॉ. गणेश मलिक, डॉ. ओम प्रकाश दुबे तथा उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी डॉ. वाघमारे प्रसाद कृष्ण को धन्यवाद कार्ड तथा गुलाब का फूल प्रदान किया।

इस प्रतियोगिता में कक्षा एलकेजी में अभिजीत पाठक, आकर्ष पंकज, अनुराज, कुंडू, नव्या, कन्याका, जयेश कुमार, अहान उरांव व सूर्यांश कुमार साहू ने कक्षा यूकेजी में निधि कुमारी अलीका अंबर अपूर्व राज अथर्व कृत ईशान्वी राज दर्शील भगत काव्य तारूषी प्रनीष राज, आयुष्मान पात्रा यक्षित कुमार, खुशी कुमारी व घनश्याम प्रसाद ने, कक्षा प्रथम में भावेश शर्मा, अनोखी उरांव, वैभवी कुमारी, याशिका कुमारी, प्रयांश वर्मा, बृष्टि गोस्वामी ने तथा कक्षा द्वितीय में आर्यश अवि, संस्कार साहु, मान्या राज, विषेश प्रकाश, हेमांगी नाग, शिवम कुमार वर्मा, नव्या तरुषी, आयुष शर्मा, प्रिंस कुमार, अर्चिता कुमारी, अनन्या सोनी, जिविशा बोचिवाल, रीत कुमार, आर्यन उरॉव, यश कुमार साहू व अभिराज स्पर्श ने प्रथम स्थान अर्जित किया। इस प्रतियोगिता में अश्विन पात्रो, संगीता मित्तल, रजनी प्रसाद, सोमिता दास व श्वेता कुमारी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। गौरतलब है कि गत दिवस राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। भारत में डॉ. बिधान चंद्र रॉय की जयंती के उपलक्ष्य पर प्रति वर्ष 1 जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया जाता है, जिन्होंने पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री के रूप में भी काम किया था। श्री रॉय एक बहुत ही सम्मानित डॉक्टर, परोपकारी व्यक्ति और राजनीतिज्ञ भी थे।

नेशनल डॉक्टर्स डे पर चिकित्सकों ने मरीजों के बीच फल वितरित किया

लोहरदगा। जिले में नेशनल डॉक्टर डे के अवसर पर आईएमए के जिला अध्यक्ष डॉक्टर गणेश प्रसाद के अगुवाई में सदर अस्पताल के मरीजों के बीच खाने पीने का सामग्री वितरण किया गया। चिकित्सको ने मरीजों से उनका हालचाल जाना। डॉक्टर गणेश प्रसाद ने बताया कि राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस का उद्देश्य भारतीय समाज को डॉक्टरों के महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देना और उनकी महत्वाकांक्षा को साझा करना है। इस मौके पर डॉक्टर कैप्टन वी बी प्रसाद, डॉक्टर संजय, डॉक्टर सुदामा, डॉक्टर एलिन कुजूर, डॉक्टर अंजना लकड़ा, डॉक्टर राजेश कुमार, डॉक्टर दीप्ति, डॉक्टर एजे ओराया, डॉक्टर रीता, डॉक्टर गणेश मल्लिक सहित कई लोग मौजूद थे।

महाकाल क्लब के अध्यक्ष बने कुणाल, सचिव निश्चय

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

शहर के चंद्रशेखर आजाद चौक तेतरतर में शुक्रवार को महाकाल क्लब की बैठक जय शंकर मिश्रा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिले से चलकर पैदल यात्रा पहाड़ी मंदिर में पहली सोमवारी को जल चढ़ाया जाएगा। इसको लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी है। बैठक में कमेटी पदाधिकारियों का चयन किया गया। जिसमें अध्यक्ष रितेश वर्मा उर्फ कुणाल वर्मा को बनाया गया। कार्यकारी अध्यक्ष रितेंद्र कुमार महतो, सचिव निश्चय वर्मा,सह सचिव अंकित वर्मा,उपाध्यक्ष दिवेश साहू,हर्षित खत्री,आकाश खत्री, आंनद ठाकुर, कोषाध्यक्ष शुभम वर्मा, सह कोषाध्यक्ष शुभम जायसवाल, संगठन मंत्री में आशीष गुप्ता, मीडिया प्रभारी अमित वर्मा, मुख्य संरक्षक बलराम कुमार साहू, संरक्षक : जयशंकर मिश्रा, पंकज मिश्रा, गोपाल मिश्रा, परमानंद मिश्रा शामिल हैं। वहीं संयोजक मंडली में विक्रम चौहान, अतुल मुखर्जी, पारस साहू,किशोर वर्मा,प्रीतम कुमार,सुमित घोष,रोहित तमेडा को शामिल किया गया।

बीडीओ ने की विकास योजनाओं की समीक्षा

कैरो। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी पवन कुमार महतो के द्वारा प्रखंड क्षेत्र में संचालित विकास योजना का समीक्षा बैठक किया गया। प्रखंड के 6 पंचायत में संचालित विकास योजना में कूप निर्माण,पोटो हो खेल, बिरसा हरित ग्राम योजना, वृद्धा पेंशन, डोभा निर्माण, ट्रेंच, प्रधानमंत्री आवास योजना का बिंदुवार समीक्षा करते हुए समय पर पूर्ण करते हुए अभिलेख बंद करने की बात कही गई। बीडीओ ने पोटो हो खेल मैदान में खिलाड़ियों के लिए ड्रेस, चेंजिंग रूम का कार्य समय पर पूर्ण कराने तथा शेष मैदानों में स्थल चयन करने की बात कही। हर पंचायत में एक - एक पुस्तकालय खोलने हेतु भवन का चयन करने तथा समय रहते पुस्तकालय संचालित कराने का निर्देश पंचायत सचिव को दिया।

पत्रकारों को किया गया सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

शहर के बड़ा तालाब निकट स्थित साहू धर्मशाला में शुक्रवार को नारी सम्मान ग्रुप के बैनर तले पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रुप की अध्यक्ष रचना राय की अगुवाई में अन्य सदस्यों द्वारा जिले के वरिष्ठ पत्रकारों को उपहार और मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। ग्रुप के अध्यक्ष रचना राय ने कहा कि सच को सच तक दिखाने में पत्रकारों की भूमिका अहम होती है। इसके लिए कई परेशानियों से पत्रकारों को गुजारना भी पड़ता है। इस दिशा में पत्रकारों को सम्मान देना हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता दिवस पर आयोजन करना था, परंतु अपरिहार्य कारणों के कारण कार्यक्रम को देर से किया गया है। उन्होंने कहा कि जिले के विकास की बात हो या किसे प्रतिभावान लोगों को लोगों के समक्ष लाने की बात हो, इसमें पत्रकारों की भूमिका हम होती है। इसलिए समय-समय पर ऐसे आयोजन कर पत्रकारों की ऊर्जा बढ़ाने के लिए उन्हें ग्रुप द्वारा सम्मानित किया जाता है। मौके पर पत्रकारों ने भी अपनी अपनी बातें रखी। सभी ने ग्रुप की प्रशंसा करते हुए भविष्य में नारी सम्मान की दिशा में और भी बेहतर कार्य किए जाने की आशा व्यक्त की है। मौके पर ग्रुप की अर्चना सेनगुप्ता, मुक्ता पांडे, रेनू देवी, नीलम देवी, सरिता, आकांक्षा पांडे, रिमझिम पांडे, अनु अग्रवाल, रीता गुप्ता, संगीता गुप्ता, कंचन अग्रवाल, चिंता गुप्ता, कविता गुप्ता, बसंती देवी, कमला देवी, आशा सोनी, रीना गुप्ता सहित अन्य ने अहम भूमिका निभाई है।

संक्षिप्त

ग्रामसभा में जमीन अधिग्रहण पर की गई चर्चा

सेन्हा-लोहरदगा। सेन्हा प्रखंड मुख्यालय स्थित लोहरदगा गुमला मुख्य पथ से भंडरा प्रखंड को जोड़ने एवं पथ चौड़ी करण किया जाना है। इसको लेकर झालजमीरा पंचायत एवं उगरा पंचायत सहित सेन्हा पंचायत में पथ चौड़ी करण के दौरान रैयतों का जमीन अधिग्रहण किया जाना है। इसी निमित शनिवार को पंचायत भवन सेन्हा में सेन्हा मौज के वैसे रैयत के साथ ग्राम सभा आयोजन किया गया जिसका जमीन पथ चौड़ी करण में अधिग्रहण किया जा रहा है। ग्रामसभा के दौरान ग्राम प्रधान, मुखिया धनबाज उरांव,अंचलाधिकारी विजय कुमार अंचल निरक्षक चन्द्रप्रकाश मेहता, राजस्व कर्मचारी रामा महतो के अलावे विभिन्न गांव के रैयत शामिल थे। ग्राम सभा के दौरान अंचलाधिकारी विजय कुमार रैयतों की बात को गम्भीरता पूर्वक सुनते हुए बताया कि सरकारी प्रबधन के अनुरूप कार्य किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा जमीन का मालिकाना हक पुष्टि होने पर उसे मुआवजा दिया जाएगा। इसको लेकर सभी रैयत को जमीन संबंधित दस्तावेज,आधार कार्ड एवं वंशावलि के साथ कार्यालय में जमा करने का निर्देश दिया गया। जिसपर रैयतों ने मुआवजा में वृद्धि का मांग किया साथ ही कार्य आरम्भ करने के पूर्व अधिग्रहण जमीन सीमांकन करने की मांग किया गया। मौके पर केदार महतो,सुरेश महतो,जयप्रकाश साहू,संजय साहू सहित बन्धाटोली तथा बरवाटोली एवं सेन्हा के जमीन रैयत उपस्थित थे।

बस स्टैंड में चलाया गया वाहन जांच अभियान

चैनपुर (गुमला)। पुलिस अधीक्षक गुमला के निदेर्शानुसार शनिवार को चैनपुर बस स्टैंड एवं कुरुमगढ़ मोड़ के पास अपराध नियंत्रण एवं सड़क सुरक्षा को देखते हुए चैनपुर पुलिस के द्वारा संघन वाहन जांच अभियान चलाया गया। इस क्रम में ड्राइविंग लाइसेंस, हेलमेट व वाहन के कागजात सहित गाड़ी की डिक्की आदि की जांच की गई। कई मोटरसाइकिल चालक बिना हेलमेट के गाड़ी चलाते व बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाते पकड़े गए उनके वाहन को जब्त किया गया। इधर संघन वाहन जांच से मोटरसाइकिल चालकों में हड़कंप मच गया। पुलिस टीम को देखते ही कई मोटरसाइकिल चालक दूर से ही मोटरसाइकिल घुमा कर भागते दिखे। एएसआई मदन शर्मा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक के आदेश पर अपराध नियंत्रण और सड़क सुरक्षा को देखते हुए वाहनों की संघन जांच की गई। इसके अलावे सड़क सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक करते हुए हेलमेट पहनने सीट बेल्ट लगाने सहित कई यातायात नियमों की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि समय समय पर वाहन जांच अभियान चलाया जाएगा। सभी लोग घर से मोटरसाइकिल से निकलते समय हेलमेट जरूर पहने। वाहन के आवश्यक कागजात अपने साथ रखे। मौके पर एसआई आलोक कुमार सहित जवान मौजूद थे।

युवा सद्भावना मंच अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित

लोहरदगा। युवा सद्भावना मंच अंतर्गत प्रखंडों में शनिवार को कई कार्यक्रम आयोजित किये गए। कुडू प्रखंड के कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में बुक क्लब एक्टिविटी के तहत ₹तोता राम₹ कहानी पर नाट्य मंचन किया गया। प्रखंड के टाटी पंचायत में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। किस्को प्रखंड के पाखर पंचायत में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। सदर प्रखंड के रामपुर ग्राम में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। भंडरा प्रखंड के मसमानो ग्राम में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। पेशरार प्रखंड मुख्यालय में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया।

सम्मान | कैरो की सुनेहा, अंजली व जूही ने भाग लिया था

पदक विजेताओं का भव्य स्वागत

शकील अहमद। कैरो

थाइलैंड के के बैंकॉक के पटाया में 25 जून से 28 जून तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कराटे चैम्पियनशिप में प्रखण्ड क्षेत्र से तीन खिलाड़ी सुनेहा कुमारी,अंजली कुमारी व जूही कुमारी ने भाग लिया।इन्होंने चार स्वर्ण एवं तीन रजत पदक जीत कर प्रखंड जिला प्रदेश व देश का नाम रौशन किया। जानकारी के अनुसार कराटे चैंपियनशिप में थाइलैंड, मलेशिया, बंग्लादेश, श्रीलंका ओर भूटान के खिलाड़ी शामिल हुए। वहीं देश के अलग -अलग राज्यों से 28 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। इनके जीतकर अपने घर लौटने पर प्रखण्ड परिसर में स्थानीय जनप्रतिनिधियों व गण्यमान्य लोगो के द्वारा स्वागत किया गया। इस दौरान कैरो उप प्रमुख मधुलिका रानी, अंचल पदाधिकरी कमलेश उरांव प्रखंड विकास पदाधिकरी पवन कुमार महतो, सांसद प्रतिनिधि लखन उरांव आदि के द्वारा गुलदस्ता व माला पहनाकर स्वागत किया गया। मौके पर अंचल अधिकारी कमलेश उरांव ने कहा ने कहा कि खेल के क्षेत्र में भी आज लोग अपना भविष्य बना रहे हैं। किसी भी क्षेत्र में पूरी लगन से मेहनत करने से सफलता अवश्य मिलती है। उप प्रमुख मधुलिका रानी ने कहा कि लड़कियां आज किसी से कम नही है हर क्षेत्र में लड़कियां परचम लहरा रही है। प्रखंड की तीन बेटियों ने नाम रोशन किया है। सांसद प्रतिनिधि ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार सभी के साथ सभी का विकास को लेकर चल रही है।आज लोग हरेक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन रहें हैं। खेल और खिलाड़ी को बढ़ावा देने के लिए भाजपा पार्टी ततपर रहती है। मौके पर मुखिया सुमन उरांव, शरत कुमार विद्यार्थी, राजेन्द्र महतो, सुरजमोहन साहू, बीरबल महली उपस्थित थे।

डीसी से ट्रकों का परिचालन शीघ्र शुरू कराने की मांग

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा/ गुमला

लोहरदगा गुमला ट्रक ऑनर एसोसिएशन एवं झारखंड ट्रक ऑनर एसोसिएशन, विमरला के एक प्रतिनिधिमंडल ने गुमला के उपायुक्त सुशांत गौरव से मुलाकात की एवं मांग पत्र सौंपा। एसोसिएशन ने उपायुक्त को बताया कि हम लोगों के ट्रक हिंडाल्को कंपनी के बॉक्साइट माइन्स में चलते हैं। लगभग एक महीने से बीमरला, गुरदरी माँईसो से ट्रकों का परिचालन नहीं होने के कारण और न्यू अमतीपानी (चिरोडीह) से भी लगभग ट्रकों के परिचालन बंद होने के कारण लगभग ग्यारह सौ ट्रक प्रभावित हो रहे हैं, जिसके कारण प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से लोडर, अनलोडर, चालक, सह चालक, गैरेज, मिस्त्री, टायर दुकान, होटल, पेट्रोल पंप सहित लगभग पचीस से तीस हजार लोग इससे प्रभावित हैं। इस बीच हिंडाल्को कंपनी से तीन बार एसोसिएशन की वार्ता हुई है जिसमें कंपनी का कहना है कि हमें जिला प्रशासन की ओर से जमीन नहीं मिल पा रही है। इसके कारण हम बॉक्साइट देने में असमर्थ हैं। एसोसिएशन ने उपायुक्त को यह बताया कि खड़े ट्रकों के कागजात सहित अन्य खर्च से ट्रक मालिकों की कमर टूट रही है, इसलिए यथाशीघ्र सहयोग करते हुए ट्रकों का परिचालन शुरू कराने की कृपा की जाए। इस पर उपायुक्त ने ध्यानपूर्वक बातों को सुनते हुए एसोसिएशन को आश्वस्त किया कि आपके रोजगार के प्रति हम कटिबद्ध हैं और शीघ्र ही इस मुद्दे का समाधान किया जाएगा और उचित कार्रवाई की जाएगी। प्रतिनिधि मंडल में लोहरदगा गुमला ट्रक ऑनर एसोसिएशन के अध्यक्ष कवलजीत सिंह, उपाध्यक्ष अभय सिंह, रहमत अंसारी एवं झारखंड ट्रक ऑनर एसोसिएशन विमरला के अध्यक्ष विनय राम, शंकर ऊराव आदि उपस्थित थे।

NEWS इन ब्रीफ

भारत में सभी कारों की सुरक्षा रेटिंग होनी चाहिए

नई दिल्ली। ग्राहकों के बीच अपनी पर्सनल कार को चुनने को लेकर एक सर्वे किया गया। उनकी प्राथमिकताओं को समझने के लिए यह सर्वे स्कोडा ऑटो इंडिया द्वारा कमीशन किया गया और एनआईक्यू बेसेस द्वारा पूरा किया गया। इस सर्वे में ग्राहकों का सुरक्षा फीचर की ओर गहरा झुकाव देखने को मिला और हर 10 में से 9 ग्राहकों का मानना था कि भारत में सभी कारों की सुरक्षा रेटिंग होनी चाहिए। सर्वे में सामने आया कि ग्राहकों द्वारा कार खरीदने के निर्णय को प्रभावित करने वाले दो सबसे महत्वपूर्ण पहलू क्रैश रेटिंग और एयरबैग्स की संख्या थे। सबसे लोकप्रिय विशेषताओं में से एक, फ्यूल एफिशियंसी तीसरे स्थान पर थी।

मर्जर के बाद दुनिया का चौथा सबसे बड़ा बैंक बना एचडीएफसी

जर्मनी की आबादी से ज्यादा कस्टमर

एजेंसी। नई दिल्ली

शनिवार को एचडीएफसी बैंक में हाउसिंग फाइनेंस कंपनी एचडीएफसी लिमिटेड का मर्जर प्रभावी हो गया है। बीते शुक्रवार को दोनों कंपनियों के निदेशक मंडलों ने इस मर्जर को आखिरी मंजूरी दे दी। इसी के साथ अब एक स्वतंत्र इकाई के तौर पर एचडीएफसी लिमिटेड का अस्तित्व खत्म हो गया है। एचडीएफसी अब बाजार मूल्य के हिसाब से जेपी मॉर्गन, आईसीबीसी और बैंक ऑफ अमेरिका के बाद दुनिया का चौथा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। बता दें कि यह मर्जर देश के कॉरपोरेट सेक्टर का सबसे बड़ा सौदा है। इसका आकार 40 अरब डॉलर का है। मर्जर के बाद जो नई कंपनी वजूद में आई वो देश की सबसे बड़ी फाइनेंशियल सर्विस फर्म बन गई है। इसकी कुल एसेट्स 18 लाख करोड़ रुपए से भी अधिक होगी। मर्जर के बाद एचडीएफसी बैंक का कस्टमर बेस 120 मिलियन यानी 12 करोड़ पर पहुंच गया। यह जर्मनी देश की आबादी से अधिक है। ब्रांच का नेटवर्क 8300 पर पहुंच जाएगा, जबकि कंपनी के साथ काम करने के वाले एंप्लॉयी की संख्या 1.77 लाख पर पहुंच जाएगी। नवगठित कंपनी का बीएसई के सूचकांक में वेटेज रिलायंस इंडस्ट्रीज से भी अधिक हो जाएगा। फिलहाल रिलायंस का वेटेज 10.4 प्रतिशत है लेकिन विलय के बाद एचडीएफसी बैंक का वेटेज 14 प्रतिशत के करीब हो जाएगा। इस सौदे के तहत एचडीएफसी के प्रत्येक शेयरधारक को 25 शेयरों के बदले एचडीएफसी बैंक के 42 शेयर मिलेंगे। वहीं, एचडीएफसी के शेयर की सूचीबद्धता समाप्त करने का काम 13 जुलाई से प्रभावी होगा। आपको बता दें कि एचडीएफसी बैंक ने चार अप्रैल, 2022 को देश की सबसे बड़ी आवास वित्त कंपनी एचडीएफसी का खुद में विलय करने पर सहमति जताई थी।

भारतीय अर्थव्यवस्था में 'ट्विन-बैलेंस शीट' की समस्या हुई दूर

बैंक अब मुनाफे में हैं : सीतारमण

एजेंसी। नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में बैंकों और कॉरपोरेट की 'ट्विन-बैलेंस शीट' की समस्या दूर हो गई है। उन्होंने साथ ही जोड़ा कि मोदी सरकार के ठोस प्रयासों के कारण अब 'ट्विन-बैलेंस शीट' का लाभ मिल रहा है। उन्होंने यहां पंजाब एंड सिंध बैंक के कॉरपोरेट कार्यालय का उद्घाटन करते हुए कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का मुनाफा 2022-23 में बढ़कर 1.04 लाख करोड़ रुपए हो गया, जो 2014 की तुलना में तीन गुना है। 'ट्विन-बैलेंस शीट' की समस्या का अर्थ है कि एक ही समय में बैंकों और कॉरपोरेट की वित्तीय सेहत में गिरावट होगा। इस स्थिति में कर्ज लेने वाले और देने वाले, दोनों ही तनाव में रहते हैं। दूसरी ओर अगर कर्ज लेने वाले इसे चुकाने की स्थिति में हैं, तो यह 'ट्विन-बैलेंस शीट' से लाभ मिलने की स्थिति है। सीतारमण ने कहा, "मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि सरकार की विभिन्न पहलों के चलते ट्विन-बैलेंस शीट की समस्या दूर हो गई हैं।

जीएसटी में हुई भारी कटौती

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने आम लोगों को बड़ी सौगात दी है। सरकार की पहल से अब मोबाइल फोन, टीवी, रेफ्रिजरेटर सहित कई होम अप्लायंसेस सस्ते हो जाएंगे। वित्त मंत्रालय ने ऐसे कई सामानों पर लगने वाली जीएसटी दरों में भारी कटौती कर दी है। वित्त मंत्रालय ने ऐसे सामानों की पूरी लिस्ट जारी की है। पंखे, कूलर, गीजर आदि पर लगने वाले 31.3 प्रतिशत जीएसटी को घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया है। घरेलू उपकरणों में मोबाइल फोन, एलईडी टीवी, फ्रिज समेत इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम पर लगने वाले जीएसटी में बड़ी कटौती की है। वित्त मंत्रालय के मुताबिक, मोबाइल फोन, स्मार्ट टीवी, एलईडी बल्ब, फ्रिज, वढर, वाशिंग मशीन पर लगने वाले 31.3 प्रतिशत जीएसटी को घटाकर 18 प्रतिशत तक कर दिया है। वित्त मंत्रालय ने इस बारे में ट्वीट करते हुई जानकारी शेयर की है। जीएसटी की नई दर के मुताबिक, अगर आप 27 इंच या इससे कम साइज का टीवी खरीदेंगे तो आपको अब पहले के मुकाबले कम कीमत देनी होगी।

सिरफिरे लाल टोपी ने पोक के लोगों को भारत के खिलाफ भड़काया

पेशावर। पाकिस्तान में लाल टोपी के नाम से मशहूर एक सनकी डिफेंस एनालिस्ट ने एक बार फिर पाकिस्तानियों को नसीहत देते हुए भारत के खिलाफ कार्रवाई के लिए उकसाया है। लाल टोपी का असली नाम जैद हामिद है और यह पाकिस्तान न्यूज चैनल पर बैठ कर भारत को बर्बाद करने के सपने देखता है और अपनी तकरीरों से पाकिस्तान में लोगो को जेहाद के नाम पर भारत पर हमला करने को उकसाता है। यूट्यूब इसके भारत विरोधी ब्यानों के वीडियो से भरा पड़ा है। इसका एक नया वीडियो सामने आया है जिसमें ये फिर पाक अधिकृत कश्मीर (पोक) के लोगों को भड़काता नजर आ रहा है। इस नए वीडियो में लाल टोपी पोक वासियों से कह रहा है कि अगर भारत पोक पर हमला करता है और पाक सेना को पीछे हटना पड़ता है तो उस इलाके के लोग भारतीय सेना का मुकाबला करें और गोरिल्ला जंग का आगाज करें। भारतीय सेना को रोकने के लिए सड़कें ब्लाक कर दें।

जयशंकर की फिर पाकिस्तान को दो टूक, पोक छोड़कर गलती की

आतंकवाद के रहते सामान्य संबंध असंभव

एजेंसी। वाशिंगटन

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने एक कार्यक्रम के दौरान बड़ी बेबाकी से पाक अधिकृत कश्मीर (पोक) को छोड़ने को लेकर भारत की गलती का जिक्र करते हुए कहा कि इस मुद्दे पर हमें पहले अपने रुख को साफ रखना चाहिए। केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बताया कि पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध सामान्य क्यों नहीं हो सकते हैं। विदेश मंत्री ने पाकिस्तान को एक बार फिर दो टूक जवाब देते कहा पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से आतंकवाद की नीति के रहते सामान्य संबंध होना संभव नहीं है।" जयशंकर पहले भी यूरोप समेत दुनिया के अन्य देशों के प्रति भारत का रवैये को स्पष्ट तौर पर सामने रख चुके हैं। जयशंकर का कहना है कि पहले हमें अपनी बात साफ तौर पर रखनी चाहिए।विदेश मंत्री ने कहा कि हमने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के खिलाफ सख्त रुख अपनाया था। उन्होंने कहा कि चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर हमारा रुख कड़ा था। उन्होंने कहा कि मैं कह सकता हूं कि इस देश में कई वर्ग थे जिन्होंने हम पर सवाल उठाया था। उन्होंने इस पर सार्वजनिक रूप से सवाल उठाया था। भले ही वे आज इससे इनकार करें लेकिन ये रिकॉर्ड में दर्ज है। उन्होंने कहा कि कहां हम सही हैं, कहां हमारे हित हैं इस बारे में स्पष्टता रखनी होगी। पिछले 75 सालों में ऐसी गड़बड़ी हुई है। विदेश कहा कि विदेश मंत्री ने कहा कि हमने वास्तव में उन बुनियादी गलतियों को सुधार लिया है जो 1947 में हुई थीं। विदेश मंत्री ने कहा कि वो गलती जिसे सुधारने के लिए श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जीवन भर पुरजोर लड़ाई लड़ी। विदेश मंत्री ने कहा कि सच तो यह है कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को छोड़कर हमने दो विरोधी देशों के बीच निकटता विकसित होने दी। उन्होंने कहा कि आज हमें इसकी कीमत भी चुकानी पड़ रही है।

समर्थन **ब्रिटेन ने यूएनएससी में भारत को स्थायी सीट का फिर किया समर्थन**

भारत ने यूएन में सुधार की भी मांग की

एजेंसी। लंदन

ब्रिटिश सरकार ने एकबार फिर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन करते हुए अपनी शीर्ष प्राथमिकताओं में संयुक्त राष्ट्र में सुधार की मांग दोहराई है। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की मांग करने वाले अग्रणी देशों में है और उसका कहना है कि वह इस विश्व निकाय में स्थायी सीट की अहर्ता रखता है। मौजूदा समय में यूएनएससी के अमेरिका, चीन, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन सहित पांच स्थायी सदस्य हैं जिन्हें किसी भी प्रस्ताव पर वीटो का अधिकार प्राप्त है। लंदन स्थित चैथम हाउस थिंक टैंक में बृहस्पतिवार को आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए ब्रिटिश विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने मौजूदा समय की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए बहु पक्षीय प्रणाली को पुनजीर्वित करने का आह्वान किया। उन्होंने रेखांकित किया कि विश्व अर्थव्यवस्था की धुरी यूरोप-अटलांटिक से खिसक कर हिंद-प्रशांत क्षेत्र की ओ जा रही है लेकिन बहुपक्षीय संस्थान अब तक नयी परिस्थितियों के अनुकूल बदलाव नहीं कर सके हैं। क्लेवरली ने कहा, मेरी पांच परिवर्तनकारी प्राथमिकताएं हैं। पहली संयुक्त राष्ट्र में सुधार। हम इसमें अफ्रीका का स्थायी प्रतिनिधित्व और सदस्यता का विस्तार भारत, ब्राजील, जर्मनी और जापान तक करना चाहते हैं।" उन्होंने कहा, ह्यह्य मैं जानता हूं कि यह साहसिक सुधार होगा लेकिन यह 2020 के दशक में सुरक्षा परिषद को आगे ले जाने वाला होगा जिसमें 1965 से कोई बदलाव नहीं हुआ है।" क्लेवरली ने कहा, मेरी दूसरी प्राथमिकता अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में सुधार है। यह जलवायु वित्त और निश्चित तौर पर गरीबी उन्मूलन के लिए अहम है।" मंत्री ने जी-20 की भारत की अध्यक्षता की भी प्रशंसा की जो गरीबो देशों का प्रतिनिधित्व विश्व मंच पर कर रहा है। उन्होंने कहा, मुझे यह स्पष्ट है कि बहुपक्षीय प्रणाली में सबसे गरीब और सबसे कमजोर देशों की आवाज सुनी जानी चाहिए। इसलिए हमने जी-20 के लिए अफ्रीकी संघ की सदस्यता का समर्थन किया है और इस संदर्भ में भारत के नेतृत्व का समर्थन करते हैं।" क्लेवरली ने ब्रिटेन की अन्य प्राथमिकताओं में वित्त तक आसान व त्वरित पहुंच और निवेश के अधिकतम प्रभाव को बताया। उन्होंने एक और सर्वोच्च प्राथमिकता बताई कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और क्वांटम कंप्यूटिंग में मानव जाति की समस्या समाधान क्षमताओं को बदलने की क्षमता है। क्लेवरली ने कहा मैं इस मुद्दे पर अगले महीने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की पहली बैठक की अध्यक्षता करूंगा और प्रधान मंत्री ऋषि सुनक इस शरद ऋतु में एक एआई शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेंगे।"

पाकिस्तान में ईद की नमाज के दौरान चमन जेल से 17 कैदी फरार

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत की चमन जेल से बकरीद की नमाज के दौरान 17 कैदी फरार हो गए जबकि एक कैदी की जेल के सुरक्षाकर्मियों द्वारा चलायी गयी गोली लगने से मौत हो गई। बलूचिस्तान के कारागार महानिरीक्षक मलिक शुजा कासी ने बताया कि हिंसा और गोलीबारी में कुछ पुलिस गार्ड और कैदी घायल भी हुए हैं। कासी ने बताया कि घटना बृहस्पतिवार की है जब जेल परिसर के भीतर खुले स्थान में बकरीद की नमाज पढ़ी जा रही थी। उन्होंने बताया, इन कैदियों ने जेल से भागने की योजना बनायी थी और बकरीद की नमाज के दौरान उसे अंजाम दिया। बकरीद की नमाज के लिए जब उन्हें बैरकों से बाहर निकलने दिया गया तो उन्होंने पुलिस गार्ड पर हिंसक तरीके से हमला कर दिया।" कासी ने कहा कि इसी हंगामे और हिंसा के दौरान जेल के सुरक्षाकर्मियों द्वारा चलायी गई गोली लगने से एक कैदी की मौत हो गई जबकि 17 अन्य भागने में सफल रहे।

झारखण्ड सरकार उद्योग विभाग, जिला उद्योग केन्द्र, चतरा

आम सूचना

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खादय उद्योग उन्नयन योजना (PMFME) योजना के तहत सूक्ष्म खादय आधारित उद्यमों की स्थापना/उद्यमों के उन्नयन के लिए परियोजन लागत का 35 % (अधिकतम रु0–10.00 लाख) तक का पूंजीगत अनुदान पाने का सुनहरा अवसर।

सर्व–साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खादय उद्योग उन्नयन योजना (PMFME) के तहत् सूक्ष्म खादय आधारित उद्यमों की स्थापना/उद्यमों के उन्नयन के लिए चतरा जिले के प्रत्येक प्रखण्ड मुख्यालय स्तर पर विशेष अभियान के तहत् दिनांक 15 जून 2023 से 15 जुलाई 2023 तक कैम्प का आयोजन किया गया है । उक्त कैम्प में सूक्ष्म खादय आधारित उद्यमों की स्थापना के लिए अथवा उद्यमों के उन्नयन/उत्थान के लिए Online आवेदन का पंजीकरण किया जा रहा है। इच्छुक व्यक्ति अपने–अपने प्रखण्ड मुख्यालय में पहुँचकर अपने आवेदन का Online पंजीकरण कराएं तथा योजना का लाभ उठायें ।

स्थान– प्रखण्ड कार्यालय (B.D.O Office)
समय– 11:00 बजे पूर्वाहन् से 04:00 बजे अपराहन् तक
सम्पर्क सूत्र– प्रखण्ड उद्यमी समन्वयक, मुख्यमंत्री लघु एवं कुटीर उद्यम विकास बोर्ड, चतरा

महाप्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र,
जिला उद्योग केन्द्र कार्यालय, चतरा

PR 301146 Industries (23-24)_D

जिला कृषि कार्यालय, लातेहार

अल्पकालिन निविदा सूचना

माननीय सांसद श्री सुनील कुमार सिंह, चतरा लोक सभा क्षेत्र के अनुशंसा के आलोक में सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना मद अन्तर्गत लातेहार जिला के विभिन्न चयनित स्थलों में कृषि एवं पेयजल हेतु सोलर मोटर पम्प एवं सोलर लाईट के आपूर्ति/अधि"ठापन 08 (आठ) यूनिट का कार्य किया जाना है जिसके लिये इच्छुक आपूर्तिकर्त्ता/कम्पनी से सीलबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है –

I.	निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समय	:–	12.07.2023, 02:00 बजे पूर्वाहन् तक
II.	निविदा जमा करने का स्थान	:–	अनुमण्डल–सह–जिला कृषि कार्यालय, लातेहार।
III.	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	:–	12.07.2023, 03:00 बजे पूर्वाहन् से
IV.	निविदा खोलने का स्थान	:–	उप विकास आयुक्त कार्यालय, लातेहार

Work Description :- Supply, Installation, Testing and Commissioning of 3 HP Solar Submersible Water Pumping System with Solar Light and Development of Installation sight with Proper fencing & flooring on Turnkey Basis in various places of Latehar district for providing drinking water and public irrigation facilities

- **Warranty Period:-**
  a. Complete setup-2yrs
  b. Solar Panel-20yrs by OEM warranty
  c. Solar Street Light-2 yrs
- **Test Report:-**
  a. Solar Panel-IEC 61215/61730
  b. Submersible Pump-Steel Grade 304/316
- **Certification from Bidder:-**
  a. ISO 9001/2008 or ISO 9000/2015
  b. MSME or NSIC or GEM
- **OEM Authorization:-**
  a. Bidder should submit tender specific authorization from pump OEM.

Specification of work detail in Annexure-"A"

नोटः– निविदा से संबंधित अन्य शर्त्तो को आत्मा लातेहार के वेबसाईट www.atmalatehar.in एवं जिला कृषि कार्यालय, कीनामाड़, लातेहार के सूचनापट्ट पर भी देखा जा सकता है।

ह०/–
जिला कृषि पदाधिकारी, लातेहार

PR 301190 Agriculture (23-24)_D

कार्यालय नगर परिषद्, चतरा

पुराना कचहरी के समीप, चतरा (झारखण्ड)- 825401
दुरभाष : 06541–253030, ई-मेल : npchatra@gmail.com

तृतीय आम सूचना

एतद् द्वारा सभी फुटपाथ विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद्, चतरा क्षेत्रान्तर्गत चतरा महाविद्यालय चतरा के पास निर्मित Vending Zone में स्टॉल (चबूतरा 8"x6" लॉकर सहित) का आवंटन फुटपाथ विक्रेताओं को किया जाना है। उक्त स्टॉल (चबूतरा, लॉकर सहित) प्राप्ति हेतु फुटपाथ विक्रेताओं के पास नगर परिषद्, चतरा के द्वारा निर्गत Vendor Certificate (प्रमाण पत्र) एवं ID Card का होना अनिवार्य है।

अतः उक्त के आलोक में नगर परिषद्, चतरा क्षेत्रान्तर्गत इच्छुक सभी फुटपाथ विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि उक्त निर्मित Vending Zone में स्टॉल (चबूतरा, लॉकर सहित) आरक्षित कराने हेतु अपना Vendor Certificate (प्रमाण पत्र), ID Card, आधार कार्ड की छायाप्रति एवं दो पासपोर्ट साइज फोटो आवेदन पत्र के साथ संलग्न करते हुए दिनांक– 12.07.2023 तक नगर परिषद्, चतरा कार्यालय में अपना आवेदन जमा कर सकते हैं।

नोटः– अधिक जानकारी के लिए निम्नांकित पदाधिकारी/कर्मी से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

1. श्रीमती पिंकी सिन्हा, नगर मिशन प्रबंधक, मो0– 7488475790
2. श्रीमती सोनी कुमारी, सामुदायिक संगठनकर्ता, मो0– 8210694286
3. मंजित कुमार वर्मा, कम्प्यूटर ऑपरेटर, मो0– 8102864220

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद्, चतरा

PR 301165 Urban Development (23-24)_D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
याँत्रिक प्रमंडल मंडल, लातेहार शिविर-मेदिनीनगर

अति–अल्पकालीन निविदा (द्वितीय आमंत्रण) सूचना संख्या 01/2023–24 दिनांक 01.07.2023

1. विज्ञापन दाता का नाम :– कार्यपालक अभियंता, याँत्रिक प्रमंडल मंडल, लातेहार शिविर – मेदिनीनगर।
2. विभाग का नाम :– जल संसाधन विभाग, झारखण्ड राँची।
3. परिमाण विपत्र बिक्र की का स्थान :– मुख्य अभियंता(याँत्रिक), जल संसाधन विभाग, राँची/अधीक्षण अभियंता, सिंचाई याँत्रिक अंचल, राँची एवं कार्यपालक अभियंता, याँत्रिक प्रमंडल मंडल, लातेहार, शिविर – मेदिनीनगर का कार्यालय।
4. अग्रधन की राशि :– रू0. 6600.00(रूपेय छः हजार छः सौ)
4. निविदा प्राप्त करने एवं खोलने का स्थानः– कार्यालय याँत्रिक प्रमंडल मंडल, लातेहार, शिविर – मेदिनीनगर।
5. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि :– दिनांक 03.07.2023 से 11.07.2023 तक (कार्यालय अवधि में)
6. निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समयः– 12.07.2023 के पूर्वाहन 10:00 बजे से अपराहन 3:00 बजे तक।
7. निविदा खुलने की तिथि एवं समय :– 12.07.2023 को 3:30 बजे अपराहन ।

क्रमांक	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रू0)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रू0)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5
1	नकटीनाला वीयर योजना के याँत्रिक कार्य।	3,29,480.00	750.00	04(चार) माह।

नोट : 1. निविदा की शर्त्तें प्रमंडलीय कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता हैं।
2. निविदा बिना कारण बताऐं कभी भी संशोधित या रद्द की जा सकती है।

कार्यपालक अभियंता
याँत्रिक प्रमंडल मंडल, लातेहार, शिविर–मेदिनीनगर।

PR.NO.301163 District(23-24):D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
याँत्रिक प्रमण्डल मण्डल(लातेहार) शिविर मेदिनीनगर।

अति–अल्पकालीन ई0–प्रोक्योरमेंट सूचना

अति–अल्पकालीन ई–पुनर्निविदा प्रसंग सं0–डब्लू0 आर0 डी0/एम0 डी0 मण्डल/02/2023–24 दिनांक–01/07/23

1.	कार्य का नाम	Renovation work of Right H/R gate, Left H/R gate, Canal gate and Escape gate With Embedded parts, Hoisting arrangement and Platform of **BATANE BARRAGE SCHEME.**
2	प्राक्कलित राशि (रुपये में)	28,06,342.00 (अठाईस लाख छः हजार तीन सौ बेयालीस) मात्र।
3	कार्य समाप्ति की अवधि	08(आठ) माह।
4	अग्रधन की राशि (रुपये में)	रू0 56,200.00 (छप्पन हजार दो सौ) मात्र।
5	वेबसाईट पर निविदा प्रकाशित होने की तिथी एवं समय	दिनांक 03.07.2023 (05:00 बजे अपराहन्)।
6	आनलाईन बिड प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय	दिनांक 10.07.2023 (5:00 बजे अपराहन तक)।
7	परिमाण विपत्र की राशि एवं अग्रधन की राशि को प्रमण्डलीय कार्यालय में जमा करने की तिथि एवं समय	दिनांक 11.07.2023 तक (05:00 बजे अपराहन् तक)।
8	ई–निविदा खुलने की तिथि एवं समय	दिनांक 12.07.2023 (03:00 बजे अपराहन्)।
9	निविदा आमंत्रित करने वाले का पदनाम एवं पता	कार्यपालक अभियंता, याँत्रिक प्रमण्डल मण्डल(लातेहार) शिविर मेदिनीनगर।
10	प्रोक्योरमेंट अधिकारी का सम्पर्क नम्बर	8986668073
11	ई–प्रोक्योरमेंट सेल का हेल्पलाईन नं0	0651–249232

नोट :– 1. केवल ई– निविदा ही स्वीकार किया जायेगा।
2. विशेष जानकरी के लिए http://jharkhandtenders.gov.inमें देखा जा सकता है।
3. निविदा बिना कारण बताऐं कभी भी संशोधित या रद्द की जा सकती है।

कार्यपालक अभियंता
याँत्रिक प्रमण्डल, मण्डल(लातेहार)
शिविर मेदिनीनगर।

PR 301161 (District) 23-24 (D)

एक नजर इधर भी

हिंसा की लपटों में फ्रांस

फ्रांस इस समय दुनिया की सुर्खियों में है। देशभर में लोग हिंसक और उग्र प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शन तेज होता जा रहा है। निश्चित रूप से सारे घटनाक्रम की वजह फ्रांस की पुलिस और वहां का असहिष्णु कानून है। ट्रैफिक नियमों का कथित रूप से अनुपालन न करने पर एक किशोर को जांच की आड़ में गोली मार दी गई। कारचालक 17 वर्षीय किशोर नाहेल एम पर आरोप था कि उसने वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस पर रिवाल्वर तान दिया था। निश्चित रूप से इसकी जितनी आलोचना की जाय वह कम है। दुनिया भर में मानवीय और उसके अधिकार सर्वोपरि होने चाहिए। मीडिया की खबरों और उसके विश्लेषण से पता चलता है कि पुलिस अपनी नाकामी छिपाने के लिए निर्दोष युवक पर इस तरह का आरोप मढ़ रही है। नाहेल ने अगर ट्रैफिक नियम को तोड़ा था तो उसे दूसरे तरीके से भी सजा दी जा सकती थी। यह जुर्म इतना बड़ा नहीं था कि उसे गोली मार दी जाय। निश्चित रूप से पुलिस ने फ्रांस के लचीले कानून का दुरुपयोग किया है। गोली मारने की यह पहली घटना नहीं है। इसके पूर्व भी कई लोग शिकार हुए हैं। मीडिया मे यह तथ्य भी सामने आये हैं कि पुलिस नस्लीय मानसिकता में भी बेगुनाहों को निशाना बनाती है। फ्रांस एक संप्रभु और लोकतांत्रिक देश है। उसे ऐसे विवादित और कठोर कानून से बचना चाहिए, क्योंकि कानूनी आड़ में इसका दुरुपयोग किया जाता है। सरकार ट्रैफिक नियमों को इतना कठोर बनाकर लोकतांत्रिक अधिकारों का दुरुपयोग कर रही है। अगर पुलिस के आरोप को ही सच मान लिया जाय कि किशोर नाहेल ने ट्रैफिक नियमों का दुरुपयोग किया तो पुलिस उसे सबक सिखाने के लिए दूसरे संवैधानिक अधिकार का भी प्रयोग कर सकती थी। किसी की हत्या इसका समाधान नहीं है। देश के ट्रैफिक नियमों के मुताबिक उसकी गिरफ्तारी हो सकती थी। किशोर अधिनियम के तहत उसे जेल भी भेजा जा सकता था। उसे समझाने की कोशिश भी पुलिस कर सकती थी। वाहन चलाने पर प्रतिबंधित किया जा सकता था। लेकिन सिर्फ क्या जान लेना ही किसी कानून का संरक्षण है। भारत जैसे देश में अगर ऐसे कानून बना दिये जाएं तो यहां पांच मिनट भी नहीं टिक सकते हैं, क्योंकि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र में आम नागरिकों की सुरक्षा कैसे की जाती है, यह भारत से बेहतर कोई नहीं जानता। यहां हर नागरिक को संवैधानिक अधिकारों के इतर जाकर उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संरक्षण किया जाता है। सुसंगत कानून होने के बावजूद भी लोगों को दंड नहीं दिये जाते। यहां की पुलिस यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों को गांधीगीरी के जरिये गुलाब का फूल भेंट करती है, क्योंकि सिर्फ कानून से देश को नहीं चलाया जा सकता है। भारत में बाल एवं किशोर हितों का पूरा ख्याल किया जाता है। पुलिस के खिलाफ पेरिस के बाहरी हिस्सों में हिंसा भड़क गई है। सरकार स्थिति पर नियंत्रित नहीं कर पा रही है। सरकार और पुलिस में शीतयुद्ध की स्थित है। लोग सड़क पर उतर कर उग्र और हिंसक प्रदर्शन कर रहे हैं। वाहनों को आग के हवाले किया जा रहा है। किशोर की हत्या को लेकर लोगों में बेहद आक्रोश है। मानवाधिकार संगठन इस घटना की कड़ी निंदा कर रहे हैं। हालात को नियंत्रित करना सरकार के लिए मुश्किल हो रहा है। देश के कई हिस्सों में कर्फ्यू लगा दिया गया है। नाहेल की हत्या करने वाले आरोपित पुलिसकर्मी को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस घटना को फ्रांस के राष्ट्रपति मैंक्रो ने गंभीरता से लिया है। उन्होंने पुलिस की तीखी आलोचना की है। वैसे उनके बयान को लेकर पुलिस संगठनों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है और कहा है कि इससे पुलिस का मनोबल गिरेगा। लेकिन देश में बढ़ती हिंसा को रोकने की पहली प्राथमिकता सरकार की है। आक्रोशित लोग प्रदर्शन के दौरान सरकारी इमारतों, पुलिस स्टेशन, स्कूलों और दूसरे संस्थानों को निशाना बना रहे हैं।

■ प्रभुनाथ शुक्ल

चीन को बेचैन कर गयी अमेरिका की यात्रा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की राजकीय यात्रा अनेक दृष्टियों से नई उम्मीदों को पंख लगाने के साथ भारत को शक्तिशाली बनाने वाली साबित होगी। अमेरिका की यात्रा के दौरान हुए विभिन्न समझौते भारत की तकनीकी एवं सामरिक जरूरतों को पूरा करने में अहम कदम साबित होंगे। व्यापार व उद्योग के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमरीका के साथ द्विपक्षीय सहयोग ने नई उम्मीदें जगाई हैं। इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने जो प्रयास किये वे मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भरता के प्रयास, नये भारत-सशक्त भारत एवं सतत विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे। भारत की अमेरीका यात्रा से चीन की नींद उड़ गयी है वहीं पाकिस्तान भी बौखलाया है। भारत के दोनों दुश्मन राष्ट्रों की तिलमिलाहट से जाहिर हो रहा है कि भारत अब एक बड़ी ताकत बन रहा है। चीन बेचैन है भारत के प्रधानमंत्री की इस ऐतिहासिक, निर्णायक एवं श्रेयस्कर अमेरीका यात्रा से। भारत एवं अमेरीका के बीच हुए समझौते यह भी दर्शाते हैं कि आज भारत को जितनी आवश्यकता अमेरीका की है, उससे कहीं अधिक उसे भारत की है। इसका एक कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरीका का कम होता प्रभाव और भारत का बढ़ता हुआ कद है। अमेरीका यह जान रहा है कि चीन के तानाशाही भरे रवैये से निपटने के लिए भारत का साथ आवश्यक है। वास्तव में इस आवश्यकता ने भी अमेरीका में भारत की अहमियत बढ़ाने का काम किया है। यह अहमियत यही बता रही है कि अब भारत का समय आ गया है। भारत एवं अमेरीका की दोस्ती प्रधानमंत्री की यात्रा से प्रगाढ़ हुई है, जो दोनों देशों के लिये शुभता का सूचक है। मोदी की इस यात्रा से भारत-अमेरिका संबंधों की एक नई इबारत लिखी गयी है और नये संकल्पों की गौरवशाली यात्रा शुरू हो गई है। दुनिया के दो महान लोकतंत्र देश दुनिया को बेहतर बनाने के लिए अपने बंधन को मजबूत कर रहे हैं। भारत लोकतंत्र की जननी है और अमेरिका आधुनिक लोकतंत्र का चैंपियन है। दुनिया में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को मजबूती देने में दोनों के साझा प्रयत्नों के सुपरिणाम सामने आयेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वदेश लौटकर भारत-अमेरिका संबंधों के बारे में कहा, 'हम साथ मिलकर सिर्फ नीतियां और समझौते ही नहीं बना रहे हैं। हम जीवन, सपनों और नियति को भी आकार दे रहे हैं।' वास्तव में आज अमेरीका ही नहीं, विश्व का हर प्रमुख देश भारत को अपने साथ रखना आवश्यक समझ रहा है। कहना न होगा कि वैश्विक मंच पर योग का विषय हो, या अहिंसा का या फिर आतंकवाद से निपटने का, जलवायु परिवर्तन का मसला हो या फिर जी-20 देशों की अध्यक्षता की बात, भारत, दुनिया को नई दिशा दे रहा है, नई उम्मीदें जगा रहा है। स्वयं, समाज एवं राष्ट्र के विकास से आगे बढ़ने की सोच देने वाला भारत अब दुनिया का विकास चाहता है, यही वसुधैव कुटुम्बकम का मंत्र आज दुनिया को भा रहा है और इसी कारण हर कोई भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है, चाहे वो शक्तिशाली राष्ट्र ही क्यों न हो। निगाहें केवल चीन और पाकिस्तान की ही नहीं, बल्कि भारतीय प्रधानमंत्री के अमेरीकी दौरे पर दुनिया भर के देशों की थीं। यह अच्छा हुआ कि भारतीय प्रधानमंत्री और अमेरीकी राष्ट्रपति के बीच शिखर वार्ता के बाद जो संयुक्त बयान जारी हुआ, उसमें पाकिस्तान के साथ चीन पर भी निशाना साधा गया। ऐसा करना इसलिए आवश्यक था, क्योंकि पाकिस्तान जहां आतंकवाद को सहयोग-समर्थन और संरक्षण देने से बाज नहीं आ रहा है, वहीं चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते एशिया ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा बन गया है। आज दुनिया आतंकमुक्ति संसार की संरचना चाहता है। अमेरीका की राजकीय यात्रा के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री का व्हाइट हाउस में जैसा भव्य स्वागत हुआ और अमेरिकी संसद में उनके संबोधन को जिस तरह सराहा गया, उससे यदि कुछ स्पष्ट हो रहा है तो यही कि दोनों देशों के संबंध एक नये युग में पहुंच रहे हैं। वैसे तो दोनों देशों के संबंध एक लंबे समय से प्रगाढ़ हो रहे हैं, लेकिन इसके पहले किसी भारतीय प्रधानमंत्री को अमेरीका में शायद ही इतनी महत्ता मिली हो। इस महत्ता को रेखांकित कर रहे हैं रक्षा, तकनीक, उद्योग आदि क्षेत्र में हुए वे अनेक महत्वपूर्ण समझौते, जो भारत और अमेरीका के बीच हुए। इनमें कुछ समझौते ऐसे हैं, जिनके लिए भारत दशकों से प्रयासरत था, जैसे कि जीई एयरोस्पेस और हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड के बीच युद्धक विमानों के इंजन एफ 414 को मिलकर भारत में बनाने का समझौता। इस तरह के समझौते दोनों देशों की निकटता को भी रेखांकित कर रहे हैं और एक-दूसरे के प्रति भरोसे को भी। अमेरीका का भारत पर बढ़ता भरोसा इस बात का परिचायक है कि भारत विश्व की एक महाबड़ी शक्ति बनने की राह पर अग्रसर है और भारत के बिना चीन को करारा जबाव देना नामुमकिन है। इन नये बनते परिदृश्यों में चीनी विश्लेषकों का मानना है कि अमरीका की कोशिश भारत को चीन से मुकाबले के लिए तैयार करने की है, जबकि दूसरी ओर वह चीन की आर्थिक प्रगति में अवरूद्ध करना चाहता है। कुछ विश्लेषकों के मुताबिक, 'भारत के साथ आर्थिक व व्यापार सहयोग मजबूत करने के अमरीका के पुरजोर प्रयास का मुख्य उद्देश्य चीन का आर्थिक विकास धीमा करना है।' इन दावों से इतर एक तथ्य यह है कि भारत के लिए अमरीका के साथ व्यापार करना फायदे का सौदा रहा है। भारत को अमरीका के साथ व्यापार करके अधिक आय होती है, जबकि चीन के साथ व्यापार के कारण बीते कुछ वर्षों से देश को सालाना औसतन 60 अरब डॉलर का नुकसान हो रहा था।

भारत व अमेरीका की दोस्ती प्रधानमंत्री की यात्रा से प्रगाढ़ हुई है, जो दोनों देशों के लिये शुभता का सूचक है। मोदी की इस यात्रा से भारत-अमेरिका संबंधों की एक नई इबारत लिखी गयी है और नये संकल्पों की गौरवशाली यात्रा शुरू हो गई है। दुनिया के दो महान लोकतंत्र देश दुनिया को बेहतर बनाने के लिए अपने बंधन को मजबूत कर रहे हैं।

इन दिनों

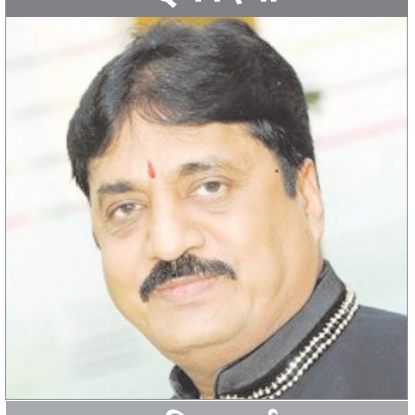

ललित गर्ग

भारत का बदलता परिदृश्य

इतिहास साक्षी है कि किसी राष्ट्र का गौरव तभी जाग्रत रहता है जब वो अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को अगली पीढ़ी को भी सिखाता है, संस्कारित करता है, उन्हें इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वो अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है। फिर भारत के पास तो गर्व करने के लिए अथाह भंडार है, समृद्ध इतिहास है, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत है। जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहां करोड़ों-करोड़ लोगों ने सदियों तक आजादी की एक सुबह का इंतजार किया, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आजादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है, और आजाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। हम भारत में हो रहे बड़े बदलावों और विकास कार्यों की दहलीज पर खड़े हैं। यह हर भारतीय के लिए उम्मीदों भरा दौर है, एक ऐसा दौर है जिसमें वे बेहतर जिंदगी और बेहतर देश का ख्वाब देख सकते हैं। लिहाजा, यही वह वक्त है, जब हम भविष्य के भारत का ताना-बाना बुनें। हालाँकि जब हम सावधानीपूर्वक इस ओर देखें कि देश क्या बन सकता है तो हमें इस तथ्यात्मक तस्वीर को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए कि भारत का एक गौरवशाली अतीत भी है, न सिर्फ आर्थिक समृद्धि के पैमाने पर बल्कि नैतिक मूल्यों के पैमाने पर भी। हमें भारतीय होने पर गर्व है और उन मूल्यों पर भी, जो भारत के साथ जुड़े हैं। एक पुरानी कहावत है कि भारत एक नया देश है, लेकिन एक प्राचीन सभ्यता है और इस सभ्यता ने अपने पूरे इतिहास में जबरदस्त परिवर्तन देखा है। प्राचीन समय में दुनिया का एजुकेशन हब होने से लेकर आज दुनिया का आईटी हब बनने तक, भारतीय परिदृश्य ने एक लंबा सफर तय किया है। 15 अगस्त 1947 को अपने संदर्भ के ढांचे के रूप में लेते हुए, हम पाते हैं कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था और मानव विकास जैसे कई क्षेत्र हैं जहां भारत ने उल्लेखनीय प्रगति दिखाई है। हालाँकि, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे कुछ क्षेत्रों पर अभी भी ध्यान दिया जाता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का परिदृश्य : जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा, तो वे अपने पीछे एक टूटा हुआ, जरूरतमंद, अविकसित और आर्थिक रूप से अस्थिर देश छोड़ गये। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने अपनी पहली पंचवर्षीय योजना में वैज्ञानिक अनुसंधान को प्राथमिकता दी। स्वतंत्रता के केवल तीन वर्षों के बाद, 1950 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना हुई। इन संस्थानों ने विदेशी संस्थानों की सहायता से भारत में अनुसंधान को बढ़ावा दिया। 1975 में अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट लॉन्च करने से लेकर मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने वाला पहला देश होने तक, भारत ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की बदौलत अंतरिक्ष अनुसंधान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मविश्वास से भरे कदम उठाये हैं। हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे देशों के बराबर खड़ा है, वही जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी जाता है जहां भारत पूरी दुनिया के लिए टीके का उत्पादन कर रहा है। वढक की सफलता दुनिया के लिए एक केस स्टडी भी है जिसमें 9.36 बिलियन रुपये का लेनदेन हुआ है। केवल 2022 की पहली तिमाही में 10.2 ट्रिलियन।

आर्थिक परिदृश्य : भारत को अपनी स्वतंत्रता के बाद कई मुद्दों का सामना करना पड़ा, जिनमें अशिक्षा, भ्रष्टाचार, गरीबी, लैंगिक भेदभाव, अस्पृश्यता, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता शामिल हैं। कई मुद्दों ने भारत के आर्थिक विकास के लिए प्रमुख बाधाओं के रूप में काम किया है। 1947 में जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की, तो इसका सकल घरेलू उत्पाद मात्र 2.7 लाख करोड़ था, जो विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का 3% था। 1965 में भारत में हरित क्रांति की शुरूआत हरित क्रांति के जनक एम. एस. स्वामीनाथन ने की थी। हरित क्रांति के दौरान, उच्च उपज वाले गेहूं और चावल के प्रकारों के साथ लगाये गये फसल क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। 1978-1979 तक, हरित क्रांति के कारण 131 मिलियन टन अनाज का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ। भारत को तब दुनिया के शीर्ष कृषि उत्पादकों में से एक के रूप में मान्यता दी गई थी। कारखानों और पनबिजली संयंत्रों जैसी संबद्ध सुविधाओं के निर्माण से कृषि श्रमिकों के अलावा औद्योगिक श्रमिकों के लिए भी बड़ी संख्या में रोजगार सृजित हुए। आधारभूत संरचना आज का भारत आजादी के समय के भारत से अलग है। आजादी के 75 वर्षों में, भारतीय बुनियादी ढांचे में भारी सुधार हुआ है। भारतीय सड़क नेटवर्क की कुल लंबाई 1951 में 0.399 मिलियन किमी से बढ़कर 2015 तक 4.70 मिलियन किमी हो गई है, जो इसे दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क बनाती है। इसके अतिरिक्त, भारत की राष्ट्रीय राजमार्ग प्रणाली अब 2021 में 24,000 किमी (1947-1969) से 1,37,625 किलोमीटर तक फैली हुई है।

शिक्षा और स्वास्थ्य का परिदृश्य : हालांकि भारत ने साक्षरता दर के मामले में उल्लेखनीय प्रगति दिखाई है, लेकिन उच्च शिक्षा की गुणवत्ता अभी भी प्रमुख चिंता का कारण है। शीर्ष 100 क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय या संस्थान नहीं है। दुनिया में सबसे बड़ी युवा आबादी के साथ, भारत चमत्कार हासिल कर सकता है यदि इसके युवा उचित कौशल और शिक्षा से लैस हों। स्वास्थ्य, क्षेत्र भी चिंताजनक है।

■ अभिनंदन पांडे

है न विचित्र बात !

नायक व खलनायक का संतुलित राज

पंजाबी परिवार में जन्मे राज बब्बर ने सन 1975 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय का डिप्लोमा प्राप्त किया। वे यहां से निकले पहले अभिनेता थे जो स्टार बने। घुंघराले बाल, बेहतरीन आवाज और सबसे खास सौम्य, शालीन, विनम्र। एनएसडी से निकलने वालों में 1962 बैच के ओम शिवपुरी और सुधा शिवपुरी थे, जिन्होंने सबसे पहले फिल्मी दुनिया में आने का इरादा बनाया। वे दिल्ली से मुंबई गये और सफल भी रहे। उसके बाद नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी, जसपाल ने वाया फिल्म ऐंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट (पुणे) से मुंबई का रुख किया। राज बब्बर के बाद तो एनएसडी से फिल्मों में आने का सिलसिला तेजी से चल निकला। सीमा विश्वास, पंकज कपूर, यशपाल शर्मा, मनोज तिवारी, आशुतोष राणा, इरफान, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, राजपाल यादव, पंकज त्रिपाठी जैसे कई नाम इसमें शामिल हैं। राज बब्बर तुरंत ही काम के लिए बंबई (मुंबई) नहीं भागे थे। उन्होंने दिल्ली में ही रहकर पूरी शिद्दत से थियेटर किया । सन 1978 में 'यूनाइटेड प्रोड्यूसर और माधुरी-फिल्म फेयर टैलेंट कांटेस्ट' का आयोजन बंबई में हुआ। इस प्रतियोगिता में पांच लड़के व पांच लड़कियों का चुनाव बीआर चोपड़ा, देवेंद्र गोयल, शक्ति सामंत, मोहन सहगल जैसे नामचीन निर्माता-निर्देशकों की ज्यूरी ने किया था। जिन पांच लड़कों का चयन हुआ था वे थे- दीपक पाराशर, राज बब्बर, सुरेंद्र पाल, पंकज धीर और स्वर्गीय इंदर ठाकुर (अभिनेता हीरालाल के सुपुत्र) व लड़कियों में सुरिंदर कौर, स्वरूप संपत (परेश रावल की पत्नी), रेखा सहाय (सुबोधकांत सहाय की पत्नी), नमिता चंद्रा व अन्य। इन सभी का मोहन स्टूडियो (मुंबई) में ऑडिशन हुआ तब तक दीपक पराशर 'मिस्टर इंडिया' भी बन चुके थे। वह दिखते भी सबसे अलग थे। अभिनेता सुरेंद्र पाल गाजियाबाद से ऑडीशन देने आये थे। तब उसे देख राज बब्बर ने उनसे कहा था- 'इसी को फिल्में मिलेंगी। तब हम दोनों इनके सेक्रेट्री बन जायेंगे।' पर तब यूनाइटेड प्रोड्यूसर्स के किसी निर्माता, निर्देशक ने किसी भी चुने गये लड़के-लड़कियों को लांच नहीं किया। तब भी उनका अभिनय स्टेज और फिल्मों के दो पलड़ों के बीच सामंजस्य स्थापित करता रहा। दोनों ही क्षेत्रों में उन्होंने अपने अभिनय की धाक जमायी। लंबे संघर्ष के बाद उन्होंने 1977 में फिल्म 'किस्सा कुर्सी का' से अपना अभिनय करियर शुरू किया लेकिन, फिल्म कमाल नहीं दिखा सकी। इसके बाद 'इंसाफ का तराजू' में बीआर चोपड़ा ने दो नये अभिनेताओं को परदे पर उतारा। फिल्म के मुख्य नायक दीपक पाराशर और दूसरे थे राज बब्बर। लेकिन जब फिल्म बनी और प्रदर्शित हुई तो पलड़ा राज बब्बर का ही भारी रहा। देखते ही देखते फिल्मी दुनिया पर उनका राज चलने लगा। इसके बाद फिर उनका करियर दो पलड़ों के बीच झूलता रहा यानी नायक और खलनायक। पहली ही फिल्म में खलनायक बनने के बाद नायक बनने की कल्पना पहले विनोद खन्ना और शत्रुघ्न सिन्हा साकार कर चुके थे, लेकिन 'इंसाफ का तराजू' में जिस तरह का किरदार राज बब्बर ने निभाया, उस कारण वे महिला दर्शकों की नजरों से उतर चुके थे। 'इंसाफ का तराजू' में राज बब्बर का अभिनय इतना जीवंत था कि फिल्म की स्क्रीनिंग के समय शामिल उनकी मां घबरा-सी गई थीं। जब वे फिल्म देखकर घर जा रहे थे तो उनकी मां रोने लगीं और बोली, 'बेटा हम कम खा लेंगे, पर तू ऐसा काम मत कर।' लेकिन यह भूमिका उनके लिए जैकपॉट साबित हुई। आगे जाकर राज बब्बर ने 'निकाह', 'आज की आवाज', 'आप तो ऐसे न थे', अगर तुम न होते, 'कलयुग', 'हम पांच', आंखें, 'दाग', जिद्दी' सहित बॉलीवुड की कई शानदार फिल्मों में काम किया और निगेटिव और पॉजिटिव किरदारों को बखूबी संतुलित किया।

■ अजय कुमार शर्मा

शेयर निवेश-मेडिकल क्षेत्र के शिखर पर भी जाता यूपी

बीते दिनों उत्तर प्रदेश (यूपी) को लेकर दो बड़ी खबरें आईं, जिसने देश के सबसे बड़े सूबे की एक अलग ही छवि दुनिया के समक्ष पेश की। पहली खबर आई कि बीते अप्रैल महीने में शेयर बाजार से जुड़ने वाले नये निवेशकों की संख्या के मामले में यूपी ने देश की आर्थिक राजधानी वाले राज्य महाराष्ट्र तक को पीछे छोड़ दिया है। बॉम्बे स्टाक एक्सचेंज (बीएसई) के मुताबिक, नये डीमैट खाते खोलने में यूपी ने महाराष्ट्र के अलावा भी सभी अन्य राज्यों को पीछे छोड़ दिया है। इस तरह से यू.पी. की एक साल में 37% की बढ़त हुई है। इसी अवधि में महाराष्ट्र की ग्रोथ 20%, गुजरात की 15%, राजस्थान की 26% और कर्नाटक की 20% ही रही है। शेयर बाजार में यूपी की ठसक लगातार ही बढ़ रही है। शेयर बाजार के गढ़ महाराष्ट्र को ही यूपी वालों ने सीधी टक्कर दे दी है। बीएसई के मुताबिक एक साल में यूपी से 35 लाख नये निवेशकों ने शेयर बाजार में प्रवेश किया है। हालांकि एक समय था जब महाराष्ट्र और कर्नाटक दोनों राज्यों को शेयर बाजार की जान माना जाता था। शेयर बाजार में यूपी के बढ़ते कदम के लिए राज्य की जनता की आय बढ़ने, महिलाओं का बाजार में रुझान और जोखिम की क्षमता उठाने की प्रकृति प्रमुख वजहें हैं। शेयर बाजार के कुल कारोबार में सालाना 1.28 लाख करोड़ का धंधा मात्र यूपी से हो रहा है। इसमें भी 30% की वृद्धि हुई है। इस बीच, अगर हम बीते कुछ सालों पर नजर दौड़ाएं तो यूपी से 2021-22 में 92 लाख निवेशक थे। यह आंकड़ा 2022-23 में हो गया 1.27 करोड़। दूसरी खबर नीट-यूजी से जुड़ी है। डॉक्टरी में दाखिले के लिए आयोजित इस परीक्षा में यूपी के अभ्यार्थियों ने सर्वाधिक बाजी मारी। इस वर्ष के परिणाम में सबसे ज्यादा संख्या यूपी के विद्यार्थियों की रही। महाराष्ट्र और राजस्थान दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इन दोनों खबरों ने बदलते हुए उत्तर प्रदेश में हो रहे विकास की प्रत्यक्ष तस्वीर हमारे सामने रख दी है। इस बीच नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के नीट-यूजी रिजल्ट में इस साल सबसे अधिक यूपी के स्टूडेंट पास हुए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र और राजस्थान का स्थान है। लगभग 20.38 लाख में से कुल 11.45 लाख परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। बात संख्या की करें तो यूपी की इस सफलता का वजन और चमक दोनों ज्यादा महूसस होगा। यूपी में सबसे अधिक 1.39 लाख, महाराष्ट्र में 1.31 लाख और राजस्थान में एक लाख से अधिक परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र देश के दो सबसे अधिक आबादी वाले राज्य हैं, जबकि राजस्थान भी जनसंख्या के मामले में शीर्ष दस राज्यों में आता है। शीर्ष पांच में केरल और कर्नाटक दो अन्य राज्य हैं, जिनमें से प्रत्येक ने 75,000 से अधिक अभ्यर्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। नीट-यूजी देश की बड़ी और प्रतिष्ठित प्रतियोगिता परीक्षा है। यह परीक्षा भारत के बाहर 14 शहरों झ आबूधाबी, बैंकॉक, कोलंबो, दोहा, काठमांडू, कुआलालंपुर, लागोस, मनामा, मस्कट, रियाद, शारजाह, सिंगापुर, दुबई और कुवैत सिटी में आयोजित की गई थी। गौरतलब है कि नीट-यूजी के अंकों के आधार पर चिकित्सा पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है। परीक्षा 13 भाषाओं असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओडिया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु और उर्दू में आयोजित की गई थी। बेशक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यानथ के नेतृत्व वाली सरकार के लिए भी यह बड़ी उपलब्धि है। दिलचस्प है कि कुछ वर्ष पहले तक बीमारू राज्यों में शामिल यूपी आज एक अग्रणी और स्मार्ट नीति के सफल कार्यान्वयन के साथ तेजी से विकास कर रहा है। देश के जीडीपी में राज्य आठ प्रतिशत से अधिक का योगदान दे रहा है। यूपी सरकार ने आगामी पांच वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में एक ट्रिलियन डॉलर के योगदान का लक्ष्य निर्धारित किया है। यानी, भारत के विकास की इस रेलगाड़ी के लिए देश का सबसे बड़ा सूबा उत्तर प्रदेश ग्रोथ इंजन बनकर उभरा है। जिस प्रदेश के युवा अपने प्रोफेशनल शिक्षा और भविष्य को लेकर इतने जागरूक हों, वहां कारोबारी दशा भी साथ के साथ बेहतर होगी, ऐसा मानकर चलने की बात हवाई नहीं, बल्कि इसके कई तार्किक आधार हैं। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 के माध्यम से करीब 35 लाख करोड़ के इन्वेस्टमेट प्रस्ताव पाने वाला यूपी अपने एक ट्रिलियन इकॉनमी बनने के पथ पर तेजी से बढ़ रहा है। उसके इस संकल्प में प्रदेश के युवा भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। तभी तो उसने शेयर बाजार में नए निवेशकों की संख्या के मामले में देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले राज्य महाराष्ट्र और गुजरात को पीछे छोड़ दिया है। करीब 20 करोड़ जनसंख्या वाले यूपी में अबतक तो शेयर बाजार में कारोबार करने की सीमित संस्कृति ही रही है। इतना ही नहीं साल 2018-19 में वैश्विक महामारी से पहले महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था 25.7 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान लगाया गया था। इसकी तुलना में यूपी की अर्थव्यवस्था का अनुमान 15.8 लाख करोड़ रुपये था। ऐसे में यूपी ने परंपरागत रूप से भारत के निवेशकों का सबसे बड़ा स्रोत माने जाने वाले महाराष्ट्र को भी पीछे छोड़ कर एक नया इतिहास रचा है। यूपी अब न केवल उद्योग के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उभरा है और निवेशकों की पहली पसंद बना है, बल्कि यहां के युवा भी बाजार के ताकाजे को समझते हुए निवेश की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। इस बार यूपी सरकार ने जब करीब 7 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया तो उसमें इस बात की चर्चा खासतौर पर हुई कि सरकार ने समाज के उन वर्गों के भी हित और कल्याण की बात कही, जो अब तक प्रदेश की आर्थिक रचना से बाहर माने जाते थे। विकास का यह सर्व-स्पर्शी और सर्व-समावेशी तकाजा जमीन पर तब और मजबूत हो जाता है, जब इसके साथ सरकार का अपना तंत्र भी सहायक हो जाता है। उत्तर प्रदेश के शेयर बाजार में निवेश और यहां के छात्रों की सफलता के नये तथ्य यूपी में विकास के साथ-साथ बड़े बदलाव की दास्तां बयां करते हैं। **(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)**

■ आर.के. सिन्हा

शेयर बाजार में यूपी की ठसक लगातार बढ़ रही है। शेयर बाजार के गढ़ महाराष्ट्र को ही यूपी वालों ने सीधी टक्कर दे दी है। बीएसई के मुताबिक एक साल में यूपी से 35 लाख नये निवेशकों ने शेयर बाजार में प्रवेश किया है। हालांकि एक समय था जब महाराष्ट्र और कर्नाटक दोनों राज्यों को शेयर बाजार की जान माना जाता था।

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, स्थानीय संपादक : ओम प्रकाश अमरेन्द्र*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली-1, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लातेहार कार्यालय : रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, लोहरदगा कार्यालय : रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा- फोन : 7903891779, 8271983099, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

आज से 35 वर्ष पहले के किसान और आज के किसान में बहुत अंतर आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात किसान के चेहरे पर कुछ खुशी देखने को मिली है। सरकार ने ही किसानों की ओर ध्यान देना शुरू किया है। उनके अभावों को कम करने के प्रयास में कई योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं। किसानों को समय-समय पर गांवों में ही कार्यशाला आयोजित कर कृषि विशेषज्ञों द्वारा कृषि क्षेत्र में हुए नये अनुसंधानों की जानकारी दी जा रही है। इसके अलावा उन्हें रियायती दर पर उच्च स्तर के बीज, आधुनिक कृषि यंत्र, खाद आदि उपलब्ध कराये जा रहे हैं। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने व व्यवसायिक खेती करने के लिए सरकार की ओर से बहुत कम ब्याज दर पर ऋण मुहैया कराया जा रहा है। खेतों में सिंचाई के लिए नहरों व नलकूपों का निर्माण कराया जा रहा है। इन सब कारणों के चलते किसान के जीवन स्तर में काफी सुधार आया है। उसकी आर्थिक स्थिति भी काफी हद तक अच्छी हुई है।

किसान ही कृषि की शक्ति

किसान चिलचिलाती धूप के दौरान तनिक भी विचलित नहीं होता। इसी तरह मूसलाधार बारिश या फिर कड़ाके की ठंड की परवाह किये बगैर किसान अपने कृषि कार्य में जुटा रहता है। किसान के जीवन में विश्राम के लिए कोई जगह नहीं है।वह निरंतर अपने कार्य में लगा रहता है। कैसी भी बाधा उसे अपने कर्तव्यों से डिगा नहीं सकती। किसान हर रोज तड़के उठता हैं। अपने हल एवं बैल लेकर खेतों की ओर चला जाता है। वह घन्टों खेत जोतता है। तत्पश्चात नाश्ता करता है। उसके घर-परिवार के सदस्य उसके लिये खेत में खाना लाते हैं। उसका खाना बहुत साधारण होता है। खाने के पश्चात पुनः वह अपने काम में व्यस्त हो जाता है। उनके जीवन में आराम नाम के जिच क्या होता है उन्हें बता ही नहीं वह हमेशा से ही कठिन परिश्रम करता है। किन्तु कठिन परिश्रम के पश्चात भी उसे बहुत कम लाभ होता है। वह अपनी उपज को बाजार में बहुत कम दामों पर बेचता है। वह हमेशा सादा जीवन जीता है। उसका पहनावा ग्रामीण होता है। साथ ही किसान हमेशा साधारण जीवन व्यतीत करने के बावजूद वह संतोषी प्रवृत्ति का होता है। इतना सब कुछ करने के बाद भी वह अपने जीवन की आवश्यकतायें पूरी नहीं कर पाता। अभाव में उत्पन्न होने वाला किसान अभाव में जीता है। अभाव में इस संसार से विदा ले लेता है। इसलिए किसान हमारे समाज के रीढ़ की हड्डी हैं। इसलिए उम्मीद के वजह से हम लोग सभी प्रकार का भोजन खा सकते हैं। जिस कारण हम लोग कभी भूखे नहीं रहते हैं जो उन्हीं की देन है। किसान की कृषि ही शक्ति और यही उसकी भक्ति है। प्राचीन काल से लेकर अब तक किसान का जीवन अभावों में ही गुजरा है। किसान मेहनती होने के साथ-साथ सादा जीवन व्यतीत करने वाला होता है। समय अभाव के कारण उसकी आवश्यकतायें भी बहुत सीमित होती हैं। उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी है। यदि समय पर वर्षा नहीं होती है तो किसान उदास हो जाता है। इनकी दिनचर्या रोजाना एक सी ही रहती है। किसान ब्रह्ममुहूर्त में सजग प्रहरी की भांति जग उठता है। एक कहावत है कि भारत की आत्मा किसान है जो गांवों में निवास करते हैं। किसान हमें खाद्यान्न देने के अलावा भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी सहेज कर रखे हुए हैं। यही कारण है कि शहरों की अपेक्षा गांवों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता अधिक देखने को मिलती है।

❖ ओपी

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम किसान

पलामू सहित अन्य राज्यों में भी इस समय धान की बुआई का कार्य जोर-शोर से चल रहा है। वहीं दूसरी ओर बारिश भी हो रही है। हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है।
जहां किसान अपने देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है। तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते। हमारे पलामू सहित पूरे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है। जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। इसलिए किसान को देश का एक सैनीक के रूप में भी माना जा सकता है। क्योंकि अगर हमारे देश की सीमा पर सैनिक नहीं होंगे तो हमारे देश दुश्मन हमारे देश के ऊपर हमला कर सकता है। इस तरह अपने देश में अगर किसान नहीं होंगे तो खेती नहीं हो सकती और खेती नहीं होगी तो अपने देश का घर एक नागरिक भूखा रह जाएगा, फिर चाहे वह सीमा पर लड़ रहा जवान क्यों नहीं हो। इसलिए पलामू के किसान इस समय धान की पारंपरिक तरीके से रोपाई करते है। यानी पहले किसान नर्सरी डालते हैं और पौध तैयार होने पर तैयार खेत में रोपाई होती है। यहां ज्यादातर ग्रामीण खेती-बाड़ी का कार्य करते है। यहां के किसान धान फसल की सबसे अधिक फसल उगाते है। अब धान बुवाई का सबसे अच्छा समय चल रहा है। साथ ही खेतों में धान की बाली लहलहा रही है। यह काम अपने आप में काफी खर्चिला होता है और काफी पानी लगता है। किसान अभी खरीफ फसलों की बुवाई-रोपाई के काम में लगे हैं। खरीफ सीजन की मुख्य फसलों में से एक धान है, जिसकी खेती किसान बड़े पैमाने पर करते हैं। पलामू उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब से लेकर देश के तमाम राज्यों के किसान फिलहाल धान की खेती की तैयारी मे लगे हैं।खेती करने पर खेत की पहले कई बार जुताई करनी पड़ती है। इस काम के लिए ट्रैक्टर चलता है और धुआं निकलता है, जिससे खर्च बढ़ने के साथ ही पर्यावरण को नुकसान भी पहचता है। जिससे किसानों पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है।

❖ कुमारी रिया

किसानों को बिजली की चिंता बारिश होने के बावजूद भी सता रही

पलामू में हल्के बारिश ने गांव कस्बों में लग रहे धान की रोपनी शुरू हो गया है। फिर भी किसान भगवान के निर्भर पर बारिश पे विश्वास नहीं करता है। बिजली को लेकर सबसे ज्यादा परेशानी ग्रामीण क्षेत्रों में है। जहां बिजली कटौती व बार-बार खराबी आने से बिजली समस्या का असर खेती किसानी पर भी पड़ता है। ग्रामीणों हर साल भगवान से ज्यादा शिकायत बिजली बंद होने से उन्हें दुख होता है। क्यों की धान की खेती में बहुत ज्यादा पानी की जरूरत होती है। रोपाई के बाद भी खेत में 3 इंच पानी चाहिए होता है। मॉनसून अभी पहुंचा नहीं है, इसलिए बारिश भी हो रही है। खेत में पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए किसान जनरेटर से ट्यूबवेल चला रहे हैं। डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण इसमें काफी खर्च आ रहा है। अगर सही समय पर बिजली की आपूर्ति होती है तो हमारा फसल अच्छी होती है।कृषि पंप व बोर से पानी नही मिल मिलता इससे सिंचाई कार्य भी प्रभावित हो जाता है। बिजली की आंख मिचौली से ग्रामीण क्षेत्रों का बुरा हाल रहता है। पलामू जिले के लिए विडंबना यह है कि ऊजार्धानी के नाम से मशहूर जिले में बिजली कट, लो वोल्टेज की समस्या जैसे पहले थी, वैसे आज भी है। इसका खामियाजा आम व खास के साथ किसानों को भी भुगतना पड़ रहा है। वैसे तो जिले में मौसम अनुसार रबी के साथ खरीफ फसलें भी ली जाती है। जिले में सिंचाई का प्रमुख साधन नदी व नहर है। इसके अलावा कृषि पंप व बोर से भी आवश्यकता अनुसार सिंचाई कार्य किया जाता है। लेकिन यहां के कई गांव में बिजली कटौती, लाइन फाल्ट आने व लो वोल्टेज की समस्या के कारण कृषि पंपो नियमित रूप से संचालन नही हो पाता है। किसानों ने धान व सब्जी की खेती के लिए कृषि पंप से सिंचाई के लिए बिजली कनेक्शन लिया है। खरीफ की फसल के लिए वे मानसून की बारिश व नहर के पानी पर निर्भर रहते है। लेकिन बारिश ठीक से नहीं होने व नहर का पानी जिन गांवों तक पहुंच की सुविधा नही है। वहा किसानों को कृषि पंपों के भरोसे रहना पड़ता है। लेकिन बार-बार बिजली गुल होने से पंप या बोर से पानी लेना मुश्किल होता है। बिजली कटौती के साथ मौसम बदलते ही बिजली व्यवस्था बिगड़ जाना उनकी सबसे बड़ी परेशानी बन गई है। इस समस्या का सामाधान होते नही दिख रहा है। जिले में बिजली समस्या एक बड़ी परेशानी बनी हुई है।

❖ ओम प्रकाश प्रजापति

कृषि कर्मक्षेत्र है, जहां केवल कर्म ही साथ देता है, भाग्य नहीं

इसलिए पलामू किसान कृषि के दुःख दर्द और अभाव को बड़े ही साहस और हिम्मत के साथ सहता है। अभाव को बार-बार प्राप्त करने के कारण उसका जीवन ही उनका अभावग्रस्त हो गया है। उसने अपने जीवन को अभाव का सामना करने के लिए पूरी तरह से लगा दिया है। फिर भी वह अभावों से मुक्त न हो सका। पलामू किसान अपने जीवन के अभावों से कभी भी मुक्त नहीं हो पाता हैं। इसका करण हैं, सर्वप्रथम उसकी संतुष्टि, अशिक्षा, अज्ञानता आदि है, इस कारण किसान आजीवन दुःखी और अभावग्रस्त रहता है। वह स्वयं तो अशिक्षित होता ही है अपनी संतान को भी इसी अभिशाप को झेलने के लिए विवश कर देता है। उसका पूरा परिवार अज्ञानता के भंवर में मंडराता रहता है। भाग्यवादी होना किसान की जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। वह कृषि के उत्पादन और उसकी बरवादी को अपनी भाग्य और दुर्भाग्य की रेखा मानकर निराश हो जाता है। वह भाग्य के सहारे अकर्मण्य होकर बैठ जाता है। वह कभी भी नहीं सोचता है कि कृषि कर्मक्षेत्र है, जहां केवल कर्म ही साथ देता है, भाग्य नहीं। वह तो केवल यही मानकर चलता है कि कृषि-कर्म तो उसने कर दिया है, अब उत्पादन होना न होना तो विधाता के वश की बात है। उसके वश की बात नहीं हैं। इसलिए सूखा पड़ने पर, पाला मारने पर या ओले पड़ने पर वह चुपचाप ईश्वराधीन का पाठ पढ़ता है। इसके बाद तत्काल उसे क्या करना चाहिए या इससे पहले किस तरह से बचाव या निगरानी करनी चाहिए थी, इसके विषय में प्रायः भाग्यवादी बनकर वह निश्चिन्त बना रहता है।

❖ वेद प्रकाश

पूरी आबादी का जीवन किसानों पर निर्भर

किसान अपने मेहनतकश हाथों से अन्न के दानों और चावल व रोटी को तैयार करने वाला पलामू के किसान अपने कर्म में निरन्तर गतिशील रहता है। बरसते हुए पानी में रहकर अपने कर्म में बड़ी ही ईमानदारी एवं तत्परता से लगा रहता है। धरती के समूचे प्राणियों के जीवन के लिए अन्न उपजाने वाला पलामू किसान इतना परोपकारी एवं मेहनती है कि वह अपने स्वार्थ व सुख की तनिक भी चिन्ता नहीं करता। उसका जीवन अत्यन्त सीधा-सादा है। शरीर पर धोती, कुर्ता, गमछा और नंगे पैर रहकर भी दूसरों के लिए अन्न उपजाना ही उसका ध्येय है। सूरज के उगने के साथ सायंकाल सूरज के डूबने तक खेतों में काम करना ही उसके जीवन की साधना है। घर पर अपने पशुओं की सेवा करने में भी वह जरा सी भी सुस्ती नहीं करता। इस दुनिया में कोई सा राज्य या देश हो चाहे वह एक विकसित देश क्यों ना हो या फिर एक गरीब देश क्यों ना हो पूरी दुनिया में हर एक देश में किसान एक सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है।
जिनके ऊपर पूरे देश निर्भर रहता है। उस देश के पूरी आबादी का जीवन किसानों पर निर्भर होता है। इस तरह एक किसान पूरी दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक है। जिनके ऊपर पूरी दुनिया निर्भर है। इस किसानों की वजह से ही हम लोगों को आराम से दो वक्त का भोजन मिलता है। हर इंसान को अपना जीवन जीने के लिए आवश्यकता होता है। इसलिए किसान हम सभी लोगों की एक आवश्यकता है। लेकिन आज के किसान जमींदारों के कर्ज के बोझ तले दबा हुआ उसका जीवन कभी अकाल, तो कभी महामारी तो कभी बाढ़ या सूखे की चपेट में आ जाता है। परिवार के बोझ तले दबा उसका जीवन किसी बंधुआ मजूदर के जीवन से कुछ कम नहीं होता। सच कहा जाये, तो वह कर्ज में ही पैदा होता है और कर्ज में ही मर जाता है। उसके बैलों की प्यारी जोड़ी भी उसके हल के साथ बिक जाती है।

किसानों को शिक्षित होना जरूरी

किसान साल भर मेहनत करता है, अन्न पैदा करता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर देशवासियों को खाद्यान्न प्रदान करता है। किंतु बदले में उसे मिलती है उपेक्षा। वह अन्नदाता होते हुए भी स्वयं भूखा और अधनंगा ही रहता हैं। वास्तव में आज भी किसान दीनता की सजीव प्रतिमा है। उसके पैरों में जूते नहीं, शरीर पर कपड़े नहीं, चेहरे पर रौनक नहीं तथा शरीर में शक्ति भी नहीं होती। अधिकांश किसान जीवित नर-कंकाल सदृश दिखाई पड़ते हैं। आज का किसान संसार के अन्य पलामू के किसानों की अपेक्षा बहुत पिछड़ा हुआ है। इसका मूल कारण है। कृषि की अवैज्ञानिक रीति। संसार में विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है। बस उन्हें जागरूकता करने की जरूरत है।
जागरूकता नहीं होने के कारण आज अधिकतर किसान आज भी पारंपरिक हल-बैल लेकर खेती करता है। सिंचाई के साधन भी उसके पास नहीं हैं। उसे अपनी खेती की सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। तुलनात्मक रूप से वह अन्य देशों के किसानों की अपेक्षा मेहनत भी अधिक करता है। फिर भी अन्न कम ही उत्पन्न कर पाता है। किसान भी खेती के नए वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक सुविधाओं का लाभ किसान वर्ग को भी मिला है। पहले बुवाई, सिंचाई, कटाई आदि की वैज्ञानिक सुविधाएं नहीं थी।आज सब कुछ सरकार के द्वारा किसानों को बिजली, पानी, ट्रैक्टर आदि की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो रही हैं। उन्हें सस्ती दरों पर सरकार से खेती के लिए ब्याज भी उपलब्ध हो रहा है। आज किसान मनचाहे ढंग से अपनी कृषि-भूमि का उपयोग कर सकते हैं। उन्हें भी कृषि-कार्य में अभूतपूर्व सफलता मिलेगी। इससे वे अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठा सकेंगे। किसान की हीनावस्था का दूसरा कारण है,अशिक्षा। अशिक्षा के कारण ही किसान सामाजिक कुरीतियों, कुसंस्कारों में बुरी तरह जकड़े हुए हैं और पुरानी रूढ़ियों को तोड़ना पाप समझते हैं।
सरकार को यदि किसानों के जीवन में सुधार लाना है तो सर्वप्रथम उन्हें शिक्षित करना चाहिए। गांव-गांव में शिक्षा का प्रसार करके अविद्या का नाश करना चाहिए। किसानों की शिक्षा के लिए रात्रि-पाठशालाएं तथा प्रौढ़-पाठशालाएं खोलनी चाहिए, जहां कृषि-कार्य से छुट्टी पाकर कृषक विद्या प्राप्त कर सकें।
शिक्षा के द्वारा ही किसान समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने में सक्षम हो सकते हैं। किसानों को कृषि के वैज्ञानिक तरीकों से परिचित कराना चाहिए। जिससे वे केवल वर्षा पर ही निर्भर न रहें। गांव-गांव में सरकारी समितियां खुलनी चाहिए, जो किसानों को अच्छे बीज तथा उचित ऋण देकर उन्हें सूदखोरों से बचाएं।

❖ गुड्डू कुमार

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

आत्मनिर्भर भारत के लिए सहकारी समितियों की भूमिका अहम : पीएम

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खाद्य तेलों और दालों का आयात कम करने की जरूरत पर बल देते हुए शनिवार को कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहकारी समितियां प्रमुख भूमिका निभा सकती हैं। प्रधानमंत्री आज दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र (आईईसीसी) में 17वीं भारतीय सहकारी कांग्रेस का उद्घाटन करने के बाद सभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने सहकारी विपणन के लिए ई-कॉमर्स वेबसाइट और सहकारी विस्तार और सलाहकार सेवा पोर्टल के ई-पोर्टल भी लॉन्च किए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अमृत काल में गांवों और किसानों के विकास में सहकारी क्षेत्र की भूमिका बड़ी होने वाली है। उन्होंने जोर देकर कहा, सरकार और सहकार (सरकार और सहकारिता) मिलकर विकसित भारत के सपने को दोगुनी ताकत प्रदान करेंगे। उन्होंने बताया कि डिजिटल इंडिया अभियान के माध्यम से सरकार ने पारदर्शिता बढ़ाई और लाभार्थियों के लिए लाभ सुनिश्चित किया। आज, सबसे गरीब लोगों का मानना है कि ऊपरी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद को समाप्त कर दिया गया है। सहयोग पर फोकस के साथ यह जरूरी है कि हमारे किसान और पशुपालक लोग इसे दैनिक जीवन में महसूस करें। यह जरूरी है कि सहकारी क्षेत्र पारदर्शिता और भ्रष्टाचार मुक्त शासन का मॉडल बने। इसके लिए सहकारी क्षेत्र में डिजिटल प्रणालियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत अपने डिजिटल लेनदेन के लिए दुनिया में जाना जाता है। उन्होंने सहकारी समितियों और बैंकों से डिजिटल लेनदेन के मामले में आगे रहने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इससे बाजार में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ेगी, साथ ही बेहतर प्रतिस्पर्धा भी संभव होगी।

प्रधानमंत्री मोदी सात जुलाई को वाराणसी में करेंगे जनसभा

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सात जुलाई को दो दिवसीय दौरे पर अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी आ रहे हैं। प्रधानमंत्री के आने का आरंभिक संकेत मिलते ही जिला प्रशासन युद्ध स्तर पर तैयारियों में जुट गया है। प्रधानमंत्री सात जुलाई को अपराह्न चार बजे रिंग रोड के किनारे विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। जनसभा के लिए वाजिदपुर गांव में तैयारी चल रही है। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार जनसभा स्थल से प्रधानमंत्री अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम सहित 1400 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

शनिवार को शहडोल में 'सिकल सेल एनीमिया मुक्ति मिशन' के शुभारंभ के दौरान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। *(फोटोःआईएएनएस)*

ओडिशाः नक्सलियों ने जलाई पत्थर तोड़ने की इकाई में नौ मशीन

भुवनेश्वर। ओडिशा के रायगढ़ जिले में संदिग्ध नक्सलियों ने पत्थर तोड़ने की इकाई में नौ मशीन को आग के हवाले कर दिया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। यह घटना मुनिगुड़ा पुलिस थानाक्षेत्र अंतर्गत देवकुपाली के करीब हुई। पुलिस के अनुसार, महिला सदस्यों समेत 10 नक्सली जबरन पत्थर तोड़ने की इकाई में घुस गए और दो पोर्कलेन मशीन और दो लोडर समेत नौ मशीन को आग लगा दी। नक्सली घटनास्थल पर पोस्टर भी छोड़ गए, जिसमें लिखा था कि उन्होंने पत्थर तोड़ने की इकाई में मौजूद मशीन को इसलिए नष्ट कर दिया क्योंकि यह इलाके में प्रदूषण फैला रही हैं।

तेलंगाना : राहुल विधानसभा चुनाव अभियान की करेंगे शुरूआत

एजेंसी। हैदराबाद

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में सफलता से उत्साहित कांग्रेस खम्मम क्षेत्र में रविवार को पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की विशाल जनसभा के साथ तेलंगाना में चुनावी बिगुल फूंकने के लिए तैयार है। राज्य में विधानसभा चुनाव इसी साल दिसंबर में होने हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रेवंत रेड्डी ने कहा कि राहुल गांधी की जनसभा पार्टी को आवश्यक गति प्रदान करेगी। पार्टी कार्यकर्ता मुख्यमंत्री के.चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाले भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट हैं।

पार्टी का कहना है कि अगर वह खम्मम क्षेत्र में 10 सीटें जीतती है, तो सत्ता विरोधी लहर और सत्तारूढ़ बीआरएस सरकार द्वारा पोडु भूमि वितरण विवाद के दम पर राज्य में बाजी मार सकती है। कांग्रेस विधायक दल के नेता भट्टी विक्रमार्क ने सत्तारूढ़ बीआरएस सरकार को बेनकाब करने के लिए पदयात्रा निकाली है। पदयात्रा का समापन रविवार को हो रहा है। आरोप है कि सत्ताधारी सरकार रैली को फ्लॉप शो बनाने की कोशिश कर रही है। रेवंत रेड्डी ने कहा था कि हालांकि पार्टी ने राज्य भर से लोगों को खम्मम लाने के लिए तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (टीएसआरटीसी) की 1,500 बसें किराए पर लेने के लिए दो करोड़ रुपये का भुगतान किया था, लेकिन उसे बसें नहीं दी जा रही हैं। उन्होंने सार्वजनिक रैली को सफल बनाने और पार्टी कार्यकर्ताओं में जोश भरने की चुनौती ली है।

मां से मारपीट करने पर शराबी बेटे को पिता ने जिंदा जलाया

चिक्कबल्लापुरा। कर्नाटक के चिक्कबल्लापुरा जिले के वाणीगरहल्ली में नशे में धुत व्यक्ति ने अपनी मां पर हमला किया। इससे गुस्साए उसके पिता ने उसे जलाकर मार डाला। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, 28 साल का आदर्श घर में हर वक्त झगड़ा करता रहता था। हमेशा दूसरों से झगड़ता रहता था। हालांकि, आदर्श के 58 वर्षीय पिता जयरमैया ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने उनकी बातों को नजरअंदाज कर दिया। आदर्श ने अपनी मां से पैसे मांगे, लेकिन जब उसने इनकार कर दिया तो उसने मां के साथ बेरहमी से मारपीट की। जिसके बाद उसके पिता ने उसकी पिटाई की। गुस्से में आकर आदर्श पर पेट्रोल डाला और उसे जिंदा जला दिया।

शिक्षक नियुक्ति नियमावली के विरोध में सड़क पर उतरे शिक्षक अभ्यर्थी

एजेंसी। पटना

बिहार सरकार की नई शिक्षक नियुक्ति नियमावली में स्थानीयता की अहर्ता को हटाए जाने से भड़के शिक्षक अभ्यर्थी शनिवार को राजधानी पटना की सड़कों पर उतरे और प्रदर्शन किया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों को सड़कों से हटाने के लिए पुलिस को लाठियां भांजनी पड़ी। दरअसल, राज्य में बीपीएससी द्वारा 1.70 लाख शिक्षकों के पदों पर नियुक्ति की प्रक्रिया जारी है। इस बीच सरकार द्वारा नियमावली में संशोधन करते हुए नियुक्ति में दूसरे राज्यों के अभ्यर्थियों के भाग लेने की छूट दिए जाने को लेकर स्थानीय शिक्षक अभ्यर्थी नाराज हो गए। नियुक्ति नियमावली में संशोधन के विरोध में शिक्षक अभ्यर्थियों ने शनिवार से आंदोलन की शुरूआत करने की घोषणा की थी। इसी घोषणा के तहत पूरे राज्य के सैकड़ों अभ्यर्थी सुबह पटना के जेपी गोलंबर पहुंचे और बिहार प्रारंभिक युवा शिक्षक संघ के बैनर तले राजभवन की ओर बढ़े। जेपी गोलंबर पर तैनात पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन कुछ अभ्यर्थी आगे बढ़ गए। शिक्षक अभ्यर्थियों के गांधी मैदान के पास जेपी गोलंबर से डाक बंगला चौराहा पर पहुंचने पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोक दिया। इसके बाद पुलिस के साथ प्रदर्शनकारियों के हाथापाई की भी सूचना है। पुलिस ने अभ्यर्थियों को हटाने का प्रयास किया। लेकिन, जब वे नहीं माने तब पुलिस को लाठियां भांजनी पड़ी। इस दौरान अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। कई प्रदर्शनकारियों को हिरासत में भी लिया गया।

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता 3 साल के लिए नियुक्त

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने शुक्रवार को तुषार मेहता को और तीन साल की अवधि के लिए सॉलिसिटर जनरल के रूप में फिर से नियुक्ति को मंजूरी दे दी। के.एम. नटराज, विक्रमजीत बनर्जी, बलबीर सिंह, एस.वी. राजू, एन. वेंकटरमन और ऐश्वर्या भाटी को भी सुप्रीम कोर्ट के लिए एएसजी के रूप में फिर से नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति भी तीन साल के लिए वैध होगी। समिति ने इन अधिकारियों की पुनर्नियुक्ति को भी मंजूरी दी : चेतन शर्मा, एएसजी दिल्ली उच्च न्यायालय; सत्यपाल जैन, एएसजी पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय; देवांग गिरीश व्यास, एएसजी गुजरात उच्च न्यायालय और डॉ. कृष्ण नंदन सिंह, एएसजी उच्च न्यायालय, पटना।

ट्विटर ने भारत में 11 लाख से अधिक अकाउंट्स को किया बैन

एजेंसी। नई दिल्ली

एलन मस्क द्वारा संचालित ट्विटर ने 26 अप्रैल से 25 मई के बीच भारत में रिकॉर्ड 11,32,228 अकाउंट्स को बैन किया है। ज्यादातर अकाउंट्स चाइल्ड सेक्सुअल एक्सप्लाइटेशन और नॉन कंसेंसुअल न्यूडिटी को बढ़ावा देने का काम करते थे। माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट ने देश में अपने प्लेटफॉर्म पर आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए 1,843 अकाउंट्स को भी हटा दिया है। कुल मिलाकर, ट्विटर ने भारत में समीक्षाधीन अवधि में 11,34,071 अकाउंट्स पर प्रतिबंध लगा दिया।

ट्विटर ने नए आईटी नियम, 2021 के अनुपालन से जुड़ी अपनी मासिक रिपोर्ट में कहा कि उन्हें अपने शिकायत निवारण तंत्र के माध्यम से एक ही समय-सीमा में भारत में उपयोगकताओं से 518 शिकायतें प्राप्त हुईं। इसके अलावा, ट्विटर ने 90 शिकायतों पर कार्रवाई की जो अकाउंट निलंबन के खिलाफ अपील कर रही थीं। भारत से अधिकांश शिकायतें दुर्व्यवहार/उत्पीड़न (264), घृणित आचरण (84), संवेदनशील व्यस्क सामग्री (67) और मानहानि (51) के बारे में थीं। नए आईटी नियम 2021 के तहत 5 मिलियन से अधिक यूजर्स वाले बड़े डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को मासिक अनुपालन रिपोर्ट प्रकाशित करनी होगी। इस बीच, ट्विटर ने हाल ही में भारत और तुर्की सहित वैश्विक स्तर पर कंटेंट को ब्लॉक करने के 83 प्रतिशत सरकारी अनुरोधों को मंजूरी दे दी।

पार्थ को अंगूठियां पहनने की इजाजत देने पर जेल अधीक्षक पर हुई केस

एजेंसी। कोलकाता।

स्कूल में नौकरियों में अनियमितता के मुख्य आरोपी पश्चिम बंगाल के पूर्व शिक्षा मंत्री व तृणमूल कांग्रेस के महासचिव पार्थ चटर्जी को न्यायिक हिरासत में अंगूठी पहनने का अनुमति देने के मामले में कोलकाता के प्रेसीडेंसी केंद्रीय सुधार गृह के अधीक्षक देबाशीष चक्रवर्ती के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। मामले में चक्रवर्ती के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने के कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्देश के आधार पर, राज्य के अतिरिक्त महानिदेशक और महानिरीक्षक के कार्यालय द्वारा उनके खिलाफ केस दर्ज किया गया है। हालांकि एफआईआर में तारीख 27 जून बताई गई है, लेकिन मामला शनिवार को सामने आया है।

एफआईआर में, चक्रवर्ती पर पश्चिम बंगाल सुधार सेवा अधिनियम, 1992 की धारा 83 के तहत कर्तव्य में लापरवाही का आरोप लगाया गया है। इस अधिनियम के तहत अपराधी को छह महीने तक की कैद या जुर्माने से दंडित किया जा सकता है। इस साल अप्रैल में कलकत्ता हाईकोर्ट में इस मामले में बहस करते हुए ईडी के वकील फिरोज एडुल्जी ने कहा कि संबंधित सुधार गृह अधीक्षक के खिलाफ पहले भी कई आरोप लगे हैं।

FILMY हलचल

53 साल की उम्र में मां बनीं सुपरमॉडल नाओमी कैंपबेल

सुपरमॉडल नाओमी कैंपबेल ने एक बालक को जन्म दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया ऐप इंस्टाग्राम पर यह जानकारी साझा की। नाओमी कैंपबेल (53) ने अपने दूसरे बच्चे के जन्म की घोषणा करते हुए एक तस्वीर भी साझा की है, जिसमें वह अपनी दो साल की बेटी और नवजात बेटे के साथ नजर आ रही हैं। सुपरमॉडल ने इंस्टाग्राम पर लिखा, मेरे नन्हे बेटे, आप जान लो कि जब से आप हमारी जिंदगी में आए हो हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं, और तब से आपको अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है और आप चारों ओर प्यार से घिरे हुए हैं। आप, ईश्वर की ओर से हमें दिया गया सच्चा उपहार हो। आपका स्वागत है, मेरे बेटे। 'द फेस' जैसे रियलिटी शो की प्रस्तोता नाओमी कैंपबेल ने लिखा, मां बनने में कभी देर नहीं होती। उन्होंने हालांकि, अपने नवजात बेटे का नाम नहीं बताया। नाओमी कैंपबेल ने पहली बार मई 2021 में एक बेटी को जन्म दिया था।

फिल्म स्टार गोविंदा ने मां चिंतपूर्णी के दरबार में दी हाजिरी

ऊना हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला में स्थित विश्वविख्यात शक्तिपीठ मां चिंतपूर्णी के दरबार में 11:30 बजे के आसपास बॉलीवुड स्टार गोविंदा ने परिवार सहित मां के दरबार में हाजिरी भरी। इस मौके पर चिंतपूर्णी मंदिर के बारीदार सभा के प्रधान रविंद्र शिंदा ने विधिवत रूप से वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर पूजा-अर्चना करवाई और मां के दरबार में हाजिरी लगवाई। हाजिरी लगाने के पश्चात मंदिर परिसर में स्थित पावन वटवृक्ष को मौली का धागा बांधा और हवन कुंड में आहुतियां डालकर सुख समृद्धि की कामना की। इस मौके पर कांग्रेस सचिव संजीव कालिया, पुजारी सचिन कालिया, पुजारी रोहन कालिया आदि उपस्थित रहे।

राजनीति रक्षा मंत्री ने छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण रोकने का किया आह्वान, कहा

इस मुद्दे पर भूपेश सरकार की चुप्पी चिंताजनक

एजेंसी। कांकेर/रायपुर

केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने छत्तीसगढ़ के कांकेर में जनसभा को संबोधित करते हुए छत्तीसगढ़ में लगातार हो रहे धर्मांतरण को रोकने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल की सरकार ने यहां की स्थिति बदतर कर दी। छत्तीसगढ़ में तेजी से धर्मांतरण हो रहा है। इसे रोकने के लिए यहां की सरकार कुछ नहीं कर रही है। इसे रोका जाना चाहिए। इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार को एक दिवसीय दौरे पर रायपुर पहुंचे। एयरपोर्ट पर बीजेपी के वरिष्ठ नेताओं ने उनका स्वागत किया। रायपुर में कुछ देर रुकने के बाद राजनाथ सिंह सीधे कांकेर के लिए रवाना हुए। यहां उन्होंने पद्मश्री अजय मंडावी से मुलाकात की और उन्हें सम्मानित किया। इसके बाद कांकेर नरहरदेव मैदान में रक्षा मंत्री ने जनसभा को संबोधित किया। रक्षा मंत्री ने अपना संबोधन

छत्तीसगढ़ी से शुरू किया और सभी को 'जय जोहार' कहा। राजनाथ सिंह ने कहा कि बस्तर का पूरा इलाका मैं पूरी तरह से जानता हूं। मुझे याद है जब मैं पहली बार छत्तीसगढ़ बतौर प्रभारी आया था तब भ्रष्टाचार का आलम था। कांग्रेस के खिलाफ किसी के बोलने की हिम्मत नहीं। 2013 में डॉ. रमन सिंह के हाथों प्रदेश की बागडोर सौंपी गई। इस सच्चाई को कोई नकार नहीं सकता है कि छत्तीसगढ़ का कायाकल्प डॉ. रमन सिंह ने किया। उन्होंने नया रायपुर ही नहीं बल्कि नया बस्तर बनाया है। रमन सिंह के 15 साल के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदली है। छत्तीसगढ़ बनाने की सबसे बड़ी वजह थी कि आदिवासी भाइयों को विकास की यात्रा में आगे बढ़ना था। इसलिए छत्तीसगढ़ और झारखंड का गठन किया गया था। उन्होंने कहा कि भारत के इतिहास में अगर आदिवासियों के लिए अलग से कुछ काम हुआ तो है तो वह काम अटल जी ने किया है। आदिवासियों के लिए अलग से मंत्रालय बनाने का काम अटल जी ने किया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यहां कांग्रेस की सरकार को हरसंभव मदद की है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, 2018 में आपने सरकार बदल दी। आपको लगा कि नई सरकार का स्वाद चख लें, लेकिन यह सरकार कैसी है, यह आपको पता है। सीएम भूपेश बघेल ने प्रदेश की दिशा ही बदल दी, जबकि केंद्र की सरकार ने कोई भेदभाव नहीं किया। हमने दिल खोलकर मदद की है। मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं, छत्तीसगढ़ बनाने के पीछे की जरूरत क्या थी? अटल जी चाहते थे आदिवासी भाई आगे आएं, यही उनकी मंशा थी। आदिवासी समाज के कल्याण के लिए 90 हजार करोड़ रुपये बजट- उन्होंने कहा कि पीएम नरेन्द्र मोदी भी आदिवासियों के लिए काम कर रहे हैं। आदिवासी समाज के कल्याण के लिए 90 हजार करोड़ रुपये का अलग से बजट आवंटित कर दिया है। हर साल 15 नवंबर जनजातीय गौरव दिवस मानने का भी ऐलान किया गया। कांग्रेस आदिवासियों को भूल गई। कांग्रेस ने मदद नहीं की इस वजह से आदिवासियों भाइयों को मकान नहीं मिला। इस पर टीएस सिंहदेव ने भी नाराजगी जताई थी। नक्सलवाद कब का खत्म हो जाता, लेकिन हमको सहयोग नहीं मिला। धर्मांतरण पर भी लगाम लगाई जानी चाहिए।

'गदर 2' के मेकर्स पर अमीषा पटेल के गंभीर आरोप

दो दशक पहले सुपरहिट हुई फिल्म "गदरः एक प्रेम कथा" के सीक्वल की इस समय खूब चर्चा हो रही है। "गदर 2" के मौके पर दर्शक 22 साल बाद एक बार फिर सनी देओल और अमीषा पटेल की जोड़ी को बड़े पर्दे पर देखेंगे। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म "गदर 2" का गाना "उड़ जा काले कावां" दर्शकों को खूब पसंद आया। फिलहाल फिल्म "गदर 2" एक अलग वजह से चर्चा में है। फिल्म में सकीना का किरदार निभाने वाली अमीषा पटेल ने मेकर्स पर गंभीर आरोप लगाए हैं। अमीषा ने ट्वीट कर बताया है कि फिल्म की शूटिंग के दौरान उन्हें कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ा। अमीषा लिखती हैं कि निर्देशक अनिल शर्मा के प्रोडक्शन हाउस ने फिल्म का पूरा प्रोडक्शन संभाला लेकिन टीम ने आज तक मेकअप आर्टिस्ट से लेकर कपड़े डिजाइन करने वाले स्टाफ तक अनगिनत लोगों

को उनकी सैलरी नहीं दी है। अमीषा दूसरे ट्वीट में लिखती हैं, "इन सभी लोगों को न सिर्फ सैलरी बल्कि अक्सर शूटिंग के दौरान होने वाले खर्च और प्लेन टिकट का भी भुगतान नहीं किया गया। शूटिंग पर कहीं जाने के लिए कोई कार नहीं थी, इसलिए कलाकार और क्रू सदस्य अक्सर फंस जाते थे। लेकिन इन सभी समस्याओं का समाधान जी स्टूडियोज ने कर दिया।

बीएयू कृषि वैज्ञानिकों ने खरीफ शोध की तैयारी शुरू की

फसलों की बोवाई एक सप्ताह में पूरी करें किसान : डॉ पीके सिंह

नवीन मेल संवाददाता। रांची

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) कुलपति डॉ ओंकार नाथ सिंह के निर्देश पर कृषि वैज्ञानिकों ने खरीफ फसल शोध कार्यक्रमों की तैयारी शुरू कर दी है। शनिवार को निदेशक अनुसंधान डॉ. पीके सिंह एवं डीन एग्रीकल्चर डॉ. डीके शाही के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिकों के दल ने वेस्टर्न सेक्शन फार्म के खेतों में खरीफ शोध से सबंधित कार्यो का आकलन किया। पौधा प्रजनक वैज्ञानिकों के दल ने पिछले 4-5 दिनों की बारिश को देखते हुए अगले एक-दो दिनों में टांड़ एवं मध्यम भूमि की तैयारी पूरी करने और खरीफ फसलों की बोवाई शुरू करने की योजना बनायीं। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ. पीके सिंह ने वैज्ञानिकों को करीब 55 एकड़ में फैले इस शोध फार्म में खरीफ शोध से जुड़ी फसलों में मडुआ, मकई, अरहर, उरद, मूंग, सरगुजा, मूंगफली एवं सोयाबीन आदि का बोवाई कार्य को एक सप्ताह में पूरी करने को कहा। शोध कार्य में बीएयू द्वारा विकसित एवं हाल में विकसित किस्मों के गुणात्मक बढ़ोतरी को प्राथमिकता देने को कहा। उन्होंने पौधा प्रजनक वैज्ञानिकों को राज्य के तीन कृषि पारिस्थितिकी में अवस्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों, दुमका, चियांकी (पलामू) एवं दारीसाई (पुर्वी सिंहभूम) का दौरा करने और विकसित किस्मों तथा शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का निर्देश दिया। डॉ सिंह ने वैज्ञानिकों को विभिन्न आईसीएआर परियोजना के अधीन संचालित अनुसंधान कार्यक्रमों के तहत किसानों के खेतों में खरीफ फसलों का अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (एफएलडी) ससमय शुरू करने का निर्देश दिया। साथ ही बीजोत्पादन एवं अन्य कार्यक्रमों में राज्य के कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहभागिता एवं सहयोग पर बल दिया। मौके पर डीन एग्रीकल्चर डॉ डीके शाही ने बोवाई से पूर्व खेतों में खाद एवं उर्वरक प्रबंधन तथा दलहनी एवं तेलहनी फसलों में राइजोबियम कल्चर (जैव उर्वरक) के उपयोग पर प्रकाश डाला। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग की अध्यक्षा डॉ. मणिगोप्पा चक्रवर्ती ने बताया कि वेस्टर्न सेक्शन फार्म में 8 आईसीएआर-अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं एवं 12 राज्य योजनाओं से सबंधित खरीफ शोध कार्यक्रम होंगे। फार्म के 55 एकड़ भूमि में मिल्लेट्स फसलों (मडुआ, गुन्दली, कंगनी एवं कोदो), मकई, अरहर, उरद, मूंग, सरगुजा, सोयाबीन, मूंगफली तथा धान आदि फसलों से सबंधित शोध कार्यक्रम होंगे। इन शोध कार्यक्रमों का राज्य हित एवं राष्ट्रीय स्तर पर विशेष महत्त्व निहित होगा। शस्य वैज्ञानिक डॉ. एकलाख अहमद ने फार्म के करीब 17 एकड़ भूमि में धान की करीब 480 उन्नत किस्मों पर शोध कार्यक्रम की बात कही।

बीस दिन में मांगें पूरी न होने पर मंत्री आवास घेरने की चेतावनी

रांची। विभिन्न मांगों को लेकर झारखंड एमपीडब्ल्यू कर्मचारी संघ के सदस्यों ने नामकुम में स्वास्थ्य निदेशालय का शनिवार को घेराव किया। संघ के अध्यक्ष पवन कुमार बोले, 20 दिन में मांगों पर विभाग ने कोई निर्णय नहीं लिया तो स्वास्थ मंत्री बन्ना गुप्ता के आवास का घेराव किया जाएगा। चेतावनी दी कि इसके बाद भी मांगें पूरी नहीं की गईं तो अनिश्चितकालीन हड़ताल का कदम उठाएंगे। हालांकि प्रदर्शनस्थल पर निदेशक प्रमुख डॉ बीरेंद्र प्रसाद सिंह बोले, सेवा विस्तार का पत्र जारी हो गया है। कहा कि स्थाई समायोजन की संचिका विभाग को भेजी जाएगी। स्थायी समायोजन की भी कोशिश की जाएगी। साथ ही अन्य मांगों को एक-दो दिन में पूरा करने का भी भरोसा दिलाया। कर्मचारी स्थायी समायोजन, समायोजन होने तक सेवा अवधि का विस्तार, श्रावणी मेले में प्रतिनियुक्ति कर्मियों को अग्रिम टीए-डीए देने की मांग की।

नागरमल मोदी सेवा सदन में मनाया गया डॉक्टर्स डे

नवीन मेल संवाददाता। रांची

नागरमल मोदी सेवा सदन में शनिवार को सदन के चतुर्थ तल्ला स्थित सभाकक्ष में प्रभावी रूप में डॉक्टर्स डे मनाया गया। डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में सदन के अध्यक्ष अरुण छायछरिया, मेडिकल बोर्ड के चेयरमैन अजय मारू, उपाध्यक्ष रेखा जैन, मानद सचिव आशीष मोदी, सहायक सचिव वेद प्रकाश बागला, पवन शर्मा तथा आलोक तुलस्यान पूर्व अध्यक्ष आर के सरावगी, कविता मितल ने सदन के सभी चिकित्सकों को संबोधित करते हुए समाज में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए शुभकामनाएं दी। सदन के वरीय चिकित्सक डॉ. कुमार शीलमणी द्वारा डॉक्टर्स डे के बारे में जानकारी देते हुए सदन में मरीजों के इलाज में और बेहतर करने की प्रेरणा दी। डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में सदन की उपाध्यक्ष रेखा जैन द्वारा चिक्सिको के बीच रचनात्मक, मनोरंजन एवं प्रेरक खेल भी किया गया जिसमें सभी चिकित्सकों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर सदन के सदस्य राहुल मारू एवं उनकी टीम 7 ने चिकित्ससकों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए पौधा देकर बधाई दी। सदन के वरीष्ठ चिकित्सकगण डॉ. अंजु कुमार, डॉ. माया नारंग, डॉ. संध्या अग्रवाल, डॉ. सुनीता कात्यायनं, डॉ. पीके चौधरी, डॉ. के. पी. दारुका, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. विजय ढांढनिया, डॉ. विनय महेश्वरी, डॉ. राजेश मारू के साथ -साथ अन्य 40 चिकित्सक भी उपस्थित थे। डॉक्टर्स डे के दौरान सदन से संबंधित चलचित्र दिखाई गई। समारोह का संचालन उपाध्यक्ष रेखा जैन द्वारा तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक सचिव वेद प्रकाश बागला द्वारा किया गया। यह जानकारी मानद सचिव आशीष गोदी ने दी।

आईएमए ने ब्लड डोनेशन कैंप लगा मनाया डॉक्टर्स डे

रांची। डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में शनिवार को आईएमए सभागार में रांची आईएमए की ओर से एक मेगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया। यह रक्तदान शिविर रिम्स ब्लड बैंक के संयोजन में सम्पन्न हुआ। इस कैम्प में डॉक्टरों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और रक्तदान किया। डॉक्टरों के अलावे उनके सहयोगियों ने भी रक्तदान किया। आईएमए रांची के अध्यक्ष डॉ शेखर चौधरी काजल ने कहा कि इस तरह की समाज सेवी गतिविधियां आगे भी होती रहेंगी तथा हमलोग सकारात्मक प्रयासों से आईएमए के जरिए समाज की सेवा करेंगे। डॉ ए चन्द्रा ने कहा कि यह एक अनूठी शुरूआत हुई है और हमारा प्रयास रहेगा कि हर 3 महीने में रक्तदान शिविर लगाया जाए। डॉ ए के श्रीवास्तव ने कहा कि डॉक्टर्स डे मनाने का तरीका रक्तदान शिविर जैसे समाज सेवी आयोजन से बेहतर हो नहीं सकता।

उपायुक्त ने खेलकूद विभाग के कार्यों की समीक्षा की

अधिकारियों को दिये निर्देश

नवीन मेल संवाददाता। रांची

उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने शनिवार को समाहरणालय में खेलकूद विभाग के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा बैठक की। साथ ही संबंधित अधिकारियों को कई दिशा-निर्देश दिए। उपायुक्त ने खेलकूद मद के तहत चालू योजनाओं की विस्तार पूर्वक समीक्षा की। नामकुम के बड़ाम पंचायत में प्रखंड स्तरीय स्टेडियम निर्माण करने, मोरहाबादी क्रीड़ा केंद्र की ओर से संचालित मैदान में इंडोर बैडमिंटन कोर्ट बनाने, अनगड़ा में प्रखंड स्तरीय स्टेडियम निर्माण करने, बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम मोरहाबादी में घास लगाने, बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम मोरहाबादी के ऊपरी तल्ले में ड्रेसिंग रूम निर्माण करने, खेलगांव होटवार स्थित फ्लैटों का उन्नयन कार्य करने और इटकी प्रखंड के सियारटोली में फुटबॉल स्टेडियम निर्माण कार्य करने का निर्देश दिया। डीसी बैठक में अधिकारियों को यह बताया कि सरकार की योजनाओं को किसी तरह के कार्यों में बाधा न आये। योजना सुचारू रूप से चलती रहे और लोगों को इसका लाभ मिलता रहे। झारखंड में अभी खिलाड़ियों के लिए खेल संबंधी मैदानों की काफी कमी है उसे पूरा करने सरकार की योजना महत्वपूर्ण साबित हो रही है। यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है, सिर्फ उन्हें सुविधा की जरूरत हे। बैठक में उप-विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव एवं जिला खेल पदाधिकारी संजीत कुमार, कार्यपालक अभियंता एनआरपी-1 सागर प्रताप, कनीय अभियंता जिला परिषद शेखर कुमार, सचिव बैडमिंटन संघ एन के डे, बैडमिंटन कोच उमा रानी पालिथ, प्रबंधक इनडोर बैडमिंटन स्टेडियम संजू कुमार और अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

डॉक्टर्स-डे पर सदर व रिम्स के चिकित्सकों को किया गया सम्मानित

रांची। लायंस क्लब ऑफ रांची लाइफ ने शनिवार को सदर अस्पताल में चिकित्सकों के साथ डॉक्टर्स-डे मनाया। सदर व रिम्स के चिकित्सकों को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में चिकित्सकों ने कोरोनाकाल में किए गए कार्य की जानकारी दी। सदर अस्पताल के डॉ. एके झा ने बताया कि कोविड मैनेजमेंट में अस्पताल की पूरी मॉनिटिंग उनके जिम्मे थी। वहीं, सदर अस्पताल के पैथोलॉजिस्ट डॉ. विमलेश सिंह ने बताया कि कोविड के दौरान पैथोलॉजिक टेस्ट का क्या महत्व रहा। कैसे एक-एक जांच इलाज के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। अस्पताल के एसीएमओ डॉ. शशिभूषण खलखो ने बताया कि कोविड वैक्सीनेशन की शुरूआत होते ही उन्हें जिले में वैक्सीनेशन का नोडल बनाया गया। वैक्सीनेशन से जुड़े सभी तरह के काम, प्रतिदिन डोज की उपलब्धता सुनिश्चित कराना, सेंटर्स का रोस्टर तैयार कराना कितना चुनौतीपूर्ण रहा।

पृष्ट एक के शेष

सीएम के प्रयास से अपना जीवन...

आईटीआई प्रमाणन कार्यक्रम प्रदान करने वाला अपनी तरह का पहला संस्थान है। यह कार्यक्रम राज्य के कमजोर वर्गों एससी, एसटी और अल्पसंख्यक लड़कियों को शेफ के रूप में प्रशिक्षित करने के इरादे से विकसित किया गया है ताकि वे अपनी आजीविका का मार्ग प्रशस्त कर सकें। यह पाक कला महाविद्यालय, कई मायनों में एक अभिनव पहल है। इसमें विश्व स्तरीय प्रशिक्षण बुनियादी ढांचा, विशेष रूप से तैयार पाठ्यक्रम और पाक कला प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रेरित संकाय है। झारखण्ड सरकार ने भारत और दुनिया के लिए भविष्य के शेफ तैयार करने के लिए इसकी स्थापना की है। आईटीआई पाक कला कौशल कॉलेज औपचारिक रूप से राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एससीवीटी), रांची, झारखण्ड से संबद्ध है। छात्रों को इंडियन फेडरेशन फॉर क्यूलिनरी एसोसिएशन (आईएफसीए) द्वारा प्रमाणित प्रशिक्षण भी दिया जाता है। झारखण्ड की बेटियों को इस पाठयक्रम के जरिए खाद्य उद्यमी बनाना लक्ष्य है। सरकार के सहयोग से संचालित कौशल कॉलेज एक ऐसा पाठ्यक्रम प्रदान करता है जो प्रैक्टिकल कक्षाओं, थ्योरी कक्षाओं, प्रोडक्शन शॉप (छात्रों द्वारा प्रबंधित एक इनहाउस कैफे), जीवन कौशल मॉड्यूल (संचार, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, कार्य जीवन संतुलन और उद्यमिता) का सही मिश्रण है। आवासीय कॉलेज छात्राओं को उनके व्यक्तित्व और समाज के प्रति सेवा की भावना का निर्माण करने में मदद करती है। छात्रों को उद्यमिता (खाद्य उद्यमी) अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। आईटीआई कौशल कॉलेज में छात्रों द्वारा संचालित सेवा कैफे हैं जो खाद्य उद्यमियों की नर्सरी के रूप में कार्य करता है। इसका लक्ष्य झारखण्ड की बेटियों में उद्यमिता मानसिकता पैदा करने के मुख्यमंत्री के सपनों को साकार करना है। झारखण्ड की बेटियों द्वारा झारखण्ड में ही नौकरी के अवसर उपलब्ध कराना इस सेवा कैफे का सिद्धांत है। कौशल कॉलेज में एडमिशन के लिए छात्राएं 10वीं पास करके ऐप.प्रेझा.ऑर्ग में अप्लाई कर सकते हैं।

पलामू में टमाटर लाल, लगी आज, 120 रुपये...

कई तरह की फसलें खराब हो गई हैं। इसका असर टमाटर पर पड़ा है। इसके दामों में अचानक इजाफा हुआ है। वहीं कुछ लोगों का मानना है कि इस बार गर्मी बहुत ज्यादा हुआ जिसके वजह से पैदावार भी बहुत कम हुई। सिर्फ टमाटर ही नहीं अन्य सब्जियों के दामों में भी इजाफा हुआ है। जिससे घर का खर्च चलाना काफी मुश्किल हो गया है।सब्जी की दुकान लगाने वाले आरिफ ने कहा कि पिछले 3 से 4 दिनों में टमाटर के दाम में इजाफा हुआ है मौजूदा समय में टमाटर 120 रुपए किलो बिक रहा है। उन्होंने कहा सिर्फ टमाटर ही नहीं मिर्चा और धनिया भी काफी महंगा हो गया है। उन्होंने कहा कि मौसम की वजह से इन सब्जियों के दाम में इजाफा हुआ है।

पारदर्शिता के लिए डिजिटल...

आंदोलन में कई बदलाव लाए हैं। हमारे देश में सहकारी आंदोलन लगभग 115 वर्ष पुराना है। एक अलग सहकारी मंत्रालय की मांग 75 वर्षों से लंबित थी। जब मोदी दूसरी बार प्रधान मंत्री बने, तो एक स्वायत्त सहकारी मंत्रालय की स्थापना की गई। एक स्वतंत्र मंत्रालय के गठन के साथ शाह ने कहा, सहकारिता मंत्रालय और सहकारी क्षेत्र में कई बदलाव संभव हो गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री ने चीनी मिलों से संबंधित 15,000 करोड़ रुपये के कर विवाद को सुलझाया और भविष्य में ऐसे विवादों की पुनरावृत्ति को रोकने की व्यवस्था की।

समान नागरिक संहिता...

पति-पत्नी नहीं हैं। उन्होंने इस्लामिक कानून का हवाला देकर दूसरी शादी को जायज बताया।इसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और वहां फैसला खान के खिलाफ आया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उन्हें सेक्शन 125 के तहत तलाकशुदा पत्नी को पैसा यानी गुजारा भत्ता देना होगा। उल्लेखनीय है कि यहां सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि एक कॉमन सिविल कोड होना चाहिए।

समान नागरिक संहिता से लाभ: समान नागरिक संहिता के समर्थकों का कहना है कि जिस देश में नागरिकों में एकता होती है, किसी प्रकार वैमनस्य नहीं होता है, वह देश तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ता है। देश में हर भारतीय पर एक समान कानून लागू होने से देश की राजनीति पर भी असर पड़ेगा। राजनीतिक दल वोट बैंक वाली राजनीति नहीं कर सकेंगे। चुनाव के समय वोटों का ध्रुवीकरण नहीं होगा।भारत में सामान नागरिक संहिता के पक्ष में कई तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं। यह संहिता भारतीय नागरिकों को अपने मूलभूत अधिकारों का लाभ उठाने का अधिकार प्रदान करती है और उन्हें स्वतंत्रता, समानता और न्याय की गारंटी देती है। जैसे -

संवैधानिक मूल्यों का सम्मान : सामान नागरिक संहिता संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण और सम्मान के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करती है। यह न्यायपूर्ण व्यवस्था, समानता, धार्मिक स्वतंत्रता, मतांतरण की स्वतंत्रता, संघटन की स्वतंत्रता, और व्यक्तिगत अधिकारों के संरक्षण की गारंटी प्रदान करती है।

न्यायपूर्णता : सामान नागरिक संहिता न्यायपूर्णता का संरक्षण करने के लिए तर्क प्रस्तुत करती है। यह न्यायाधीशों की स्वतंत्रता, न्यायिक प्रक्रियाओं की पारदर्शिता, और अन्याय के खिलाफ संरक्षण की गारंटी प्रदान करती है।

स्वतंत्रता के अधिकार : सामान नागरिक संहिता स्वतंत्रता के विभिन्न आयामों का सम्मान करने का तर्क प्रस्तुत करती है। इसमें स्वतंत्रता भाषण, संगठन, मीडिया, और धर्म के प्रशासनिक और व्यापारिक पहलुओं का संरक्षण शामिल है।

समानता : सामान नागरिक संहिता समानता के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करती है।

झारखंड में क्या बाजार समिति के बहुरेंगे दिन

रांची। झारखंड में बदहाल पड़े बाजार समिति के दिन कब बहुरेंगे, ये सवाल दुकानदारों और कारोबारियों को परेशान कर रहा है। जर्जर हालत में बाजार समिति के भवन डराने लगे हैं। बाजार समिति में ना साफ सफाई की व्यवस्था है और ना ही पीने के पानी की। ऐसे में इस बदहाली को दूर करने की लगातार मांग के बाद अब शायद सरकार की नींद खुली है। बदहाल पड़े बाजार समिति को दुरुस्त करने की तैयारी में सरकार जुट गई है। कृषि विपणन परिषद अध्यक्ष ने बाजार समितियों की वास्तविक स्थिति को लेकर सभी सचिवों से रिपोर्ट मांगी है। दरअसल, झारखंड में बदहाली के दौर से गुजर रहे बाजार समितियों के दिन क्या बहुरेंगे या इसी तरह जर्जर भवन और गोदामों के सहारे मार्केटिंग बोर्ड का काम चलता रहेगा। इस तरह के सवाल सरकार के सिस्टम पर खड़ा करते करते व्यवसायी और किसान थक चुके हैं। मगर हर बार की तरह आश्वासन की घुट्टी पिलाकर इन्हें आश्वस्त कर दिया जाता है। इन सबके बीच हाल ही में हेमंत सरकार ने मृतप्राय हो चुके कृषि विपणन परिषद को अध्यक्ष की सौगात देकर इसे जीवंत बना दिया है, जिसके बाद बाजार समितियों के कायाकल्प होने की उम्मीदें बढ़ गई हैं।

बैंक ऑफ इंडिया ने मनाया राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस

रांची। बैंक ऑफ इंडिया रांची अंचल ने बुटी मोड़ स्थित गुलमोहर अस्पताल परिसर में राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस का आयोजन किया। इस विशेष अवसर पर बैंक ऑफ इंडिया रांची अंचल के आंचलिक प्रबंधक संजीव कुमार सिंह की ओर से बरियातू शाखा के ऋण प्रबंधक अमित कुमार दुबे, विपणन प्रबंधक दीपक कुमार, अस्मिता सिन्हा और राज कुमार ने डॉक्टर्स से शिष्टाचार मुलाकात की तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर डाक्टर्स को सम्मानित किया और उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। बताते चलें कि बैंक के अधिकारियों द्वारा कैंप के माध्यम से डॉक्टर्स की जरूरतों को ध्यान में रखकर खास तौर पर तैयार किए गए बीओआई स्टार डॉक्टर्स प्लस

रांची के पहाड़ी मंदिर में श्रावणी मेले की तैयारियां अंतिम चरण में

नवीन मेल संवाददाता। रांची

शहर के पहाड़ी मंदिर में श्रावणी मेले की तैयारियों को अंतिम रूप देने में मंदिर प्रबंधन जुटा हुआ है। इस बार दान दक्षिणा के लिए भी पहाड़ी मंदिर में अलग तैयारी की गई है। रांची के पहाड़ी मंदिर में सावन महीने के सोमवारी में सुबह से शाम तक हजारों भक्तों का तांता लगा रहता है। इसलिए मंदिर प्रबंधन की तरफ से सावन के सोमवारी के दिन जल चढ़ाने वाले भक्तों की सुख सुविधा का ख्याल रखने के लिए पहाड़ी मंदिर विकास समिति और जिला प्रशासन के लोग तैयारी को अंतिम रूप देने में लगे हुए हैं। पंडित किसलय त्रिपाठी ने कहा कि इस वर्ष के सावन पूजा का संयोग बहुत ही बेहतर है। यह संयोग 19 वर्ष के बाद आया है। इस वर्ष शिव भक्तों को आठ सोमवारी करने का मौका मिलेगा। क्योंकि, इस वर्ष का सावन माह 59 दिनों का होगा। पहाड़ी मंदिर विकास समिति के कोषाध्यक्ष उत्तम कुमार ने कहा कि मंदिर प्रबंधन की तरफ से सावन को लेकर पदाधिकारियों को सभी दिशा-निर्देश दे दिए गए हैं। मंदिर प्रबंधन की तरफ से बताया गया कि चार जुलाई से पहले रंग-रोगन और साफ सफाई के काम को पूरा कर लिया जाएगा। सोमवार के दिन आने वाले हजारों भक्तों के लिए बैरिकेडिंग लगाने की तैयारी अंतिम रूप में है।

शिकायत **बिजली की आवाजाही से लोगों की बढ़ी मुश्किलें**

अब उपभोक्ता को नहीं होगी परेशानी : महाप्रबंधक

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राजधानी में बिजली की आवाजाही से लोगों को काफी परेशान हो चुके हैं। लोगों का रात की निंद उड़ गयी है। इसके साथ ही बिजली नहीं रहने पर बच्चों की पढ़ाई में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों की परेशानियों को देखते हुए झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड महाप्रबंधक प्रभात कुमार श्रीवास्तव ने आम लोगों की सुविधा के लिए रांची शहर एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में अवस्थित विद्युत शक्ति उप केंद्रों का नंबर जारी किया है ताकि किसी भी प्रकार की बिजली संबंधी समस्या होने पर शिकायत दर्ज करवा सके।

कुसाई - 7209032152, अमरावती-84349 91936, डीपीएस डिबडिह-926447 1114, मेकन- 72090 32153, एयरपोर्ट- 7209032154, तुपुदाना- 72090 32157, हटिया-89875 87152

न्यू एसएमटीपी- 93344 01191, विधानसभा- 72090 32161, धुर्वा - 97091 94775, सेलसिटी- 72090 32158, पॉलिटेक्निक- 97092 91527, चडरी - 97718 58920, सदर- 94701 76452, अशोकनगर-94303 44770, हरमू- 95347 43064, पुनदाग- 94303 44710, कोकर शहरी- 94711 57235, कोकर ग्रामीण- 94709 69937, चुटिया- 94311 35655, नामकुम - 82354 94868, पटेल चौक-97718 58920, आर एम सी एच-85801 25317, खेल गांव- 88096 07722, बरियातू पानी टंकी- 6207 416 007, मोरहाबादी- 84344 96556, साइंस सेंटर- 754 100 7395, राजभवन- 92644 52136, सेवा सदन- 92644 52138, गोंदा-92644 52135, काके-7491938346

टाटीसिल्वे- 97094 304638, सदाबहार- 91629 54707, विकास-90601 87079, सिरडो- 8292 406 690, ओरमांझी- 81145 55645

पंडराआईटीआई - 94311 34666, जैगुवार- 94717 02735, रातू चट्टी-9155 429373, बेड़ो- 7631 194 396, इटकी- 89867 53698

ब्रांबे - 800 2823 861 आदि शामिल हैं। प्रत्येक विद्युत शक्ति उप केंद्र में शिकायत दर्ज कराने हेतु रजिस्टर भी उपलब्ध है कोई भी सम्मानित बिजली उपभोक्ता सब स्टेशन में जाकर भी अपना शिकायत यह था बिजली बिल नहीं मिलना वोल्टेज की समस्या पोल ताल की समस्या ट्रांसफार्मर जलने की समस्या दर्ज करवा सकते हैं दर्ज शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटारा किया जाएगा उपरोक्त के अलावा विभागीय व्हाट्सएप कंप्लेंट नंबर 94311 35662 पर भी समस्या भेज सकते हैं।

अरिंदम बोस ने पांच पदक जीतकर बनाया नया कीर्तिमान

नवीन मेल संवाददाता। रांची

13 वीं झारखंड स्टेट शूटिंग चैंपियनशिप और प्रथम झारखंड इंटर स्कूल शूटिंग चैंपियनशिप शनिवार को चौथे और अंतिम दिन टिकैत उमराव सिंह शूटिंग रेंज होटवार रांची में संपन्न हो गया। मौके पर समारोह के मुख्य अतिथि राज्य के पुलिस महानिदेशक अजय कुमार सिंह ने खिलाड़ियों को शुभकामना देते हुए कहा कि जिन्हें पदक नहीं मिला है उन्हें हार नहीं माननी चाहिए और उन्हें लगातार परिश्रम करके सफलता अर्जित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता में लगभग 700 खिलाड़ी ने भाग लिया और हर खिलाड़ी ने अपना बेहतर देने का कोशिश किया। उन्होंने कहा कि भोपाल और केरल जैसे जगहों पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित होती है। अगर इस रेंज को भी बेहतर कर दिया जाए तो रांची में भी बड़ी से बड़ी प्रतियोगिता आयोजित हो सकती है। उन्होंने झारखंड स्टेट राइफल एसोसिएशन को इस प्रतियोगिता के आयोजन कराने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से खिलाड़ियों को प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। विशिष्ट अतिथि खेल विभाग के सचिव मनोज कुमार ने कहा कि राज्य सरकार खेलों के विकास के लिए प्रयत्नशील है । उन्होंने कहा कि शूटिंग रेंज की विकास के लिए भी जो भी हरसंभव सहायता होगा। उसे दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि शूटिंग रेंज में जो भी कमियां है उसे दूर किया जाएगा। उन्होंने खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि राज्य में खिलाड़ियों को हर सुविधा प्रदान की जा रही है। उन्होंने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किया। मौके पर डीआईजी अनूप बिरथरे ने कहा कि इस तरह के आयोजन से खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

बेल्जियम के पुरुषों ने स्पेन को 7-2 से पीटा

जर्मन महिलाओं ने 6-0 से अमेरिका को हराया

एजेंसी। लुसाने (स्विटजरलैंड)

बेल्जियम की टीम के जोरदार प्रदर्शन के कारण एंटवर्प में सीजन के अंतिम मिनी टूर्नामेंट के शुरू होने के साथ ही पहली बार एफआईएच हॉकी प्रो लीग खिताब जीतने की स्पेनिश उम्मीदों पर पानी फिर गया है। घरेलू टीम की 7-2 की जीत ने ओलंपिक चैंपियन को तीन मैच शेष रहते हुए तालिका के शीर्ष पर ग्रेट ब्रिटेन के करीब एक कदम आगे बढ़ाया। स्पेन अब दौड़ से बाहर हो गया है, केवल ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम और नीदरलैंड ही पुरुष खिताब की दौड़ में बचे हैं। इससे पहले दोपहर में, जर्मनी की महिलाओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए यूएसए को 6-0 से हरा दिया। परिणाम का मतलब है कि अमेरिकियों के पास अब केवल तीन और मैच हैं और उन्हें रेलीगेशन से बचने के लिए आवश्यक तीन अंक हासिल करने होंगे।

नीरज चोपड़ा ने 87.66 मीटर थ्रो के साथ जीता लॉजेन डायमंड लीग

एजेंसी। नई दिल्ली

भारतीय स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने शुक्रवार को लॉजेन डायमंड लीग में स्वर्ण पदक जीता। धीमी शुरूआत के बाद, ओलंपिक चैंपियन नीरज ने अपने पांचवें प्रयास में 87.66 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो दर्ज किया। बता दें कि नीरज ने 5 मई को दोहा डायमंड लीग के बाद से किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था, चोट के कारण इस महीने की शुरूआत में एफबीके गेम्स और पावो नूरमी गेम्स से बाहर हो गए थे। जर्मनी के जूलियन वेबर ने अपने पहले प्रयास में 86.20 मीटर थ्रो के साथ शुरूआती गति तय की, वहीं, चोपड़ा एक अंक भी हासिल नहीं कर पाए। नीरज ने दूसरे प्रयास में भी 83.52 मीटर का थ्रो किया। उन्होंने अपने तीसरे प्रयास में 85.04 मीटर का थ्रो दर्ज किया, और फिर बढ़त हासिल करने के लिए अपने पांचवें प्रयास में 87.66 मीटर का बड़ा थ्रो किया, जिससे वह फिर से शीर्ष पर पहुंच गए। वेबर और जैकब वाडलेज्च दोनों अपने-अपने अंतिम

प्रयासों के साथ चोपड़ा के निशान के करीब आ गए - वेबर ने 87.03 मीटर और वाडलेज ने 86.13 मीटर की दूरी दर्ज की, लेकिन वे चोपड़ा को वर्ष की दूसरी डायमंड लीग जीत से वंचित नहीं कर सके। जीत के बाद चोपड़ा ने कहा, चोट से वापसी करते हुए मैं थोड़ा घबराया हुआ महसूस कर रहा था। आज रात यहां थोड़ी ठंड थी। मैं अभी भी अपने सर्वश्रेष्ठ से दूर हूं, लेकिन मुझे लगता है कि यह बेहतर हो रहा है। मुझे राहत है कि यह मेरे लिए अच्छा हो रहा है। जीत तो जीत होती है और मैं इसे खुशी से लूंगा। इस साल डायमंड लीग में दो भाला फेंक स्पर्धाओं के साथ, चोपड़ा 16 अंकों के साथ आगे हैं, वेडलेज 13 और वेबर 12 अंकों के दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं। इस साल डायमंड लीग में शेष तीन भाला स्पर्धाएं मोनाको (21 जुलाई), ज्यूरिख (31 अगस्त), और यूजीन (17 सितंबर) में होंगी।

पीएम, अनुराग ठाकुर, बिंद्रा ने नीरज चोपड़ा की सराहना की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर और ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता निशानेबाज अभिनव बिंद्रा ने स्टार भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को डायमंड लीग के लुसाने चरण में सीजन की लगातार दूसरी जीत के लिए शनिवार को बधाई दी। 25 वर्षीय भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी ने पिछले महीने प्रशिक्षण के दौरान मांसपेशियों में खिंचाव के कारण तीन शीर्ष प्रतियोगिताओं में भाग नहीं लिया था। लेकिन उन्होंने धमाकेदार वापसी की और पांचवें प्रयास में 87.66 मीटर की थ्रो के साथ लुसाने डायमंड लीग का खिताब जीता। पीएम मोदी ने एक ट्वीट में कहा, लुसाने डायमंड लीग में चमकने के लिए @नीरज़चोपड़ा1 को बधाई। अपने असाधारण प्रदर्शन की बदौलत वह तालिका में शीर्ष पर रहे। उनकी प्रतिभा, समर्पण और उत्कृष्टता के लिए निरंतर प्रयास सराहनीय है। अनुराग ठाकुर ने ट्वीट किया, नीरज ने धमाकेदार वापसी की है। अपने 5वें प्रयास में 87.66 मीटर के विशाल थ्रो के साथ, @नीरजचोपड़ा1 ने #लुसाने में पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में शीर्ष स्थान पर रहते हुए एक और डायमंड लीग प्रतियोगिता में अपना दबदबा बनाया। हमारे #टॉपस्कीम एथलीट द्वारा अभूतपूर्व प्रयास, मांसपेशियों की चोट के बाद ब्लॉकबस्टर वापसी और भारत को फिर से गौरवान्वित किया। बधाई हो चैंपियन!" इस बीच, एक अन्य ओलंपिक पदक विजेता अभिनव बिंद्रा ने लिखा, लुसाने डायमंड लीग में उनकी अविश्वसनीय जीत पर @नीरजचोपड़ा को बहुत-बहुत बधाई! आपकी जीत आपके अटूट लचीलेपन और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है, खासकर चोट से वापस आने के बाद।

NEWS इन ब्रीफ

बॉक्सर विकास कृष्णन की 29 जून को हुई सर्जरी

पटियाला। युवा मामले और खेल मंत्रालय (एमवाईएएस) के तहत भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) के केंद्रीय एथलीट चोट प्रबंधन प्रणाली (सीएआईएमएस) ने ओलंपियन मुक्केबाज विकास कृष्णन को मुक्केबाजी मूल्यांकन शिविर में लगी चोट के कारण त्वरित मूल्यांकन और सर्जरी कराने में मदद की। विकास, जो साई एनएसएनआईएस पटियाला सेंटर में चल रहे बॉक्सिंग नेशनल कैंप का हिस्सा हैं, 23 जून को एक स्पैरिंग सत्र के दौरान उनके बाएं डिस्टल बाइसेप्स टेंडन में चोट लग गई थी, जिसके बाद उनकी चोट की स्थिति के बारे में स्पष्टता प्राप्त करने के लिए टीम डॉक्टर ने उन्हें एमआरआई कराने की सिफारिश की थी।

वेस्टइंडीज ने बासकोम्बे को क्रिकेट का नया निदेशक नियुक्त किया

सेंट जॉन्स। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने शुक्रवार को तीन साल के अनुबंध पर पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर माइल्स बासकोम्बे को क्रिकेट के नए निदेशक के रूप में नियुक्त किया है। एंटीगुआ के कूलिज क्रिकेट ग्राउंड में निदेशक मंडल की बैठक में लिए गए निर्णय में, बासकोम्बे जिमी एडम्स से क्रिकेट निदेशक का पद संभालेंगे, जो पिछले छह वर्षों से इस भूमिका में थे। बासकोम्बे 1 अगस्त से अंतरिम क्रिकेट निदेशक के रूप में अपनी नई भूमिका ग्रहण करेंगे। क्रिकेट निदेशक की भूमिका में बदलाव ऐसे समय में आया है जब वेस्टइंडीज की टीम जिम्बाब्वे में चल रहे क्वालीफायर टूर्नामेंट में संघर्ष कर रही है, जिससे उनका भारत में होने वाले पुरुष एकदिवसीय विश्व कप के लिए क्वालीफाई करना भी मुश्किल लग रहा है। बासकोम्बे ने एक बयान में कहा, वेस्टइंडीज क्रिकेट एक महत्वपूर्ण चरण में है और प्रदर्शन में सुधार की तत्काल आवश्यकता है।

उत्तर क्षेत्र ने पूर्वोत्तर क्षेत्र को 511 रन बनाकर सेमीफाइनल में रखा कदम

एजेंसी। बेंगलुरु

उत्तर क्षेत्र ने निशांत सिंधु (150 रन, दो विकेट) और हर्षित राणा (122, दो विकेट) के हरफनमौला प्रदर्शन की बदौलत दलीप ट्रॉफी के क्वार्टरफाइनल में शनिवार को पूर्वोत्तर क्षेत्र को 511 रन से पीटकर सेमीफाइनल में कदम रख लिया। उत्तर क्षेत्र ने पूर्वोत्तर के सामने 666 रन का विशालकाय लक्ष्य रखा था। पूर्वोत्तर इसके जवाब में मैच के चौथे दिन 154 रन पर ऑलआउट हो गया।

पूर्वोत्तर ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक 58 रन पर सिफ तीन विकेट गंवाए थे, हालांकि वह जीत से 608 रन दूर था। पालजोर तमांग और निलेश लमिछाने ने चौथे

विकेट के लिये 57 रन की साझेदारी की, हालांकि इस जोड़ी के पवेलियन लौटते ही पूर्वोत्तर के विकेटों का पतन शुरू हो गया। दूसरी पारी में उत्तर क्षेत्र के लिए सर्वाधिक विकेट चटकाने वाले पुलकित नारंग ने तमांग को आउट करने के बाद प्रफुल्लोमणि सिंह, फिरोजम जोतिन और दिप्पू संगमा को भी आउट किया।

तमांग ने 82 गेंद पर चार चौकों और एक छक्के के साथ पूर्वोत्तर के लिये सर्वाधिक 40 रन बनाए, जबकि लमिछाने ने 64 गेंद पर चार चौकों के साथ 27 रन का योगदान दिया।

इंग्लैंड बैजबॉल क्रिकेट से ही दूसरा टेस्ट जीत सकता है : इयोन मोर्गन

नई दिल्ली। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान इयोन मोर्गन ने कहा कि एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट में अपनी स्थिति के बावजूद इंग्लैंड को अपने आक्रामक रवैये से पीछे नहीं हटना चाहिए। दूसरे टेस्ट में दो दिन बचे हैं और इंग्लैंड टीम काफी पीछे नजर आ रही है, क्योंकि ऑस्ट्रेलियाई टीम अपनी दूसरी पारी में 221 रन से आगे है और उसके आठ विकेट शेष हैं। मोर्गन ने कहा कि इंग्लैंड को ऑस्ट्रेलिया को अपनी शर्तें तय करने देने के बजाय पिछले 12 महीनों में जिस तरह से खेल रहे हैं, उसी पर कायम रहना चाहिए। मॉर्गन ने कहा, मुझे लगता है कि इंग्लैंड अपनी पद्धति (बैजबॉल) पर कायम रहेगा। इतने कम समय में यह उनके लिए बहुत सफल रहा है और हमने ऐसे खिलाड़ियों का विकास देखा है जो पिछले नेतृत्व में सफल नहीं रहे हैं।

डब्ल्यूसीपीएल में खेलने वाली पहली भारतीय बनीं श्रेयंका

एजेंसी। नई दिल्ली

महिला कैरेबियन प्रीमियर लीग (डब्ल्यूसीपीएल) के लिए टीमों की घोषणा कर दी गई है और 2023 टूर्नामेंट के लिए सभी स्थानीय और विदेशी खिलाड़ियों की अब पुष्टि हो गई है। भारतीय युवा क्रिकेटर श्रेयंका पाटिल डब्ल्यूसीपीएल में खेलने वाली पहली भारतीय बन गईं हैं। डब्ल्यूसीपीएल में श्रेयंका लीग में गुयाना अमेजन वारियर्स टीम का प्रतिनिधित्व करेंगी। मार्च की शुरूआत में महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के उद्घाटन संस्करण में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के निराशाजनक अभियान में कर्नाटक की ऑलराउंडर ने प्रभावशाली प्रदर्शन किया था। उन्होंने सात मैचों में 9.84 की इकॉनमी रेट से छह विकेट लिए और अपनी टीम की ओर से सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली गेंदबाज रहीं, जबकि छह पारियों में 151.21 की स्ट्राइक रेट से 62 रन बनाए। डब्ल्यूसीपीएल 31 अगस्त को बारबाडोस में शुरू होगा और फाइनल 10 सितंबर को त्रिनिदाद में होगा। सितारों से सजी टीम में पूरे कैरेबियन के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें डिएंड्रा डॉटिन, हेले मैथ्यूज और स्टैफनी टेलर शामिल हैं। विस्तारित मैसी डब्ल्यूसीपीएल में कुछ सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों के साथ ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, आयरलैंड और भारत के विदेशी खिलाड़ी भी होंगे।

पाकिंसंस रोग से लड़ रहे हैं एलन बॉर्डर

एजेंसी। सिडनी

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट के दिग्गज एलन बॉर्डर ने खुलासा किया है कि उन्हें पाकिंसंस रोग है - नर्वस सिस्टम की एक बीमारी- जो चलने-फिरने को प्रभावित करती है। उन्होंने साथ ही कहा कि अगर वह 80 साल तक जीवित रहे तो यह 'एक चमत्कार' होगा। 11,000 टेस्ट रन बनाने वाले इतिहास के पहले खिलाड़ी, बॉर्डर ने खुलासा किया है कि उन्हें 2016 में इस बीमारी का पता चला था, लेकिन वह इसे सात साल तक लोगों की नजरों से छिपाते रहे। 68 वर्षीय व्यक्ति ने न्यूजकॉर्प को बताया, ₹मैं न्यूरोसर्जन के पास गया और उसने सीधे कहा, 'मुझे आपको बताते हुए दुख हो रहा है लेकिन आपको पाकिंसंस हो गया है'बिल्कुल वैसे ही जैसे आप अंदर आए थे। आपकी बाहें आपकी बगल में सीधी हैं, लटकी हुई हैं,

झूलती नहीं। उन्होंने कहा, मैं काफी निजी व्यक्ति हूं और मैं नहीं चाहता था कि लोग मेरे लिए किसी तरह का खेद महसूस करें। लोग परवाह करते हैं या नहीं, आप नहीं जानते। लेकिन मुझे पता है कि एक दिन आएगा जब लोग इस पर गौर करेंगे। हालाँकि, बॉर्डर के भरोसेमंद फॉक्स स्पोर्ट्स सहयोगी स्टीव क्रॉली ने उन्हें पिछले हफ्ते डिनर पर बताया था कि उनके अच्छे दोस्तों ने पहले ही नोटिस कर लिया था। बॉर्डर ने आगे कहा, मुझे लग रहा है कि मैं बाकी लोगों से काफी बेहतर हूं।

एलिना स्वितोलिना के खिलाफ शुरूआत करेंगी वीनस विलियम्स

इंग्लैंड। पांच बार की विम्बलडन चैम्पियन वीनस विलियम्स 24वीं बार यहां टेनिस ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट में खेलने उतरेंगी जिसमें वह अपना अभियान एलिना स्वितोलिना के खिलाफ शुरू करेंगी जो 2019 के सेमीफाइनल में पहुंची थी। शुक्रवार को निकाले गए विम्बलडन ड्रा में दो बार यहां खिताब जीत चुके एंडी मरे पहले दौर के मैच में वाइल्ड कार्ड से प्रवेश करने वाले रेयान पेनिस्टन से भिड़ेंगे जो ब्रिटेन के खिलाड़ियों के बीच मुकाबला होगा। वीनस (43 वर्ष) ने इस सत्र में केवल पांच मैच खेले हैं और अप्रैल में टूर में वापसी करने वाली स्वितोलिना दोनों को आल इग्लैंड क्लब ने वाइल्ड कार्ड दिया है।

जूनियर महिला हॉकी नेशनल

महाराष्ट्र, पुडुचेरी ने लीग मैच जीते

एजेंसी। राउरकेला

हॉकी महाराष्ट्र और ले पुडुचेरी हॉकी ने यहां बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में चल रही 13वीं हॉकी इंडिया जूनियर महिला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप 2023 में शनिवार को अपने-अपने मैचों में जीत दर्ज की। दिन के पहले मैच में तनुश्री दिनेश कडू की हैट्रिक की मदद से हॉकी महाराष्ट्र ने केरल हॉकी को 8-1 से हरा दिया। कप्तान हिमांशी गावंडे (5') ने हॉकी महाराष्ट्र के लिए खाता खोला, जिसके बाद तनुश्री ने 18वें, 33वें और 56वें ??मिनट में गोल किए। सानिका चंद्रकानी माने (27'), ऐश्वर्या दुबे (28'), खुशी (36'), और कृष्णा चंद्रकांत माने (37') महाराष्ट्र के लिए अन्य गोल स्कोरर थीं। केरल हॉकी के लिए एकमात्र गोल कप्तान प्रसन्ना एस. (38') ने किया। ले पुडुचेरी हॉकी ने दूसरे मैच में हॉकी जम्मू एंड कश्मीर को 6-1 से हराया। दीक्षा (4'), काजल (9', 24', 28'), बेबी श्री (21'), और पी. कार्थिगा (33') ने ले पुडुचेरी हॉकी के लिए स्कोरशीट पर जगह बनाई, जबकि हईका बंदे (42') ने हॉकी जम्मू एवं कश्मीर के लिए एकमात्र गोल स्कोर किया। इससे पहले शुक्रवार को हॉकी पंजाब ने हॉकी आंध्र प्रदेश को देर रात खेले गए मैच में 5-0 से हरा दिया। हॉकी पंजाब के लिए

गोल स्कोरर हरलीन कौर (28'), सुखवीर कौर (34'), कप्तान पवनप्रीत कौर (36'), प्रियंका डोगरा (48') और नमनीत कौर (60') थीं। दिन के एक अन्य मैच में हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा ने मणिपुर हॉकी को 14-0 से हराया। प्रतिभा एक्का (3', 26', 44', 50'), संध्या कुजूर (7', 9'), आशिमा राउत (14', 20', 30', 37', 49'), मैक्सिमा टोप्पो (39'), कप्तान ममिता ओरम (43'), और सुरेखा बहाला (57') ने हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा के लिए स्कोर किया।

कोच स्टिमैक 2 मैचों के लिए निलंबित, 500 डॉलर का जुर्माना

बेंगलुरु। भारतीय फुटबॉल टीम के कोच इगोर स्टिमैक को सैफ चैंपियनशिप में कुवैत के खिलाफ मैच के दौरान लाल कार्ड के अपराध के लिए दो मैचों का प्रतिबंध और 500 अमेरिकी डॉलर का जुर्माना लगाया गया है। यह मैच 1-1 से ड्रॉ रहा था। ऑल इंडिया एआईएफएफ ने बताया, कुवैत के खिलाफ मैच के दौरान रेड कार्ड के अपराध के लिए भारतीय फुटबॉल कोच इगोर स्टिमैक पर दो मैचों का प्रतिबंध और 500 अमेरिकी डॉलर का जुमार्ना लगाया गया। टूर्नामेंट में यह उनका दूसरा रेड-कार्ड अपराध था। उन्होंने इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ भारत के शुरूआती अभियान में रेड-कार्ड का अपराध किया था। सैफ चैंपियनशिप के सेमीफाइनल मुकाबले में भारत का मुकाबला लेबनान से होगा।

भारतीय क्रिकेट टीम का नया मुख्य प्रायोजक बना ड्रीम11

एजेंसी। नई दिल्ली

बीसीसीआई ने शनिवार को टीम इंडिया के मुख्य प्रायोजक के रूप में ड्रीम 11 के साथ तीन साल का करार किया है। ड्रीम11 ने बायजू की जगह ली है जिसका अनुबंध इस साल मार्च में समाप्त हो गया था। ड्रीम11 को वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज से शुरू होने वाली भारतीय टीम की जर्सी पर देखा जाएगा, जो आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 चक्र में टीम का पहला असाइनमेंट है। एक महीने में सीरीज में कुल आठ मैच खेले जाएंगे। भारत दो मैचों की टेस्ट सीरीज के साथ वेस्टइंडीज दौरे की शुरूआत करेगा, जिसका पहला मैच 12 से 16 जुलाई तक डोमिनिका के विंडसर पार्क स्पोर्ट्स स्टेडियम में खेला जाएगा। बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी ने कहा, मैं ड्रीम 11 को बधाई देता हूं और बोर्ड में उनका फिर से स्वागत करता हूं। बीसीसीआई के आधिकारिक प्रायोजक से लेकर अब मुख्य प्रायोजक बनने तक, बीसीसीआई-ड्रीम 11 साझेदारी और मजबूत हो गई है। बीसीसीआई अध्यक्ष ने आगे कहा, जैसा कि हम इस साल के अंत में आईसीसी विश्व कप की मेजबानी करने की तैयारी कर रहे हैं, प्रशंसक अनुभव को बढ़ाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है और मुझे विश्वास है कि यह साझेदारी हमें प्रशंसक जुड़ाव अनुभव को बढ़ाने में मदद करेगी। ड्रीम स्पोर्ट्स के सह-संस्थापक और सीईओ हर्ष जैन ने कहा, बीसीसीआई और टीम इंडिया के लंबे समय से साझेदार के रूप में, ड्रीम11 हमारी साझेदारी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए रोमांचित है।

टूर्नामेंट

टी20 ब्लास्ट में इतिहास रचने के बाद बोले शाहीन अफरीदी

'ऐसा लगा जैसे मैं पाकिस्तान में खेल रहा हूं'

एजेंसी। नई दिल्ली

शाहीन शाह अफरीदी का शुरूआती ओवर रोमांचक था जो फॉर्मूला वन रेस की याद दिलाता है। पाकिस्तानी तेज गेंदबाज ने टी20 ब्लास्ट में नॉटिंघमशायर का प्रतिनिधित्व करते हुए बर्मिंघम बुल्स के खिलाफ अपने पहले ही ओवर में चार विकेट लेकर इतिहास रच दिया। उनके साहसिक प्रयासों के बावजूद नॉटिंघमशायर को अंततः बारिश से प्रभावित मैच में दो विकेट से हार का सामना करना पड़ा। मैच के बाद उन्होंने कहा कि ऐसा लगा जैसे पाकिस्तान में खेल रहा हूं।

शाहीन की शुरूआत आदर्श नहीं थी और

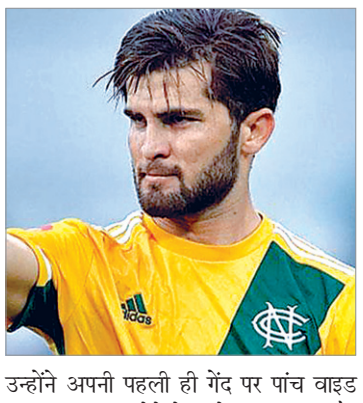

उन्होंने अपनी पहली ही गेंद पर पांच वाइड दिए। फिर भी उन्होंने तेजी से वापसी की और अपनी पहली दूसरी, पांचवीं और छठी गेंदों पर बल्लेबाजों को आउट किया। शाहीन ने मैच के बाद कहा, 'हम जीत के हकदार थे, लेकिन बारिश के बाद आखिरी कुछ ओवरों में उन्होंने अच्छा खेला। मैंने पहले कभी भी अपने पहले ओवर में चार विकेट नहीं लिए थे। हालांकि खेल जीतना कहीं बेहतर होता, फिर भी यह आश्चर्यजनक लगा। दुर्भाग्य से कमी रह गई।' उन्होंने आगे भीड़ से मिले जबरदस्त समर्थन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, 'जिस तरह से भीड़ ने मेरा समर्थन किया वह वास्तव में दिल छू लेने वाला था। गेंदबाजी करने के लिए दौड़ते समय ऐसा लगा जैसे मैं पाकिस्तान में खेल रहा हूं। मैंने उनके साथ मजबूत संबंध बनाए हैं। मेरे टीम के साथी यहां हैं, यह एक परिवार जैसा लगता है।'

शाहीन ने कहा, 'बारिश ने सब कुछ बदल दिया। हम गेंद को ठीक से पकड़ नहीं सके, लेकिन यह क्रिकेट है, आप मौसम को नियंत्रित नहीं कर सकते।' शाहीन के असाधारण प्रदर्शन के बावजूद नॉटिंघमशायर की दो विकेट से हार का कारण काफी हद तक बारिश का प्रभाव था। इसके अलावा उन्हें ओली स्टोन की चोट से झटका लगा क्योंकि वह केवल तीन गेंदें फेंकने के बाद लड़खड़ाते हुए मैदान से बाहर चले गए।